चरित्र निर्माण की छोटी छोटी बातें

માધવરામ બાથમ.

चरित्र निर्माण

की

छोटी छोटी बातें

卐

लेखक :

माधवराम बाथम

卐

प्रकाशक :

इण्डियन आरमी बुक डिपो

जुही, कानपुर ।

प्रथमावृत्ति
१९६४

मूल्य
२.५०

मुद्रक
उदय प्रिंटर्स, कानपुर

आवरण चित्रकार :
रूपनारायण

ये छोटी-छोटी बातें... ...

मनुष्य का चरित्र उसके प्रतिदिन के छोटे छोटे व्यवहारों से ही बनता और उन्हीं में प्रकट होता है। वे ही लोग जीवन में बड़े बनते हैं जो अपने हर छोटे से छोटे व्यौहारों को भी दूसरों के लिए आकर्षक और उपयोगी बना लेते हैं। चिन्ता के समय हौसला दिलाने वाला एक छोटा सा शब्द, किसी से छोटा मोटा अपराध हो जाने पर एक क्षमापूर्ण हल्की सी मुसकान, थके, बोझिल व्यक्ति को हलके हाथ का थोड़ा सा सहारा, चलने-फिरने, बोलने और परिचितों का स्वागत करने का तरीका, छोटों का आदर, हर वस्तु को नर्मी और नफ़ासत के साथ रखने, बरतने की आदत—ये और ऐसी ही छोटी-छोटी बातें मनुष्य को सुन्दर तथा चरित्रवान बनाती हैं। और इनका मालिक बनकर वह परिवार, पड़ोस एवं समाज का प्रिय नायक और नेता भी बनता है। और इन्हीं से उसके और भी बड़े आन्तरिक गुणों का विकास होता है। बड़े आदमियों की छोटी-छोटी बातें ही अधिक प्रभावशाली होती हैं, क्योंकि उनके जीवन में उन्ही की संख्या सबसे अधिक होती है। महा-पुरुषों की जीवनियों में उनके दैनिक जीवन के छोटे-छोटे संस्मरण ही सबसे अधिक रोचक और प्रेरक होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बड़ी सरल और रोचक शैली में ऐसी छोटी-छोटी बातों का वर्णन किया है जो हमारे जीवन में प्रतिदिन सामने आती हैं। विशेषता यह है कि इनमें लेखक के निजी व्यव-हारिक अनुभव की छाप है और इसीलिए इनकी शैली प्रभावपूर्ण है। इन पर मनन और इनका पालन करके निस्सन्देह हर पाठक चरित्र-निर्माण की सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ समाज का एक अत्यन्त उपयोगी

नागरिक बन सकता है। विद्यार्थी, महिलाओं और देश के रक्षक दलों, सैनिकों और उनके परिवारजनों के लिए भी ये नैतिक शिक्षायें उतनी ही उपयोगी हैं, जितनी अन्य किन्ही के लिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह पुस्तक देश के चारित्र्यिक निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योग देगी।

कैलास आश्रम (आगरा)
५ अप्रैल १९६४

रावी.

———

लेखक के दो शब्द

मैं न कोई लेखन-कला का माहिर हूं, और न कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति। यह जरूर है कि मुझे कभी-कभी कुछ सोचने की आदत है, सो जब-कब कुछ न कुछ सोचता रहता हूं।

देश के सभी लोगों के पास कुछ न कुछ थोड़ा या बहुत है। धनिकों के पास धन है और उसका ताम-झाम है। गरीबों के पास गरीबी है साथही मेहनत करने की शक्ति भी। नौकरी-पेशा लोगों के पास नौकरी है, पद है और है उसका ठस्सा। सभी के पास कुछ न कुछ है जरूर। परन्तु....

देश की स्वतंत्रता के बाद भी यदि हम सभी ने कुछ खोया है, तो वह अपनी "मनुष्यता" और "सच्चरित्रता" को। क्या छोटा, क्या बड़ा, क्या नौकरी पेशा, सभी ने अपनी-अपनी यह अमूल्य निधि अपने-अपने स्थान पर बहुत कुछ खोई है—जिसके लौटाने के प्रयत्न में देश भर में आवाज उठाई जा रही है।

सच्चरित्रता की छोटी छोटी बातों पर इस पुस्तक को लिखने का मेरा उल्टा सीधा प्रयत्न है। इसकी भाषा का स्वरूप वही है जो मैं बोलता हूं। ख्याल है कि यह भाषा शायद दूसरे प्रदेशों के हिन्दी-भाषी लोग भी समझ सकें। ज़्यादातर इस पुस्तक की बातें मामूली मध्यमवर्ग के स्तर की हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में लिखी सभी बातें आप सभी लोग जानते और समझते हैं, फिर भी याद-दिहानी के लिए यह सब लिखी गई हैं। हो सकता है पाठकों को इस पुस्तक से कुछ प्रेरणा मिले तो मैं अपने को धन्य मानूंगा।

—माधवराम बाथम

समर्पण

चरित्र, त्याग और मेहनत के महान धनी

अपने पूज्य पितामह

स्व० श्री सीताराम जी की पवित्र आत्मा

को

सादर समर्पित

—माधव

अनुक्रमणिका

If wealth is lost nothing is lost
If health is lost something is lost
If charactor is lost every thing is lost.

× × ×

अगर हमने धन खोया तो कुछ भी नहीं खोया
अगर हमने स्वास्थ्य खोया तो कुछ खोया
और अगर
हमने चरित्र खोया तो सब कुछ खो दिया।

:: १ ::

चरित्र निर्माण

हमारा देश युगों से महान और सच्चरित्र लोगों का देश रहा है। इसी देश की धरती पर समय समय पर राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर जैसे महापुरुष हुए हैं। उनकी महानताओं के कारण आज भी हम उनकी पूजा करते हैं।

इस युग में भी चरित्र बल के महान योद्धा, हमारे देश में बहुत से हुए हैं। जिन्हें हम लोकमान्य तिलक, दादा भाई नौरोजी, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, पं० मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद आदि नामों से जानते हैं। बिनोवा तथा उस जैसे कुछ सच्चरित्र व्यक्ति आज भी हमारे सामने जीवित है। इन सभी महापुरुषों के जीवन-चरित्र हम सबके लिये अनुकर्णीय हैं।

ऐसे महान लोगों का हमारा महान देश उन विदेशी लोगों की नीति का शिकार होगया जिन्होंने हमारे देश पर सैकड़ों वर्ष तक हुकूमत की। और हमारे चरित्र को नष्ट करके ही वे हमें गुलाम बना सके थे।

हमारा राष्ट्र अब एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। हमारी चरित्रहीनता हमारे राष्ट्र की उन्नति में जबरदस्त बाधक बन रही है। हमारी खुद-गर्जी, बेईमानी, बदनियती और हमारा भ्रष्टाचार हमारे राष्ट्र-निर्माण में हमारे सामने दीवार बन कर खड़े हैं। जब तक इस दीवार को तोड़ने का प्रयत्न हर व्यक्ति अपने अपने स्थान पर नहीं करता, तब तक

न तो हम अपने तरक्की के रास्ते पर कामयाब हो सकेंगे और न हमारा देश तरक्की कर पावेगा।

हालांकि बुराई और भलाई दोनों ही दुनियां में हमेशा से कायम रही हैं। परन्तु भलाई ने हमेशा बुराई पर काबू रक्खा है। और आज हालत यह है कि भलाई पर बुराई का कब्जा है। एक सच्चरित्र व्यक्ति दस चरित्रहीन व्यक्तियों से घिरा हुआ है, और हम सभी लोग एक दूसरे को चरित्रहीन बताते हैं।

हम देश की चिन्ता नहीं करना चाहते तो न करें, पर हमें यह तो जरूर सोचना होगा कि हमारी आने वाली पीढ़ी कितनी बुराइयों से घिरती जा रही है। हमारी चरित्रहीनता से हमारे समाज का ढांचा ऐसा बनता जारहा है, जिससे ईमानदारी और सच्चरित्रता से अपनी जिन्दगी गुजारने में हमारी कठिनाइयां बढ़ती जा रही हैं।

हम जो भी काम करते हैं, उसमें भ्रष्टाचार, घूसखोरी, सिफारिश, बेईमानी, झूठ, चालाकी, मक्कारी का पुट दिये बिना हम कामयाबी नहीं पा सकते। ऐसे पतन के रास्ते पर हम सब चल रहे हैं।

हम नौकरी करते हैं तो चाहते हैं कि हमें कम से कम काम करना पड़े। हम दोस्ती करते हैं तो चाहते हैं दोस्त को मूर्ख बना कर उसे ठग लें। हम जिससे पैसा उधार लेते हैं तो हम उसे लौटाना नहीं चाहते। हम रोजगार करके ग्राहक को ठग लेना चाहते हैं। हम अपने छोटे से लाभ के लिए दूसरों की बड़ी से बड़ी हानि कर देने में जरा भी नहीं हिचकते। हम बुरे से बुरे तरीकों से दूसरों का धन ले लेना चाहते हैं। हम इतने स्वतन्त्र हो गए हैं कि जिसे चाहते हैं उसे अपमानित कर देते हैं, जिससे चाहते हैं लड़ जाते हैं। महिलाओं के प्रति तो हम इतने अशिष्ट हैं कि उनकी मान-मर्यादा को हम मज़ाक बना देते हैं।

आखिर यह सब कब तक चलेगा। जो हम खुद कर रहे हैं वही हमारे बच्चे कर रहे हैं और करेंगे। खूब अनैतिक लाभ उठा रहे हैं हम अपने देश में स्वराज्य और जन-राज्य होने का। थोड़ी देर के लिए मान लीजिये अगर हमने अपनी चरित्रहीनता को नहीं रोका तो क्या यह सम्भव नहीं है कि कल को हमारा राष्ट्र ऐसे कानून बनाने को मजबूर हो जाए कि जो चरित्रहीनता बरते उसे सख्त से सख्त सजा दी जाए। तब हमारा और हमारे आपके प्यारे-प्यारे बच्चों का क्या हाल होगा।

अभी कुछ नहीं बिगड़ा है, अब से ही हमें चेत जाना चाहिए। हमें सोचना चाहिये कि हम अपनी कार्यशैली ऐसी बनावें जिससे हम अपने साथ-साथ अपने देश और अपने समाज के लोगों की भलाई की बात भी सोच। हमारी खुदगर्जी से देश की भलाई नहीं होगी।

यदि हम यह बात अपने मन में बिठा सकें कि हमारा जीवन ही दूसरों के सहयोग पर आधारित है। हमें हर सुख और आराम दूसरों से ही मिलता है। जितना पैसा हम कमाते हैं यह दूसरों के ही जेब से हमारे पास आता है। हमारे न मालूम कितने काम हमारे लिए दूसरे लोग कर देते हैं जिनमें से बहुत से हम जान भी नहीं पाते। हमारा बच्चा रास्ते में जा रहा है, एक मोटर उधर से निकलती है जिससे बच्चा कुचलने को होता है उसी वक्त कोई रास्ता चलता अजनबी व्यक्ति उस बच्चे को कुचलने से बचा लेता है और फिर वह अपने रास्ते चला जाता है। क्या वह अजनबी आपका नौकर था जो उसने बच्चे को बचा लिया। नहीं, उस वक्त बच्चे को बचाना उसका नैतिक कर्तव्य था, इसलिए उसने आपके बच्चे को बचा लिया।

कोई व्यक्ति नदी में नहा रहा है और वह नदी में डूबने लगता है। तो कोई भी तैर लेने वाला व्यक्ति अपनी जान की परवाह किए बिना नदी में कूद कर उसकी जान बचा लेता है, तो क्या वह तैराक उसका नौकर था।

कोई आपके खोए हुए बच्चे को आपके घर पहुंचा जाता है। आपका झगड़ा किसी से हो रहा है और वह आपको पीट रहा है तो बहुत से अजनबी आपको पिटने से बचा लेते हैं।

इसी तरह की सैकड़ों बातें हैं जो हम दूसरों से लाभ के रूप में पाते हैं। तब हमारा भी नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि हम भी दूसरों की सहूलियत की बात सोचें। अपने लाभ के साथ-साथ हम दूसरों के लिए कुछ कर सकें तो यह हमारे लिए अच्छे चरित्र की बात होती है।

यदि अब भी हम अपने व्यवहार में, अपने कारबार में, अपनी नौकरी में, अपने तरीकों में, परिवर्तन सोचें तो अभी भी हम अपने समाज और देश को संभाल सकते हैं। देश से चरित्रहीनता मिटा सकते हैं। सचरित्रता बरतने में हमें थोड़ी कठिनाई उठानी पड़ सकती है। कभी कुछ धन भी खर्च करना पड़ सकता है। कभी अपना कीमती समय भी लगाना पड़ सकता है। इन सबके बावजूद भी हमें सच्चरित्रता बरतनी चाहिए क्योंकि सब धनों से सच्चरित्रता का धन श्रेष्ठ है।

हर व्यक्ति की सच्चरित्रता उसकी छोटी-छोटी बातों से ही जानी और परखी जाती है जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में सच्चरित्रता नहीं बरतते वे चाहे जितने बड़े कहलाने वाले व्यक्ति हों, उनके बड़प्पन में न तो निखार आ सकता हैं और न दूसरे लोगों से ही उन्हें उनके बड़प्पन का श्रेय मिलता है।

अगर हम महापुरुषों की श्रेणी में आने लायक नहीं बन सकते तो न सही। परन्तु हम ऐसे आचरण तो कर सकते हैं जिससे हमारे परिवार वाले, मुहल्ले वाले, या हमारे साथी, और लोगों के मुकाबले में, हमें एक अच्छा चरित्रवान व्यक्ति समझें और वे फ़र्ख के साथ हमारी मिसाल दूसरे लोगों को दे सकें या हमारे अच्छे तरीकों की नकल करके दूसरे लोग भी लाभ उठा सकें। क्या हम खुद चरित्रवान बन कर देश से एक दुष्चरित्र कम नहीं कर सकते?

:: २ ::

हमारे बच्चे

यदि आप अपने समाज में कोई बुराइयां देखते हैं और सोचते हैं कि यह बुराइयां हमारे देश को नुकसान पहुंचा रही हैं तो उन बुराइयों को जान लेने ही से वे बुराइयां दूर नहीं हो जाएंगी। बल्कि उन्हें दूर करने के लिये आपको सोच-विचार और प्रयत्न भी करने होंगे।

पहले हम यह देखें कि जिन बातों को हम बुरा समझते हैं, वे बातें कहीं हम में ही तो मौजूद नहीं हैं। यदि हैं तो हमें पहले खुद ही उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। दूसरा प्रयत्न हमारा यह होना चाहिए कि वे बुराइयां हमारे बच्चों में न पैदा होने पावें। यदि हम चाहते हैं कि वे बुराइयां समाज से दूर हों तो हम खुद व अपने बच्चों को उन बुराइयों से बचाने का ज्यादा से ज्यादा प्रयत्न करें तभी वे बुराइयां समाज से दूर होंगी।

हम लोगों का रहन सहन कुछ इस प्रकार का हो गया है कि हम अपनी निजी व्यस्तता के कारण अपने बच्चों के बुद्धि विकास के दिनों में उनकी ओर ध्यान नहीं दे पाते। जिसका नतीजा यह होता है कि हमारे बच्चों का जिन तरह के लोगों की तरफ आकर्षण होता है उन्हीं लोगों की तरह उनका विकास स्वयं हो जाता है। बहुत बार अपने सगे संबन्धियों से ही बच्चे गलत ढंग की प्रेरणा पाते हैं। हमारे ध्यान न देने के कारण उसकी जानकारी भी हमें नहीं हो पाती। इसी कारण हमारे बच्चों का विकास हमारी इच्छा के विरुद्ध हो जाता है।

अगर हम तरक्की-पसन्द व्यक्ति हैं तो बच्चों के बारे में हमारा सही तरीका यही होना चाहिये कि हम उन्हें अपने से ज्यादा शिक्षित

और चरित्रवान बनाएं और इस कार्य में हम किसी का हस्तक्षेप स्वीकार न करें। तभी हमारी आने वाली पीढ़ी चरित्रवान बन सकेगी।

जो आज बच्चे हैं कल वे हमारे समाज व देश के कर्णधार बनेंगे। आज जैसे आचरण हम उनके बनाएंगे वैसे ही आचरण कल वे देश के लोगों के बनाएंगे। मान लीजिए कोई बच्चा बचपन में छोटी मोटी चोरियां करता है तो बड़ा होकर वह बड़े किस्म का चोर बन सकता है जो अपने कार्य क्षेत्र में चोरों के गिरोह का निर्माता बने। दूसरी ओर आप अपने बच्चे को सावधानी से पढ़ाते लिखाते और उसे चरित्रवान बनाते हैं, जिससे वह बुराइयों से घृणा करने लगता है और अच्छाइयों की ओर उसकी प्रवृत्ति बढ़ती है, तो बड़ा होकर वह जिस समाज में रहेगा उसी समाज को अच्छे रास्ते पर चलाएगा। इस लिए आपको शुरू ही से अपने बच्चों को ठीक रास्ते पर चलाने का प्रयत्न करना चाहिए।

यह देखभाल उस वक्त से शुरू होनी चाहिए जब से बच्चा बोलने लगे। बच्चे के सामने आप कोई खुद बुरे लफ्ज अपने मुंह से न निकालिए जिसकी नकल आपका बच्चा करे। हंसी या प्यार में भी गन्दे लफ्ज नहीं निकालना चाहिए। शुरू ही से ध्यान दीजिए कि बच्चा किसी बात को या किसी वस्तु की चोरी तो नहीं करता है। उसको स्वच्छ रखिए ताकि वह गन्दगी से घृणा करना सीखे।

अपने समाज में दो प्रकार के लोग अपने बच्चों के प्रति अकसर लापरवाह देखे जाते हैं। एक तो वे जिनकी आमदनी कम और बच्चे ज्यादा होते हैं। ऐसे मां-बाप हर बात में आर्थिक कठिनाई का बहाना मान कर बच्चों पर ध्यान नहीं देते। हालांकि सच्चरित्रता सीखने-सिखाने में आर्थिक कठिनाई कोई भी अड़ंगा नहीं लगाती है। और अगर हम आर्थिक कठिनाई मानते ही हैं तो हम ज्यादा बच्चों की पैदावार को क्यों न रोकें। दस बच्चे अशिक्षित गंवार, चरित्रहीन बना

कर हम उन्हें दुनियाँ में दुख उठाने के लिए छोड़ कर मर जाएं, यह अच्छा है, या हमारे कम बच्चे हों जो शिक्षित और चरित्रवान बन कर हमारे और देश के नाम को ऊंचा करें, यह अच्छा है ?

एक बहुत पुरानी कथा है :—

वायु की पत्नी अंजनी जी ने पुत्र प्राप्ति के लिए तपस्या की थी। भगवान ने तपस्या से प्रसन्न होकर वर मांगने को कहा। अंजनी ने पुत्र होने का वरदान माँगा। भगवान ने कहा कि तुम अगर १०० पुत्र चाहो तो तुम्हें होंगे परन्तु वे बुद्धिमान और दीर्घजीवी नहीं होंगे। और सौ के बदले यदि तुम एक पुत्र चाहो तो वह महान वीर, भक्त, दीर्घ-जीवी और दुनियाँ में अपना और तुम्हारा नाम रोशन करने वाला होगा। दो में से जो वरदान चाहो मांग लो। बुद्धिमान अंजनी ने १०० पुत्र न मांगकर एक ही पुत्र मांगा जिसको आज भी हम भगवान हनूमान कह कर मानते और पूजते हैं। कम बच्चे चरित्रवान और बुद्धिमान होना हर तरह से ज्यादा बेहतर है।

दूसरे वे बच्चे जो अपने मां बाप के इकलौते बेटे होते हैं या वे जो अपनी कई बहनों के बाद पैदा होते हैं। ऐसे बच्चों को चरित्रहीन बनाने में मां बाप का जरूरत से ज्यादा प्यार दुलार मददगार होता है। मां बाप का इन बच्चों के प्रति बहुत ज्यादा मोह होता है, जिससे उनमें ज्यादा से ज्यादा बुराइयां आ जाती हैं। ऐसे बच्चों के नाम भी मां बाप जान बूझ कर ऊटपटांग रख देते हैं। बुरे नामों का बुरा असर बच्चों के चरित्र पर भी पड़ता है।

आर्थिक कठिनाई के बच्चों के मां बाप या इकलौते बच्चों के मां बाप को अपनी संतान की भलाई के लिए अपने बच्चों के चरित्र और अनुशासन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

कुछ नासमझ मां बाप ऐसे होते हैं जो अपने आपसी झगड़ों में अपने बच्चों को छुप कर बात सुनना, किन्ही वस्तुओं की चोरी कराना या

चुगली करना खुद सिखाते हैं। यह बातें बच्चों के चरित्र पर बहुत बुरा असर डालती हैं। इसलिए बच्चों से इस तरह के कार्यों को हरगिज नहीं कराना चाहिए।

बच्चे जब बड़े हो जाएं तब भी उनसे अपने मुकाबले की कोई बात नहीं करनी चाहिए जिससे बच्चे में आपके प्रतिद्वन्दी बनने की भावना जागे। हां, अच्छाइयों के लिए मुकाबले की भावना आने देना बुरा नहीं है।

बच्चों को कठिन मेहनत के या उलझे हुए काम, अपने आप, अपने हाथों से करने देना चाहिए। इससे बच्चों में कठिनाई पर विजय पाने की शक्ति बढ़ती है। उन्हें हर काम अपने हाथ से करने की आदत, और बढ़िया भोजन होते हुए भी, हर प्रकार का मामूली या मोटा भोजन करने की भी आदत डालनी चाहिए। हर प्रकार के भोजन की आदत बच्चों की बने तो बनने दीजिए ताकि वे विशेष प्रकार के भोजन के आदी न होने पावें।

बच्चों का रुझान जिस विषय की शिक्षा की तरफ हो उनके लिए उसी तरह की शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। यदि आप अपने बच्चों को बहुत ज्यादा प्यार करते हैं तो उन्हें चाहे जितना पढ़ाइये लिखाइये परन्तु साथ ही हर बच्चे को किसी एक हुनर की शिक्षा जरूर दिलवाइये। इससे बच्चे के जीवन के बहुत से मसले अपने आप हल हो जावेंगे।

आपकी कमाई का एक मंशा यह भी होता है कि आप अपनी जिन्दगी में कुछ धन जायदाद वगैरह ऐसी इकट्ठा कर लें जिसे आप अपने मरने के बाद अपने बच्चों के लिए छोड़ जाएं। आज दुनिया के सामाजिक परि-वर्तन को देखते हुए यह जरूरी हो गया है कि आप अपना सब कुछ खर्च करके भी अपने जीवन में अपने बच्चों को ऊंचे दरजे के चरित्र और किसी हुनर की शिक्षा जरूर दे जाएं। इसके बाद कोई भी जरूरत नहीं रह जाती है कि आप अपने बच्चे के लिए कोई धन या जायदाद छोड़

जांए । आपका बच्चा ऊंचे चरित्र और हुनर की शिक्षा के बल पर खुद ब खुद बड़े से बड़ा व्यक्ति बन सकता है ।

हमें अपने बच्चों को "जैसा देखो, वैसा ही बयान करो" या "जितना देखो, उतना ही बयान करो" की आदत भी शुरू ही से डालनी चाहिए । किसी बात को घटा बढ़ा कर बयान करना एक बहुत बड़ा दोष है जो आगे चल कर चारित्रिक दोष बन जाता है ।

यह भी ध्यान रखिए कि आपके बच्चे की शिक्षा और तरीका इस प्रकार का न होने पावे जिससे आगे चल कर वह सिर्फ एक बाबू या क्लर्क किस्म का व्यक्ति बन कर रह जाए । बच्चे को क्लर्क जैसा व्यक्ति बनाना उसकी प्रगति को रोकना है । यदि आप हर बात को खुद ऊंचे तरीके पर सोचेंगे और बच्चों को भी ऊंचे तरीके पर सोचने को प्रेरित करेंगे तभी बच्चों का दृष्टिकोण ऊंचा होगा । ऊंचे दृष्टिकोण रखने वाले बच्चे ही आगे चलकर बड़े लोग बनते हैं ।

:: ३ ::

घर में

हम सभी लोग अपने अपने घरों में अपने परिवार के साथ रहते हैं। हर घर का एक तरीका, एक नियम होता है। उसी तरीके से घर के दैनिक कार्यों का संचालन होता है।

घर के लोग घर के मुखिया की सलाह या आज्ञा से चलते हैं। जिन घरों के मुखिया चरित्रवान और समझदार होते हैं उस घर के बाकी लोगों पर उसका अच्छा असर पड़ता है और घर के दूसरे लोग भी चरित्रवान बनते हैं। इसके विरुद्ध जिस घर के लोग मामूली मामूली सच्चरित्रता की बातों पर ध्यान नहीं देते, उस घर में सब कुछ होते हुए भी अच्छे लोगों का घर नहीं माना जाता।

हम अपने घर के प्रमुख व्यक्ति हैं अगर हमें किन्हीं बुरे कार्यों की आदतें हैं तो वह असर घर के दूसरे लोगों पर पड़ कर उनका चरित्र भी बिगाड़ेगा। बुराइयां चरित्र को बिगाड़ती हैं, इसलिए अपने परिवार को अपनी इन बुराइयों से बचाने के लिए हमें खुद भी बुराइयों का परित्याग करना आवश्यक है, तभी हमारी आगे की पीढ़ी चरित्रवान बन सकेगी।

बहुत से लोग घर में पहुंचते ही घर के लोगों से चीखने चिल्लाने लगते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। रात में यदि देर से घर पहुंचें तो भी आहिस्ता से बोलना चाहिए ताकि जो लोग सो गए हैं वे जाग न जाएं और आपकी आवाज पड़ोसियों तक भी पहुंच कर उनके आराम में असुविधा न पैदा करे।

घर की कोई व्यक्तिगत बात चीत बाहर या मुहल्ले वालों से मत कीजिए। आपके घर का कोई भेद मुहल्ले वालों या दूसरों को नहीं मालूम होना चाहिए। घर की महिलाओ को इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे घर की बातें इधर उधर के लोगों से हरगिज न करें, जिनको आपके घर की व्यवस्था से कोई मतलब नहीं है।

आपके घर में मेहमान लोग आते हैं आप उनकी खातिर की खूब अच्छी विशेष व्यवस्था करते हैं। परन्तु कुछ लोगों की आदत होती है कि मेहमान की आड़ में वे खुद अपनी खातिर करने लगते हैं। अच्छी वस्तु मेहमान के बजाए खुद अपने उपयोग में ले लेते हैं। हमारी पुरानी संस्कृति यही कहती है कि हम अपने मेहमान की खातिर अच्छी से अच्छी वस्तुओं से करें।

मेहमान के आने पर उससे तुरन्त ही, अच्छी तरह, खुल कर खुशी मन से बात करनी चाहिए। बात चीत में इतना भी न खो जाइये कि उनका आदर सत्कार करना ही भूल जांए। मेहमान से उनके दैनिक कार्यक्रमों को पूंछ लीजिए ताकि उनकी आवश्यकताएं आप समय पर सहूलियत से पूरी कर सकें। मेहमान सभ्यतावश आपके परिवार के सभी लोगों के प्रति स्नेह दर्शाता है, आपके बच्चों से खुल कर प्रेम करता है। इस बात का ध्यान रखिए कि आपके बच्चे उनके प्रति उद्दंड न होने पाएं और नाहीं उनके साथ भोजन वगैरह में शामिल होकर उन्हें असुविधा पैदा करें, बहुत से लोग भोजन करते वक्त दूसरों का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते।

मेहमान की इतनी भी जबरन खातिर न कीजिए जिसे, वह कष्ट समझने लगें। मेहमान यदि दो चार दिन आपके यहाँ ठहरने आया है तो खुद उसके साथ हर समय न रहिए बल्कि कुछ समय वह अकेले भी रहना पसन्द करेंगे।

आपके यहां कोई व्यक्ति आते हैं, अपनी बात खत्म होने पर वह

कहते हैं—"अच्छा तो फिर······" या वह जम्हाइयां लेते हैं, या घड़ी देखते हैं। आमतौर से इसका मतलब होता है कि वे व्यक्ति आप से बिदा लेना चाहते हैं। ऐसी हालत में आपको उन्हें अपनी बातों में नहीं उलझाए रखना चाहिए।

अपने घरों की सफाई पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए। घर की हर वस्तु के लिए स्थान सुरक्षित होना चाहिए और हर वस्तु अपने स्थान पर साफ सुथरी रखी होनी चाहिए। वस्तु का अपने स्थान पर न होना ही गन्दगी कहलाती है। घर के मैले कपड़े या दूसरी गन्दी दिखने वाली वस्तुओं के लिए ऐसा स्थान नियत करना चाहिए जो हर वक्त निगाह के सामने न पड़े।

इस बात का भी ध्यान रखिए कि घर में कोई भी खाने को वस्तु बरबाद न हो। उतना ही भोजन लीजिए जितना आप खा सकें। थाली में जूठन बचाना और फिर उसको फेंकना अच्छी बात नहीं है। कोई भी खाद्य वस्तु यदि आवश्यकता से अधिक है, तो उसे बरबाद होने से पहले ही दूसरों को खिला दीजिए।

चारपाई या कुरसी पर आहिस्ता से और सीधे बैठिए। जोर से या धम्म से बैठना सभ्यता के विरुद्ध है। इससे बैठने की चीज जल्दी ही टूट जाती है। कुरसी पर बैठ कर उसे हिलाना नहीं चाहिए और खुद भी नहीं हिलना चाहिए, इससे वह जल्दी टूट जाएगी। मेज, वस्तुएं रखने के लिए होती हैं उन पर बैठना नहीं चाहिए।

घर में यदि जमीन पर बैठ कर भोजन करने की प्रथा हो तो, जूते पहन कर घर में उसी स्थान तक जाइए, जहाँ खाद्य वस्तुएं न हों। जूते में बाहर, हर तरह की गन्दगी लगती है घर में वह जगह जगह सूक्ष्म रूप से गिर कर घर गन्दा करती है और बीमारी फैलाती है।

यदि आप घर के जिम्मेदार व्यक्ति हैं और घर के सभी लोग आप

पर आश्रित हैं तो आपको घर के सभी लोगों की सुख सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। सभी लोगों को सुविधा पहुंचाने के बाद ही अपनी सुविधा पर ध्यान दीजिए।

लोगों से अपनी बात घुमा फिरा कर नहीं बल्कि साफ ढंग से कीजिए जिससे दूसरे लोग स्पष्ट सुन और समझ सकें।

बहुत से परिवारों में रिश्तेदारों के कुछ ऐसे बच्चे, महिलाएं या वृद्ध पुरुष होते हैं जिनके भरण पोषण की जिम्मेदारी अचानक या किसी कारण वश आप पर पड़ जाती है। ऐसे लोगों के साथ हमेशा अच्छा व्यौहार कीजिए। वे अपनी बेइज्जती न मानने पावें। जब उनका भरण पोषण आप करते ही हैं तो उनकी सद्भावना लेने के लिए आप उनसे अच्छा व्यौहार भी करें। जिस तरह आप अपने प्रिय जनों की गलतियाँ अनसुनी करते रहते हैं, इसी तरह इनकी भी गलतियाँ अनसुनी करके आप उनके प्रति अच्छा व्यौहार कीजिए।

जिन घरों में विमाता हों उस पर विशेष ध्यान दीजिए कि विमाता आपके बच्चों की ठीक देख भाल अपने बच्चों की तरह करती है या नहीं। ऐसे मौकों पर पिता की लापरवाही से बच्चों को बहुत दुख उठाना पड़ जाता हैं। आप समझदार व्यक्ति हैं तो अपने बच्चों की देख भाल पर विशेष ध्यान दीजिए ताकि आपके बच्चे अपने को "अनाथ" न समझने पावें।

घर में जाइये तो परिवार के सब लोगों से खुल कर बात चीत कीजिए कभी कभी उनसे हंस कर हंसी वाली बातें भी करते रहिए, जिससे परिवार के लोगों में प्रसन्नता का वातावरण बना रहे। बच्चों या दूसरे लोगों को हर वक्त डांटते फटकारते रहने से घर का वातावरण सहमा सहमा सा हो जाता है। इससे बचिए।

किसी खानी पीनी वस्तु के सामने खांसना या छींकना नहीं चाहिए। इससे खाने पीने की वस्तु पर नाक, थूक के छींटे उड़ कर गिरते हैं।

खांसी या छींक आने पर अपने मुंह को दूसरी तरफ घुमा लेना चाहिए या मुंह के सामने रूमाल लगा लेना चाहिए ताकि वह गन्दगी भोजन या किसी व्यक्ति के मुंह पर न पड़ने पावे।

जब आप किसी रिश्तेदारों वगैरह के साथ एक ही थाली में भोजन कर रहे हों तो इस बात का ख्याल रखिए कि आपके द्वारा थाली में इस तरह भोजन न फैलने पावे जिसे देख कर साथ में खाने वाला व्यक्ति घृणा करने लगे। जो लोग प्याज, गोश्त, अण्डा वगैरह नहीं खाते हैं, उन्हें, इन चीजों के खाने वालों के सामने, उन वस्तुओं की बुराई या उसके लिए घृणास्पद तरीके नहीं बरतना चाहिए। भोजन में इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि विशेष अच्छी वस्तु आप ही खुद ज़्यादा न खा लें, वह सभी खाने वालों को सामान्य रूप से मिले, ऐसे खाइए।

सभी प्रकार के दूसरे लोग घर में महिलाओं के पास अपनी उठक बैठक रक्खें, यह अच्छी बात नहीं है। इस पर भी ध्यान रखिए कि इधर उधर के ढोंगी साधू या ज्योतिषी घर की महिलाओं में अपना अन्धविश्वास न जमाने पावें।

अपने कारबार, नौकरी, सामाजिक या राजनैतिक विषयों पर घर के लोगों से बात चीत करते रहना चाहिए। इससे घर के और लोगों में चेतना बढ़ती है, और आपके और उनके विचारों में समन्वय रहता है।

आप घर के प्रमुख व्यक्ति हैं तो आपकी यह भी जिम्मेदारी है कि घर के लोग आपस में लड़ने भिड़ने न पावें। घर की छोटी छोटी लड़ाइयों को सही तरीकों पर न निपटाने से वे झगड़े बहुत बड़े रूप ले लेते हैं जिनसे परिवार की बहुत बड़ी हानियाँ भी हो जाती हैं।

●

:: ४ ::

रास्ते या बाजार में

घर से निकल कर जब हम सड़क पर आते हैं तब हम मानों घर से कुछ ज्यादा आजाद हो जाते हैं। घर में अपने लोगों का जो लिहाज होता है, बाहर निकलकर वह लिहाज खत्म हो जाता है। इस आजादी में हम में से कोई लोग ऐसे तरीके बरतने लगते हैं जो हमारे चरित्र को ऊंचा नहीं उठाते हैं। अतः हमें इनसे बचना चाहिए।

रास्ता चलती महिलाओं के प्रति हम सब को शिष्ट होना चाहिए। उन्हें देख कर गंदे गाने, गाने लगना, या दूसरों को इंगित करके उनके प्रति असभ्य बातें बोलने लगना, या उनके साथ साथ चलने लगना, उन पर कोई वस्तु फेंक देना, यह सब बातें चरित्रहीनता की हैं।

हमारे समाज में रास्ता चलती महिलाओं के प्रति इतनी ज्यादा अशिष्टता बढ़ गई है, कि जिससे महिलाओं का घर से बाहर निकलना एक समस्या बन गई है। हमें खुद भी इन सब अशिष्टताओं से बचना चाहिए और साथ ही दूसरे लोगों को भी इन अशिष्टताओं से रोकना चाहिए। रास्ते में किसी से भी बात करते वक्त कोई ऐसा लफ्ज मुंह से नहीं निकालना चाहिए जो आप अपने घर की महिलाओं या बच्चों के सामने निकालना पसंद नहीं करते। क्योंकि रास्ते में महिलाएं, बच्चे भी तो चल रहे होते हैं।

रास्ते में खड़े होकर किसी से बात चीत करने लगना भी मुनासिब नहीं है। यदि ऐसी जरूरत पड़ जाए तो रास्ते से काफी हट कर आहिस्ता से बात चीत करना चाहिए। रास्ते में किसी से गाली गलौज

या मार पीट करने लगना, जोर जोर से हंसने बोलने लगना सभी बातें सभ्यता के विरुद्ध हैं।

रास्ते में नाक थूक या लघुशंका की गंदगी करना भी अच्छा नहीं है। बहुत ही आवश्यकता पर रास्ते से काफी हट कर यह गंदगी करनी चाहिए। रास्ते में कोई वस्तु खाने नहीं लगना चाहिए। खास तौर पर केले के छिकले या कांच वगैरह, रास्ते में फेंकना बहुत ही खतरनाक बात है। सैकड़ों हजारों व्यक्ति केले के छिकलों से फिसल कर गिरते हैं, जिनमें से बहुतों की हड्डियां तक टूट जाती हैं। साफ पक्की सड़क, रेलवे प्लेटफार्म, सीढ़ियां, ढालू जगह पर केले के छिकले फेंक देना एक बहुत ही भयंकर अपराध है। बल्कि हम सबको ऐसी रपटनी जगहों से पैर, छाते या छड़ी से ये छिकले रास्ते से हटा देना चाहिए।

रास्ते में हमेशा एक तरफ अपने बाएं से चलना चाहिए। सवारियों के निकलने के लिए काफी जगह छोड़कर सड़क की पटरी पर एक किनारे चलना चाहिए। अकसर रास्ते में गाय, भैंस, कुत्ते आदि जानवर बैठे रहते हैं इनसे हटकर और बच कर चलना चाहिए। इन जानवरों के नजदीक चलने से कहीं भूल से इनकी पूंछ या जिस्म पर आपका पैर पड़ गया तो ये जानवर आपको जख्मी कर दे सकते हैं।

रास्ते में कोई लुभावनी चीज यदि देख पड़ जाए तो रास्ते से हट कर ही उसका अवलोकन करना चाहिए। रास्ते में यदि मुड़ना पड़े तो सब ओर देख कर ही मुड़ना चाहिए ताकि किसी सवारी से आपका टकराव न हो जाए। सड़क पार करने के लिए भी दोनों ओर की सवारियों को देखने के बाद सड़क पार करनी चाहिए। रास्ता चलने में सामने और नीचे बराबर ध्यान रखना चाहिए ताकि आपकी या दूसरे की गलती से कहीं आप चोट चपेट न खा जांए। भीड़ भाड़ की सड़क पर चलते समय अपने ध्यान में कोई भी दूसरी बातें नहीं लानी चाहिए, सिवा रास्ते की देख भाल के।

रास्ता चलते वक्त सार्वजनिक वस्तुओं यानी दीवारों, खंभों आदि को

जिनमें काफी गंदगी लगी होती है, कभी हाथ से नहीं छूना चाहिए। इससे हाथ में खतरनाक बीमारियों के कीटाणु लग सकते हैं या बिजली के किसी खंभे में यदि करेंट उतर आया है तो उससे मृत्यु तक हो सकती है।

यदि आप किसी सवारी पर चल रहे हैं तो ऊपर लिखी बातों के अलावा यह भी ख्याल रखिए कि आप अपने बाएं तरफ ही चलें और अपने से तेज चलने वाली सवारियों को पहले निकल जाने दें। किसी भी सवारी से तेज चलने का मुकाबला कभी भी अपनी सवारी को भीड़ भाड़ की सड़क पर न करने दें। दूसरी सवारी के पीछे चल रहे हों तो अपनी और आगे वाली सवारी के बीच काफी फासला रक्खें ताकि आगे वाली सवारी को अगर अकस्मात रुकना पड़े तो उसकी टक्कर आपकी सवारी को न लगने पाए। रेल या दूसरी सवारी जब रुक जाए तभी उस पर चढ़ना या उतरना चाहिए। चलती हुई किसी भी सवारी पर न चढ़ना चाहिए और न उतरना।

अपनी सवारी में इतना चौकन्ना रहिए कि कहीं दूसरे की गलती से आपकी सवारी न टकरा जाए। यह भी ध्यान रखिए कि आपकी सवारी से दूसरे लोगों पर मिट्टी, कीचड़ वग़ैरह न पड़ने पाए।

यदि आप सार्वजनिक बस वगैरह में चल रहे हैं तो यह ख्याल रखिए कि यदि बीमार, बूढ़े या महिलाओं के लिए स्थान न हो तो तुरंत अपना स्थान उनके लिए छोड़ दें। यह आपके लिए बड़प्पन और सभ्यता की बात होगी। बस के कन्डक्टर ने यदि भूल से आप से किराया नहीं मांगा है तो आप खुद किराया अदा करके टिकट ले लें। बस पर बैठे हुए इस बात का ख्याल रक्खें कि आपके बीड़ी सिगरेट आदि पीने से दूसरे सहयात्रियों को कोई असुविधा न हो यदि हो, तो आप यह सब न पिएं। चलती बस में उसके ड्राइवर से बात चीत नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से ड्राइवर का ध्यान बंट जाएगा और हादिसा हो जाने का खतरा हो जाएगा। सवारी में नाक थूक की गंदगी नहीं करनी चाहिए।

यदि आप साइकिल पर चल रहे हैं और आपके नगर में साइकिल पर कोई टैक्स लगा है तो आपकी साइकिल का टैक्स दिया हुआ होना चाहिए। साइकिल में ब्रेक, घंटी जरूर होनी चाहिए। रात के वक्त उसमें लेंप लगा कर ही चलना चाहिए। अपनी साइकिल पर बच्चों या दूसरों को बिठा कर नहीं चलना चाहिए। ऐसा करना कानून तोड़ना तो है ही साथ ही दुर्घटना होना भी बहुत सम्भव हो जाता है।

रास्ते में किसी की कोई वस्तु या रुपया पैसा पड़ा मिल जाए तो अपनी नियत बिगाड़ कर उसे खुद नहीं ले लेना चाहिए बल्कि कोशिश करके उसे उसके मालिक के पास पहुंचा देना चाहिए। यदि आप वह वस्तु उसके मालिक तक पहुंचाने में कामयाब न हो सकें तो उसे सबसे नजदीक के पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखा कर जमा करा देना चाहिए।

रास्ते में यदि कोई लड़ाई झगड़ा हो रहा हो तो उस झगड़े में आप अपने को मत शामिल कीजिए। क्योंकि रास्ते में झगड़ा करना या उसमें शामिल होना कानून के विरुद्ध जुर्म है।

महिलाओं को रास्ते में घूंघट निकाल कर नहीं चलने देना चाहिए इससे उन्हें किसी सवारी से चोट लगजाने की सम्भावना हो जाती है।

रास्ते में कोई व्यक्ति आपसे कोई जानकारी चाहे या कोई रास्ता पूछे तो ध्यान देकर इस तरह बताना चाहिए, जिससे वह आपके बताए तरीके से ठीक स्थान पर पहुंच जाए। यदि कोई बात आप अपना थोड़ा समय देकर उसे बता सकते हैं तो अपना थोड़ा समय भी उस बात के बताने में लगा दीजिए, जिससे उसकी कठिनाई दूर हो जाए।

जिन लोगों के मकान सड़क के किनारे रास्ते पर होते हैं उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि रास्ते में न खुद खड़े हों, बैठें और न चारपाई कुर्सी वगैरह रक्खें और न अपने परिवार के लोगों को ऐसा करने दें। इससे रास्ता चलने वालों को भी कठिनाई होती है।

:: ५ ::

सफाई और तन्दुरुस्ती

मनुष्य के ऊंचे चरित्र को जहां और कई प्रकार से परखा जाता है, वहाँ उसकी स्वच्छता और सफाई से भी उसकी सच्चरित्रता जानी जाती है। अच्छे स्वच्छ रहन-सहन वाले व्यक्ति अधिकांश में चरित्रवान होते हैं।

बहुत से लोग स्वच्छता को गरीबी से जोड़ कर उस पर ध्यान नहीं देते हैं। गरीब व्यक्ति भी स्वच्छ रह सकता है। जिन छोटे बच्चों को सफाई या गन्दगी का कोई ज्ञान नहीं होता उन्हें यदि आप नहला धुला कर साफ कपड़े पहना दें तो वे प्रसन्नता से खिल उठते हैं। इससे यह जाना जाता है कि सफाई रखना मनुष्य की एक कुदरती जरूरत है।

सफाई के लिए बहुत ही जरूरी है कि हमारे कपड़े चाहे वह सस्ते किस्म के ही क्यों न हों, साफ होना चाहिए। जिनके पास कई जोड़े कपड़े हैं वे गन्दे कपड़े धोबी से धुलवा कर साफ रख सकते हैं। जिनके पास कम कपड़े हैं या जो धोबी का खर्च नहीं बर्दाश्त कर सकते, वे अपने घर में ही साबुन से कपड़े साफ करके स्वच्छ रह सकते हैं। स्वच्छ कपड़ों में जुएं भी नहीं पड़ते। स्वच्छ कपड़े पहनने वाले और तन्दुरुस्त व्यक्ति को हर कोई अपने पास बिठाना पसन्द करता है। जबकि गन्दे या बदबूदार कपड़े पहने हुए व्यक्ति से हर मनुष्य घृणा करता है।

इसके बाद अपने शरीर की सफाई की बात आती है। रोज

नहाना, वर्जिश करना, दांतों को रोज मंजन या दातुन से साफ करना, जिस्म में सरसों के तेल की मालिश करना, बाल बराबर बनवाना और उनमें तेल डालते रहना, हाथ पैरों के नाखूनों को बढ़ते ही उन्हें कटवा लेना, जिस्म की सफाई है। आलस या लापरवाही से इस सफाई पर ध्यान न देना, हमारी गलती है।

कुछ लोगों की आदत होती है कि कोई भी खाने की वस्तु गन्दे हाथों से खाने लगते हैं। जो जो चीजें हम हाथों से छूते हैं उनमें तरह तरह की गंदगी लगी होती है जो हमें दीखती नहीं है। वह सब गंदगी बिना हाथ साफ किए खाने से हमारे पेट में पहुंच कर हमें रोगी बनाती है। इसलिए जरूरी है कि कोई चीज हाथ से खाने से पहले हाथ साफ कर लिए जाएं।

इसी प्रकार हमारे घर की सफाई भी हमारे उज्ज्वल चरित्र को दर्शाती है। हमारे घर में खिड़कियाँ, रोशनदान खुले रहें जिनसे साफ हवा, धूप व रोशनी घर में आती रहे। घर की हर वस्तु के लिए स्थान मुकर्रर हो और वह वस्तु अपने स्थान पर रक्खी हो। किसी भी वस्तु पर कूड़ा धूल मिट्टी न हो। दीवारों पर धूल व मकड़ी का जाला वगैरह न हो। खानी पीनी वस्तुएं ढकनों से ढकी अपने स्थान पर रक्खी हों, यह सफाई का एक सही तरीका है। यह एक उसूल है—"वस्तु का अपने स्थान पर होना सफाई है और उसका अपने स्थान से अलग रहना गन्दगी"।

हम लोगों के घरों में अकसर बहुत सा कबाड़ किस्म का ऐसा सामान होता है जिसका घर में कोई विशेष उपयोग नहीं होता, और नाहीं वे चीजें घर की शोभा बढ़ाती हैं फिर भी लालच वश उन्हें हम घर से हटाना भी पसन्द नहीं करते। मकान के अन्दर एक निगाह डालने से ऐसी कई फालतू चीजें निगाह के सामने आ जाएंगी। ऐसे कबाड़खाने

को यदि हम घर से हटा नहीं सकते तो इतना तो कर सकते हैं कि उनके रखने के लिए घर में कोई आड़ की जगह बना कर वहाँ उन वस्तुओं को रख दें, जहाँ वे लोगों की नजरों के सामने न पड़ें और गन्दगी न जाहिर हो।

यह एक अच्छे रहन सहन का तरीका है कि आपके मकान या कमरे में कोई मेहमान घुसे तो हर वस्तु साफ सुथरी, अपने मुकर्रर स्थान पर रक्खी दिखाई दे। आंखों को अप्रिय लगने वाली गन्दी वस्तुएं सामने न दिखाई देती हों।

अगर आप गन्दी चीजों को वास्तव में गन्दी चीज मान कर उससे नफरत करने लगें तो आप स्वयं गंदे ढंग की वस्तुओं को रखना नापसंद करेंगे।

कुछ लोगों की आदत होती है कि घर की कोई वस्तुएं उपयोग में लाकर फिर उन्हें इधर उधर डाल देते हैं, जिससे कभी कभी वह खो भी जाती हैं, फिर काम के वक्त उन्हें खोजने में समय नष्ट करते हैं। बेहतर तरीका यह है कि जो भी चीज काम के लिए अपने स्थान से उठाई जाए, काम खत्म होने पर, साफ करके, उसे तुरंत अपने स्थान पर रख दिया जाए।

जैसा पहले भी कहा जा चुका है कि घर में रक्खी हुई, खाने पीने की हर चीज़, पीने का पानी भी ढकने से ढका होना चाहिए, इससे मक्खियां या दूसरे कीड़े मकोड़े उसमें पड़ कर वस्तु को गंदा नहीं करते।

घर में यदि सीवर (खुद साफ होने वाला) पाखाना नहीं है तो पाखाना जाने के बाद गंदगी पर राख, मिट्टी या चूना डाल देने से उस पर मक्खियां नहीं बैठतीं। जो मक्खियां गंदगी पर बैठती हैं, वही उड़ कर फिर भोजन पर बैठ कर भोजन को दूषित करती हैं।

मकान के अन्दर कमरों, वरान्डों में कहीं भी, नाक या थूक की गंदगी नहीं डालना चाहिए इससे बीमारी फैलती है।

ओढ़ने बिछाने के कपड़े, बिस्तर व चारपाई को जब कब धूप में डाल देना चाहिए। इससे चारपाई में खटमल नहीं होते और धूप लगने से कपड़े, बिस्तर भी शुद्ध और कीटाणु रहित हो जाते हैं। यदि कभी चारपाइयों में खटमल हो जाएं और दवाइयां डालने से भी खत्म न हों तो, सबसे अच्छा इलाज यह है कि घर की सभी चारपाइयों को एक साथ ही बाहर निकाल कर खूब गरम खौलता हुआ पानी एक एक चारपाई को चारों तरफ घुमा फिरा कर खूब अच्छी तरह डाला जाए। इससे कुल खटमल और उनके अंडे बच्चे सब एक ही बार में खत्म हो जाएंगे।

तन्दुरुस्ती के कुछ मोटे मोटे उसूल यह हैं जिन पर हर व्यक्ति को ध्यान देना जरूरी है :—

हमें अपना भोजन खूब अच्छी तरह दांतों से चबा चबा कर, मुंह में पीस कर खाना चाहिए। खराब सड़ी, गली वस्तुएं कभी भी नहीं खानी चाहिएं। साफ और स्वच्छ पानी पीना चाहिए, यदि कभी साफ पानी न मिल सके तो पानी को उबाल कर पीना चाहिए। सोते वक्त दाँत, मुंह खूब अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए। मुंह व सर ढंक कर नहीं सोना चाहिए। पैर की सभी उंगलियों के गाभे, पैर धोने के बाद सूखे कपड़े से अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए। सुबह सूरज निकलने से पहले ही जाग जाना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो अपने भोजन में हरी कच्ची सब्जी व मौसमी फलों का ज्यादा उपयोग करें। रोजाना सुबह वर्जिश जरूर करें।

जब कभी मुहल्ले में कोई बीमारी हैजा, प्लेग, चेचक फैले तो, उसका टीका जरूर लगवा लेना चाहिए, इससे एक तो बीमारी होती ही नहीं है, अगर होती भी है तो बहुत हल्के किस्म की। बीमारी शुरू होने पर तुरन्त ही डाक्टर को दिखाना चाहिए।

हैजा के दिनों में अपना खाना हल्का और ताजा खाना चाहिए। कच्चे फल, सब्जी, पोटास (लाल दवाई) के पानी से धोकर इस्तेमाल करना चाहिए। मरीज का कै, दस्त जला देना चाहिए। पानी गर्म करके ठंडाया हुआ पीना चाहिए। मक्खी का बैठा हुआ कोई भोजन नहीं करना चाहिए। कच्चा प्याज व नीबू का उपयोग ज्यादा से ज्यादा करना चाहिए।

चेचक के दिनों में टीका ले लेना सबसे ज्यादा लाभदायक होता है। मरीज को बाकी लोगों से अलग रखना चाहिए।

प्लेग के दिनों में चूहे ज्यादा मरते हैं। ये चूहे ही बीमारी के कीड़े फैलाते हैं। मरे हुए चूहों पर मिट्टी के तेल का भीगा कपड़ा डाल कर उसे जला देना चाहिए और उनके मरे हुए स्थान पर भी आग जला देना चाहिए ताकि उसके जिस्म के कीड़े इधर उधर न उड़ें। मोजे और पतलून या पैजामा बराबर पहने रहना चाहिए।

मच्छर के दिनों में मलेरिया बुखार से बचने के लिए शाम होते ही पूरी आस्तीन की कमीज पहन लेनी चाहिए। मोजे, पतलून या पैजामा भी पहनना चाहिए, ताकि मच्छर को काटने के लिए जिस्म का कोई हिस्सा खुला न मिले। घर और आसपास में गन्दे पानी का बहाव न रुकने पावे। यदि कहीं सील या कीचड़ रहता हो तो उस पर डी० डी० टी० या कलई (चूना) छिड़कते रहना चाहिए। मच्छरों की पैदावार कुएं के पास, नम जगह पर और रुके पानी में होती है। रात को मच्छर से बचने के लिए हर व्यक्ति को एक मच्छरदानी, दूसरे खर्च कम करके भी, रखनी चाहिए।

छूत की सभी बीमारियों में मरीज को दूसरे स्वस्थ लोगों से अलग रखना चाहिए। मरीजों के खाने के बरतन व कपड़े बिस्तर वगैरह का इस्तेमाल स्वस्थ्य लोगों को नहीं करना चाहिए। ऐसे मरीजों का

थूक, पाखाना या पेशाब भी फैलने नहीं देना चाहिए, उसे जला या जमीन में गाड़ देना अच्छा है। ऐसे मरीजों के कमरे में स्वस्थ्य लोगों को नहीं सोना चाहिए। उपरोक्त सभी बीमारी के मरीजों के कपड़े बराबर गरम पानी में उबालते रहना चाहिए। मरीजों के कमरे की खिड़कियां रोशनदान खुले रहने चाहिए ताकि साफ हवा बराबर आती रहे।

खुली हवा में रोज घूमना और वर्जिश करना तन्दुरुस्ती के अच्छे नियम हैं। इस लिए बुढ़ापे में भी इन नियमों को कायम रखना चाहिए।

हमारी उठक-बैठक में फुरतीलापन और चुस्ती होनी चाहिए। हमारी बात चीत में मिठास, विश्वास और अनुशासन होना चाहिए। यह एक अच्छे तन्दुरुस्त व्यक्ति की निशानी है।

:: ६ ::

पड़ोस या मुहल्ले में

हमारे पड़ोसी हर जगहों पर होते हैं। उनके साथ हमें चरित्रता पूर्वक व्यौहार करना चाहिए। जिन लोगों के सम्बन्ध अपने पड़ोसियों से अच्छे नहीं हैं वे सदा मानसिक कष्ट पाते रहते हैं।

अपने पड़ोसियों के सुख-दुख में शामिल होना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। मान लीजिए आपके पड़ोसी के यहाँ कोई दुखदायी घटना हो गई है, और आप अपने यहाँ हास-परिहास या गाना बजाना कर रहे हैं, तो उसे तुरन्त बन्द कर देना चाहिए।

पड़ोसियों के बच्चे, आपके बच्चे साथ साथ खेलते हैं। वे जब कब लड़ेंगे भी। उनके लड़ने पर यदि आप के पास शिकायत आवे तो आपको अपने ही बच्चों को डांटना, या समझाना चाहिए। यदि आप पड़ोसियों के बच्चों को मारें या डाटेंगे, तो बच्चों का झगड़ा बड़ों का झगड़ा बन जाएगा।

पड़ोस या मुहल्ले में यदि किसी पर कोई कठिनाई आवे तो उसकी कठिनाई में हाथ बंटाना आपका कर्त्तव्य है। मसलन मुहल्ले में किसी का बच्चा बीमार है, जो उसकी दवा दारू नहीं करा सकता है और थोड़े से खर्च के बिना उसका जीवन संकट में है। ऐसे वक्त में यदि आप कुछ धन खर्च कर सकते हैं तो जरूर खर्च कर दीजिए। चाहे इसके लिए आपको खुद थोड़ी कठिनाई क्यों न उठानी पड़े। यदि आप खुद खर्च नहीं कर सकते तो आप इतना तो जरूर कर सकते हैं कि मुहल्ले के दस पाँच व्यक्तियों से सलाह करके उनसे वह जरूरत पूरी करा दें।

यह सम्भव नहीं है कि किसी मुहल्ले में इस प्रकार की सहायता कर सकने वाले लोग न हों।

यदि किसी पड़ोसी से आपकी बोल चाल नहीं है और उस पर कोई ऐसा संकट आ जाए, जो आप सहज ही दूर कर सकते हैं, तो पुरानी बातें भुला कर तुरन्त उसकी सहायता को पहुंचिए। आपके लिए यह एक अच्छे चरित्र की बात होगी।

मुहल्ले में किसी से ऐसा लड़ाई झगड़ा मत कीजिए जिससे आपका उससे सम्बन्ध छूट जाए। यह बात अभिमान से कहना—"मैंने फलां से बोलना छोड़ दिया है" या "मैंने अमुक से ताल्लुक खत्म कर दिए हैं" कोई अच्छी बात नहीं है।

मान लीजिए आप मुहल्ले के एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। लोग आप से अपने झगड़े निपटवाने आते हैं। कोई फैसला आपके पास ऐसा आया जिसमें आप एक पक्ष से ज्यादा प्रेम रखते हैं और दूसरे पक्ष से विरोध। तो भी आप निष्पक्ष फैसला कीजिए। किसी के साथ अन्याय मत कीजिए।

हर मुहल्ले में अच्छे, बुरे सब तरह के लोग रहते हैं। कोई व्यक्ति आपके विरोधी की बुराई आपके सामने करे तो उसे मत सुनिए। क्योंकि ऐसे लोग दोनों ओर से लड़ाई झगड़ा बढ़ाने का काम करते हैं। आपके सामने आपकी सी, विरोधी के सामने उसकी सी, कह कर लड़ाई को बढ़ावा देते हैं। इनसे हमेशा बचिए।

हर व्यक्ति के व्यौहार का असर आस पास के लोगों पर पड़ता है, आप किसी के लिए बुरी बात कहेंगे तो वह बात ज्यादा बुराई लेकर फिर आपके पास लौटेगी। इसी तरह से यदि आप किसी के लिए अच्छी बात कहते हैं तो वह आपकी बात कई अच्छाइयां लेकर आपके पास लौटेगी। इस लिए पीठ पीछे किसी की बुराई न कीजिए। जब कहना ही जरूरी हो तो उसकी अच्छी बातों को ही कहिए। दूसरों के

बारे में किसी अप्रिय बात को मुंह से निकालने से पहले सोच लीजिए कि वह बात निकल कर आपके चरित्र को गिराएगी या ऊंचा करेगी। अगर जरा भी शक हो कि अमुक बात आपके चरित्र को ऊंचा नहीं बनाती तो उसे मुंह के बाहर मत निकालिए।

जिस व्यक्ति की उसके पड़ोस या मुहल्ले में इज्जत नहीं होती वह दूसरी किसी जगह भी इज्जत नहीं पा सकता।

पड़ोसियों या मुहल्ले वालों से हमारे झगड़े-झंझट अक्सर उतरा चढ़ी की बातों से ज्यादा बढ़ जाते हैं। शान्ति प्रिय लोग कभी भी बातों की उतरा-चढ़ी में अपने को नहीं डालते। जो व्यक्ति आप से लड़ाई झगड़ा बढ़ाने के लिए उतरा चढ़ी के लफ्ज़ बोलता है उसे बोलने दीजिए। उसकी बात की टकराव का जवाब न मिलने पर वह स्वयं ही शान्त हो जाएगा। इसमें आप अपनी जरा भी हार मत मानिए।

सबसे बड़ा उसूल यह है कि पड़ोस के सभी लोगों से स्नेह कीजिए। आड़े वक्त उनके काम आइए। तब कोई भी आपसे लड़ाई झगड़ा नहीं करेगा। यदि कहीं आपकी गलती भी हुई तो भी लोग उस गलती की उपेक्षा कर देंगे।

बहुत से लोग पड़ोसियों से जरा सा मनमुटाव होने पर उन्हें कट्टर शत्रु मान लेते हैं। और ऐसी जबरदस्त दुश्मनी की बातें करने लगते हैं मानों वे अपने विरोधी पड़ोसी को मुहल्ले से निकाल कर ही दम लेंगे। ऐसे लोगों को यदि छूट दे दी जाए कि वे अपने विरोधियों को मुहल्ले से निकाल दें तो साल दो साल में वे सभी मुहल्ले वालों को मुहल्ले से निकाल देंगे। हम वर्षों से तो एक साथ रहें, और जरा सा झगड़ा होने पर तुरन्त जमीन आसमान एक करके उनके शत्रु बन जाएं, यह कहाँ तक ठीक बात है। इस पर सोच विचार जरूर करना चाहिए।

आपका उन्हीं मुहल्लेवालों से झगड़ा पड़ता है जिनसे पहले से आपका मेल होता है। पड़ोसी के साथ यदि झगड़ा हो जाए तो उस

झगड़े को भी आप ही को बरदाश्त करना और निपटाना सुलझाना चाहिए। पड़ोसी से प्रेम और दोस्ती का लाभ तो आप उठाएं, और अगर उससे कभी मनमुटाव हो जाए तो उसे लड़ने किसी और के पास भेजिए, यह कहाँ का न्याय है। दोनों बातें आपको ही बरदाश्त करनी चाहिए। इसमें आप छोटे नहीं हो जाएंगे।

यह भी ध्यान रखिए कि आपका विरोधी यदि आपके बारे में गलत धारणा बना ले, तो उसके जवाब में आपको वैसा नहीं करना चाहिए यदि आप अपने आपको विरोधी से ज्यादा समझदार मानते हैं तो आपको विरोधी के प्रति सोचने में उसकी पिछली अच्छाइयों का भी पूरा ध्यान रखिए। और यह भी ध्यान में रखिए कि कल फिर उससे आपकी दोस्ती हो सकती है। आप विरोध के कारणों की तह में पहुंच कर उस जड़ का सुलझाव ढूंढिए जिसके कारण उलझाव हुआ है तो सुलझाव मिल जाएगा, और झगड़ा शीघ्र ही शान्त हो जाएगा।

मुहल्ले की रक्षा की जिम्मेदारी भी मुहल्लेवालों की ही होती है। बहुत से लोग मुहल्ले की रक्षा करने में हिस्सा लेना चाहते हैं। परन्तु उन्हें सही रास्ता बताने वाले नहीं मिलते। आप इस कार्य में पहल कीजिए। मुहल्ले में चोरियाँ ज्यादा होने लगी हैं, या गुंडों का उत्पात बढ़ गया है, या नागरिक सुरक्षा का प्रश्न है। तो आप इन सभी कार्यों को हाथ में लेने की पहल लीजिए। और दूसरे लोगों को अपने साथ लेकर इन कार्यों को पूरा कीजिए। जो लोग अपने आपको मुहल्ले का प्रमुख व्यक्ति समझते हैं उन्हें ऐसे सार्वजनिक कार्यों को उठा लेने में पहल करनी चाहिए।

जिन जिन लोगों के सम्पर्क में आइए उन सभी से ऐसा व्यौहार कीजिए, मानों सभी व्यक्तियों से आपका काम पड़ सकता है। तभी आप हर पड़ोसी से अच्छा व्यौहार कर सकेंगे। और यह गैरमुमकिन नहीं है कि उनमें से बहुतों से आपका काम न पड़े।

पड़ोस या मुहल्ले की बहन बेटियों के प्रति हमें अपनी बहन बेटी का सा ही व्यौहार करना चाहिए। हमारी युगों से पुरानी परम्परा रही है कि हमारे गाँव का कोई भी, किसी भी जाति का व्यक्ति उस गांव में पानी तक नहीं पीता था, जिस गांव में हमारे गांव की कोई भी कन्या ब्याह कर जाती थी। गांव भर के लोग उस गांव को अपनी बेटी की सुसराल मानते थे और बेटी के यहाँ का पानी पीना पाप समझते थे। और आज हमारी बहन बेटियों को अपने मुहल्ले और पड़ोस में ही अपने शील की रक्षा करना मुशकिल हो रहा है। यह है हमारा चरित्र। जो लोग अपने को मुहल्ले का जिम्मेदार व्यक्ति मानते हैं उन्हें अपने मुहल्लों में इस तरह की बुराइयां रोकने का प्रबन्ध करना चाहिए। यह सब काम लड़ाई झगड़े से नहीं, बल्कि लोगों पर चारित्र्यिक दबाव डाल कर पूरे हो सकते हैं।

हमारी धर्म के प्रति कभी कभी आस्था जोर मारती है तब हम लाउडस्पीकर लगाकर भजन कीर्तन करते हैं और मुहल्ले भर को यह बता देते हैं कि हम भगवान का भजन कर रहे हैं। भगवान का भजन करना एक अच्छी बात है। हम सबको अपने इष्टदेव का भजन पूजन करना ही चाहिए इससे हमारे मन को शान्ति मिलती है, हमारा चरित्र बनने में सहायता मिलती है। और प्रत्यक्ष लाभ तो यह होता ही है कि हम उतनी देर दूसरी बुराइयों से बचे रहते हैं। परन्तु जब हम लाउडस्पीकर लगाकर मुहल्ले भर को जबरदस्ती अपना भजन कीर्तन सुनाते हैं तब हमारा यह कार्य हमारे मुहल्ले भर के लोगों को कष्ट पहुंचाता है। हमें वह काम हरगिज नहीं करना चाहिए जिससे हमारे द्वारा दूसरों को जरा भी कष्ट पहुंचे। यही कीर्तन भजन हम बिना लाउडस्पीकर के कर सकते हैं। बल्कि भगवान का भजन तो इतनी व्यक्तिगत, निजी चीज है जिसे बिलकुल एकान्त में और बिना किसी की जानकारी के ही करना चाहिए।

पड़ोसी, मुहल्ले वालों से हमेशा प्रसन्नता से मिलिए। प्रसन्नता का वातावरण रखने से उलझाव नहीं होते हैं, और हों भी तो जल्दी ही दूर हो जाते हैं। यह समझ लीजिए कि मुसकान में जादू है, हर पड़ोसी से मुस्कान से मिलिए। अपने से बड़ों का आदर कीजिए। छोटों से स्नेह कीजिए। बराबर वालों से मित्रता मानिए। सबके सुख दुख में साथ दीजिए। संयम नियम से रहिए। फिर झगडे की गुंजाइश कहां रह जाती है।

आप में से बहुत से लोगों को मालूम होगा कि पहले हर पड़ोसी या मुहल्ले वाले से चाहे वह किसी जाति धर्म का हो एक न एक रिश्ता माना जाता था। उस रिश्ते से ही सब एक दूसरे से व्यौहार करते थे। इस रिश्ते में जात पाँत का कोई भेद भाव न होता था। क्या वह वातावरण हम पढ़े लिखे लोग फिर अपने मुहल्लों में नहीं ला सकते ?

अगर आपको कभी यह मालूम हो जाए कि आपके पड़ोसी की कोई हानि होने वाली है, और आप यह समझते हैं कि यह बात पड़ोसी को नहीं मालूम है, तो आप तुरंत पड़ोसी को आगाह कर दीजिए।

हर कोई व्यक्ति अपने को ही बड़ा समझता है। आप भी अगर अपने को बुद्धिमान या समझदार मानते है तो वैसा ही मानिए, और बाकी सबों को छोटा मान कर उनके कसूर हमेशा क्षमा करते रहिए। तभी तो आपका बड़प्पन होगा।

मुहल्ले के लोगों से प्यार कीजिए, मुहल्ले की धरती से प्यार कीजिए और मुहल्ले के अच्छे और बुरे सभी व्यक्तियों से प्यार कीजिए। तभी आप अपने देश से प्यार कर सकेंगे। अगर आपको अपने मुहल्ले से प्यारन हीं है तो आपको अपने देश से कैसे प्यार होगा ?

:: ७ ::

नौकरी में

यदि हम अपने चरित्र का ठीक तरह से विकास करें तो हम अपनी नौकरी में बड़ी से बड़ी तरक्की भी कर सकते हैं।

जब हम नौकरी शुरू करते हैं तो पहले तो हम अपना हर काम जानने समझने, और उसे ठीक प्रकार से करने का पूरा प्रयत्न करते हैं। परन्तु बाद में जैसे जैसे दिन बीतते जाते हैं और हमें हमारे काम की जानकारी व उसका ज्ञान बढ़ने लगता है, और अच्छा काम करके तरक्की करने का मौका आता है तब हममें से बहुत लोग अपने काम के प्रति लापरवाह होने लगते हैं। यह लापरवाही हम में इसलिए आ जाती हैं, जब हममें अच्छे चरित्र की कमी होती है, या जब हम अपने आलसी साथी कर्मचारियों को काम से लापरवाह देखते हैं। उस वक्त हम यह भूल जाते हैं कि हमारी अच्छी बुरी कार्यशैली हमारी नौकरी में हमें नफा नुकसान पहुंचाएगी और दूसरे की, दूसरे को।

यदि हम इस बात पर विचार करें कि जिसने हमें नौकर रक्खा है उसने हमारे ऊपर विश्वास करके हमें काम की जिम्मेदारी सौंपी है। उसका काम उसकी इच्छा के मुताबिक ठीक होने ही से वह हमसे प्रसन्न रहेगा तभी वह हमारी तरक्की करेगा। तभी हमारी नौकरी का मंशा भी पूरा होता है।

जो लोग अपने कार्यालय में जाकर वहाँ पूरी तरह जिम्मेदारी के साथ काम न करके सिर्फ घण्टे पूरे करके शाम को अपने घर चले आते हैं वे अपने अफसर या मालिक के प्रति ईमानदारी नहीं बरतते।

किसी दिए हुए काम की खानापुरी करना एक बात है। उसी काम की गहराई तक पहुंच कर उसे जिम्मेदारी से पूरा करना दूसरी बात है। जो भी काम आपके जिम्मे हो उस काम के हर हिस्से पर विचार करके उसे यह समझ कर करना चाहिए कि उस काम के आप पूरे जिम्मेदार और जवाबदेह हैं। इस तरह हर कार्य को हमेशा ठीक तरह से पूरा करके ही छोड़ना चाहिए।

यदि सीधे किस्म का काम करते करते कोई कठिनाई का काम पड़ जाए तो उससे भागना नहीं चाहिए। बल्कि उसे ठंडे दिमाग से सोच कर सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि कठिन कामों में ही आप की तरक्की का रास्ता छुपा होता है और तरक्की के रास्ते कठिन कामों को पूरा करने से ही खुल सकते हैं।

सरकारी नौकरी में कई बार यह देखा जाता है कि कुछ कर्मचारी अपने काम के प्रति वफादारी नहीं बरतते या वे अपने अफसर के हुक्म को टाल देते हैं। वे अपने कार्यालय में उन लोगों की नकल करते हैं जो काम से जी चुराते हैं। इसलिए जरूरी है कि आप अपना काम मेहनत से बिना यह देखे करें कि आपके काम या मेहनत को कोई देख रहा है या नहीं।

कुछ कर्मचारी दफ्तर की चीजें, मसलन कागज, स्टेशनरी वगैरह लापरवाही से खराब व बरबाद कर डालते हैं। कुछ लोग अपने कार्यालय में अनावश्यक रोशनी जलने देते हैं या बिना जरूरत के पंखा चलता रहने देते हैं या कुरसी, मेज, फाइलों आदि वस्तुओं को अपनी लापरवाही से इस्तेमाल कर तोड़ फोड़ डालते हैं। वे यह समझ कर इस हानि को बचाने का प्रयत्न नहीं करते कि उनके कार्यों की सूची में यह काम उनका नहीं लिखा है। यह सब कितनी चरित्रहीनता की बात है।

यह भी देखा जाता है कि कुछ लोग दफ्तर में इधर उधर थूक या नाक की गन्दगी करके, जगह गन्दी करते रहते हैं, काम के वक्त गपशप

करते रहते हैं जो काम उन्हें कर लेना चाहिए उसे न करने के बीस बहाने बता कर काम करने से बचते हैं। अपने अफसरों के हुक्मों को पूरा नहीं करते। ऐसे लोग न सिर्फ अपनी तरक्की से वंचित रहते हैं बल्कि इससे अपने देश की भी हानि करते हैं।

अफसर लोग बहुत से कार्यों के लिए हुक्म देते हैं लेकिन बहुत से कार्य ऐसे भी हैं जिनका हुक्म नहीं दिया जाता। वे कार्य अफसरों की इच्छा जान कर जो लोग कर लेते हैं उनसे उनके अफसर सदैव प्रसन्न रहते हैं।

जिन सरकारी कर्मचारियों का जनता से सम्पर्क रहता है, वे यदि मीठा बोलने और जनता से सहानुभूति पूर्वक बात करने की आदत डाल लें, तो जनता उनसे सदैव प्रसन्न रहती है।

हर सरकारी कर्मचारी चाहे वह छोटा हो या बड़ा जनता का सेवक है। यानी जो वेतन वह पाता है वह जनता द्वारा मिले हुए धन से पाता है। जिस तरह महाजनी नौकरी में महाजन मालिक होता है उसी तरह सरकारी नौकरी में देश की जनता मालिक होती है। अपने से सम्बन्धित जनता को जहाँ तक कानून कायदों में मनाही न हो, प्रसन्न और सन्तुष्ट करना हर कर्मचारी का नैतिक कर्तव्य है।

कोई कोई कर्मचारी जनता का कार्य तब करते हैं जब जनता से उस काम की उजरत ले लेते हैं या लेने की इच्छा करते हैं। जिसे साफ लफ्जों में "रिश्वत" कहा जाता है। जिन कर्मचारियों में यह आदत होती है वे खुद तो चरित्रहीन कहलाते ही हैं, साथ ही जिससे वे रिश्वत लेते हैं उसे भी चरित्रहीन बनाते हैं। चरित्रवान कर्मचारियों को ऐसा कभी भी और किसी हालत मे भी नहीं करना चाहिए।

रिश्वत लेने देने की चरित्रहीनता पर आज देश भर में उंगली उठाई जा रही है। रिश्वत लेना देना एक भयंकर कानूनी अपराध भी है।

धन का लालच सबको होता है। परन्तु लालचवश भी हम और बहुत प्रकार के धन लेना अच्छा नहीं समझते हैं। मसलन—भीख माँग कर लाया हुआ धन, अपनी बहन बेटी का धन, अपने पुरोहित, गुरु, हकीम, डाक्टर का धन या चोरी डकैती का लूटा हुआ धन। इस प्रकार के धन लेना हम पाप या बुरा समझते हैं तो रिश्वत के धन को लेना हम पाप क्यों न समझें। क्योंकि यह भी उसी दर्जे का, हमारे लिए बुराई लाने वाला धन है।

रिश्वत लेने वाले को कभी भी धन का संतोष नहीं होता। वह हमेशा धन की कमी ही महसूस करता रहता है। क्योंकि उसको अपनी मेहनत व ईमानदारी की कमाई का मोह घट जाता है जिससे उस पर से भरोसा उठ जाता है अतः वह कभी भी सुखी नहीं रहता। हमें कभी भी ऐसे व्यक्ति की बराबरी या उसकी नकल करने की बात दिमाग में नहीं लानी चाहिए जो रिश्वत का धन लेता हो।

इस प्रकार की अनैतिकता सिर्फ रिश्वत से ही नहीं होती है। हमारी नौकरी में उसके और भी बहुत से रूप हैं। अपने काम के घंटों में कम घण्टे काम करना, अपने मातहतों से अपने निजी काम कराना, जो वाहन सरकारी काम के लिए मिला हो उसका उपयोग अपने निजी काम के लिए करना, सरकारी वस्तुओं को अपने निजी उपयोग में लाना वगैरह। यह सब काम भी रिश्वत लेने की चरित्रहीनता से कम नहीं हैं। इससे भी हर चरित्रवान व्यक्ति को बचना चाहिए।

हर सरकारी कर्मचारी का कार्य जनता के हित में होता है। जहाँ समूह और व्यक्तिगत हित का मुकाबला पड़ता है, वहाँ समूह के हित को प्राथमिकता दी जाती है।

नौकरी के दरम्यान आपके जिम्मे जितनी वस्तुओं की जिम्मेदारी हो उनकी हिफाजत या देखभाल में आपको जरा भी गफलत नहीं करनी चाहिए। यह भी देखना चाहिए कि वे वस्तुएं इस प्रकार तो नहीं रक्खी

हैं जिससे वे शीघ्र ही नष्ट हो जांए। या ऐसा तो नहीं है कि उनका दुरुपयोग हो रहा है। कुछ लोग पुरानी वस्तु के स्थान पर नई वस्तु प्राप्त हो जाने की लालच में पुरानी काम में आने वाली वस्तुओं को शीघ्र ही नष्ट कर देते हैं। यह प्रवृत्ति बड़ी खराब है और इससे राष्ट्र के धन की हानि होती है। यह मत भूलिए कि वही देश समृद्धशाली कहलाता है जिस देश में मनुष्य संख्या नहीं बल्कि वस्तु संख्या ज्यादा होती है। वस्तुओं की बरबादी चाहे निजी हो या सरकारी, राष्ट्र की हानि है। इसलिए अपने जिम्मे हुई हर वस्तु की हिफाजत करना अपना नैतिक कर्तव्य समझिये।

सरकारी नौकरी में, बहुत सी जगहों में, बहुत सी बातों को राष्ट्र के हित में आम लोगों से छिपा कर रक्खा जाता है। यह छिपाव राष्ट्र के हित में बहुत जरूरी होता है। जो कर्मचारी इन गोपनीयताओं को चाहे लापरवाही से या किसी लालचवश किसी पर प्रकट कर देते हैं वे अपने देश के साथ भयंकर गद्दारी करते हैं। ऐसे राष्ट्रद्रोहियों के अपराध कभी भी क्षमा नहीं किये जा सकते।

इसलिए यदि आपको कोई भी गोपनीयता इस प्रकार की मालूम हो तो उसे छिपा कर रखिए चाहे उसके छिपाने की जिम्मेदारी आपकी हो या न हो।

सरकारी नौकरी में ही नहीं बल्कि हर जगह जरूरी है कि हमारी आदत किसी बात को पेट में रखने की होनी चाहिए, जो लोग पेट में बात नहीं रखते उन्हें कभी न कभी हानि उठानी पड़ती है।

अगर आप कभी कोई गलती, जाने या अनजाने में कर बैठें तो बेहतर तरीका यह है कि आप अपनी गलती अपने अफसर को बता दें। ऐसा न करके जो लोग अपनी गलती को छिपाते या दूसरों के सर मढ़ते हैं, वे एक के बजाए कई गलतियों के दोषी होते हैं।

नौकरी में तरक्की करने का एक अनूठा उपाय यह है। यदि आप

अपने काम के अलावा अपने से ऊपर वाले अफसर के काम को भी अफसर की अनुमति लेकर करने लगें तो आप देखेंगे कि धीरे धीरे आप उस काम में भी निपुण हो जाएंगे और मौका मिलने पर आप उस स्थान पर तरक्की करके पहुंच भी सकते हैं। ऊंची तरक्की की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए ऊंचे कार्य और ऊंचे विचार रखना बहुत ही जरूरी है।

नौकरी में आप तरक्की करना चाहते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। अगर आप से यह सवाल किया जाए कि तरक्की पाने के लिए आपने क्या उपाय किया, तो बहुत से लोग इसका सही उत्तर नहीं दे सकेंगे। शायद आपका उत्तर यह भी होगा कि अमुक अमुक जो आप से खुश नहीं थे उनकी नाराजगी के कारण आप तरक्की नहीं कर सके। आपका यह उत्तर सही नहीं है। आप चाहते थे कि सिफारिश के बल पर आप तरक्की करें। आप चाहते थे कि पुरानी नौकरी होने के कारण आपको तरक्की मिले। दरअसल तरक्की के पीछे भागने से तरक्की नहीं मिलती, बल्कि आपका प्रयत्न, आपकी मेहनत, आपके सोचने का ढंग, आपका चरित्र, जब आपके दूसरे साथियों से ऊँचा होगा तब तरक्की खुद-बखुद आपके पीछे भागने लगेगी, भले ही उसमें कुछ देर लग जाए।

हर नौकरी के कुछ उसूल होते हैं उन्हीं उसूलों की पूर्ति के लिए आदमी नौकर रक्खा जाता है। नौकरी वाले व्यक्ति को उन उसूलों की पूरी जानकारी करनी चाहिए और उस नौकरी के दौरान इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिए कि जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप नौकर हैं वह उद्देश्य पूरा हो रहा है या नहीं। अगर उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो रही है तो अपने को इस प्रकार बनाना चाहिए, ताकि उस नौकरी का उद्देश्य पूरा हो।

:: ८ ::

व्यापार में

हम व्यापारियों ने अपने पवित्र व्यापार के पेशे को बहुत कुछ दूषित कर लिया है। एक वक्त था जब समाज में व्यापारियों की ईमानदारी की बहुत बड़ी इज्जत की जाती थी, और समाज व्यापारियों पर बहुत बड़ा भरोसा भी करता था। परन्तु आज समाज से व्यापारियों की ईमानदारी और इज्जत बहुत कुछ उठ गई है। सिर्फ उनके धन की इज्जत रह गई है।

व्यापारियों की चरित्रहीनता से हमारे समाज को और बहुत सी कठिनाइयां हो गई हैं। कोई वस्तु चाहे वह खाने की हो या दूसरे उपयोग की असली और शुद्ध मिलनी मुशकिल हो गई है। थोड़े रोजगार से बहुत मुनाफे की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। व्यापारियों के गलत काम इसी के परिणाम हैं। अच्छे और चरित्रवान व्यापारियों की संख्या बहुत घट गई है।

बढ़िया माल दिखाकर सौदा करना और फिर घटिया माल ग्राहक को दे देना। इसे दूकानदारी न कह कर यदि 'ठगी' कहा जाय तो अनुचित न होगा। हमारे देश से जो माल विदेशों को जाता है उसमें नमूने के विरुद्ध घटिया माल जाने से विदेशों में हमारे देश की बहुत बड़ी बदनामी हुई है और विदेशी व्यापारियों ने विश्व के बाजार में हमारी इस अनैतिकता की बड़ी खिल्ली उड़ाई है। बिना देखे हमारे यहां के माल पर भरोसा करने वालों की संख्या बहुत घट गई है।

पचासों वर्षों से अरबों रुपए का माल हमारे देश में विदेशों से आता रहा है। उन विदेशियों ने अपनी व्यापारिक ईमानदारी की

साख हमारे देश में इतनी गहरी बना ली थी जिससे उनके 'सूचीपत्र' पर ही हमारे देश में हर वर्ष करोड़ों अरबों रुपए का माल मंगाया जाता रहा है और कभी भी उनके लिखे हुए के विरुद्ध माल नहीं निकला। हमें स्वतंत्र हुए एक अच्छा खासा समय बीत रहा है, परन्तु अभी तक हम विदेशों के व्यापारिक क्षेत्र में अपनी ईमानदारी की छाप नहीं जमा सके। यह सब हमारी चरित्रहीनता ही तो है।

विदेश तो विदेश, देश के अन्दर इस चरित्र-दोष के कारण व्यापारी व्यापारी भी एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते।

कुछ दूकानदार सड़ी गली वस्तुएं अच्छी वस्तुओं में मिला कर बेच देते हैं। दवाइयां बेचने वाले दूकानदार जान बूझ कर नकली दवाइयाँ बेचते हैं। उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं कि नकली दवाइयों के कारण कितने मरीज मौत के घाट उतर जाते हैं।

कुछ व्यापारी कम तौल कर शीघ्र ही धनी हो जाना चाहते हैं। कुछ व्यापारी सीधे सादे लोगों से माल खरीदते हैं तो बड़े बाटों से और बेचते हैं छोटे बाँटों से।

गल्ले के व्यापारी गल्ले में कूड़ा करकट मिला कर उसका वजन बढ़ा देते हैं। सीमेंट में मिट्टी मिलाकर बेंचते हैं। दूध में पानी, घी में वेजेटेबिल मिलाना तो मानों अपराध ही नहीं रह गया है। पिसे हुए मसालों में लकड़ी का बुरादा और पत्तियां पीस कर मिलाई जाती हैं। गेहूं के आटे में जुआर का आटा, सरसों के तेल में, मोमफली, अलसी और गुल्लू का तेल मिलाया जाता है। साबूदाना, केसर असली मिलना मुशकिल है। चाय में लकड़ी का चूरा रंग कर मिलाया जाता है। कटी हुई सुपाड़ी में छुहारे की गुठली मिलाई जाती है।

ऊनी कपड़े में सूत मिलाया जाता है। सूती कपड़े में उसके धागे कम करके माड़ी से उसका वजन बढ़ाया जाता है।

यह सब बातें व्यापार नियम के विरुद्ध हैं जिन पर हर व्यापारी को विचार करना चाहिए।

व्यापार में हर व्यक्ति मिलावट करके तुरन्त धनी हो जाना चाहता है। धनी होने की कामना करना कोई बुराई की बात नहीं है। परन्तु ईमानदारी की कमाई से ऐसी इच्छा करना मुनासिब है।

कुदरती नियम यह है कि धनी हो जाने पर जो धन अपने वास्तविक खर्च से बढ़ता है उसका मालिक कमाने वाला नहीं रह जाता है। बल्कि कमाने वाले की उस संचित धन की हैसियत 'ट्रस्टी' या इन्तजामकार की होजाती है। ऐसी हालत में उस बचे हुए धन का उपयोग सार्वजनिक हित में होना जरूरी हो जाता है।

आप कहेंगे यह अजीब बात है। जब धन हमारा कमाया हुआ है तो हम जैसे चाहें उसे खर्च करें। दूसरों को इसमें राय देने की क्या जरूरत। जी, नहीं—हर युग में इस तरह के सँचित धन का मालिक उसका ट्रस्टी ही होता रहा है।

जब जब लोगों के पास इस तरह धन जुड़ जाता था, तब-तब वे उसका उपयोग सार्वजनिक हित में अपनी इच्छा से मन्दिर, मस्जिद, कुआं, तालाब, धर्मशाले, पाठशाले, दवाखाने मुफ्त भोजन के लंगर आदि बनवा कर करते रहे हैं। जो लोग स्वयं ऐसा नहीं करते थे उन्हें समाज में न तो अच्छा व्यक्ति माना जाता था और न उन्हें कोई सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती थी। आमतौर से यह भी देखा गया है कि जो लोग अपने संचित धन को सार्वजनिक उपयोग में नहीं लाते थे कुदरत कुछ ऐसा करती थी कि उनके लड़के भी उस धन का उपयोग नहीं कर पाते थे। बल्कि वह धन बीमारी, मुकद्दमेबाजी, चोरी, जुआँ आदि आपत्तियों से फिर जनता में चला जाता रहा है।

इन सब बातों पर ध्यान दीजिए और रोजगार में पवित्रता लाइए, ताकि आपके बाल-बच्चे भी आपकी ईमानदारी से ईमानदारी की शिक्षा प्राप्त कर आपके रोजगारों को दीर्घजीवी कर सकें।

व्यापार में रुपए पैसे का तकाजा भी बना रहता है। आप रुपए का तकाजा करते वक्त ऐसे निजी किस्म के लफ्जों का इस्तेमाल कभी न कीजिए। जैसे–"आज मेरे घर में खाने को नहीं है" या "मेरे बच्चे की दवा के लिए पैसे नहीं है"। घरेलू कारण होते हुए भी ऐसे लफ्ज व्यापार में इस्तेमाल करना एक हीनता दर्शाती है।

एक रोजगार हम लोग ठेकेदारी का भी करते हैं। समाज में हमें जब "ठेकेदार साहब" कह कर पुकारा जाता है तब सुनने वालों के मन में एक घृणित किस्म का असर कुछ ठेकेदारों के प्रति होने लगा है। क्योंकि यह एक आम धारणा हो गई है कि ज्यादा ठेकेदार अपनी ठेकेदारी में ईमानदारी नहीं बरतते। ठेकेदार दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो ठेका लेकर आमतौर से देश के निर्माण का कार्य करते हैं। दूसरे वे जो सरकारी मुहकमों या दूसरे कार्यालयों में वस्तुएं सप्लाई करते हैं

निर्माण कार्य के ठेकेदारों को यह सोचना चाहिए कि वे इन कार्यों में यदि पूरा माल मसाला, लोहा, सीमेंट वगैरह नहीं लगा रहे हैं, तो उससे एक तो हमारे राष्ट्र का निर्माण कमजोर होता है, जिससे उन कार्यों का जीवन काफी कम हो जाता है और दूसरे उनमें कीमती वस्तुएं कम लगा कर वे जनता के धन के साथ गद्दारी करते हैं। एक काम जिसकी जिन्दगी ६० वर्ष होनी चाहिए, यदि २० वर्ष की ही हुई तो हमारी आने वाली पीढ़ी हम ठेके-दारों को कोसेगी और हमें राष्ट्रदोही कहकर पुकारेगी।

इसी तरह जो सप्लाई के काम में ईमानदारी नहीं रखते वे भारत की गरीब जनता के धन के साथ खिलवाड़ करते हैं। क्योंकि देश के सभी काम भारत की गरीब जनता के धन से हो रहे हैं।

यह सब अनैतिकता हम इसलिए करते हैं, क्योंकि हम कम से कम

समय और कम से कम मेहनत में ज्यादा से ज्यादा धन कमा लेना चाहते हैं। और उसके लिए अपनी सच्चरित्रता को भी कुर्बान कर देते हैं।

हमारे देश में लाखों लोग ऐसे हो गए हैं, जिन्होंने अपने राष्ट्र के नाम पर अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था और हम व्यापारी लोग ऐसे चरित्रहीन हैं जो उस धन के लालच में राष्ट्र-निर्माण को कमजोर कर रहे हैं, जो धन हमेशा किसी के पास नहीं रहता है। बल्कि अब तो वह सामाजिक व्यवस्था दिन ब दिन सामने आ रही है जिसमें व्यक्तिगत लोगों को धन जोड़ने की अनुमति समाज में नहीं रहेगी।

व्यापारी भाइयों को अपनी सच्चरित्रता से, अपने ऊपर लगा यह कंलक धोकर अपने को देशभक्त कारबारी होने का सबूत देना चाहिए, वरना उनकी रही सही जो इज्जत समाज में है वह भी खत्म हो जाएगी।

:: ६ ::

मित्रों में

मित्र का रिश्ता बड़ी अहमियत का होता है। यदि किसी व्यक्ति का कोई मित्र न हो तो उसे अपनी जिन्दगी गुजारनी मुशकिल हो जाती है। बिना समाज के मनुष्य प्रसन्न नहीं रह सकता और समाज में ही मित्र होते हैं। अच्छे मित्रों से हमेशा खुशी और सुख मिलता है, जबकि बुरे मित्र दुखदायी होते हैं।

हमारी किसी से एक दो बार मुलाकात हो गई तो उसे हम अपना मित्र मान कर उससे बड़ी बड़ी आशाएं करने लगते हैं। ऐसा उचित नहीं है। परिचय के बाद जब तक हमारी घनिष्टता न हो जाए हमें उसको अपना पूरा हितैषी या मित्र नहीं समझ लेना चाहिए, बल्कि उससे होशियार भी रहना चाहिए कि हो सकता है उसने अपने ही लाभ के लिए हमसे परिचय बढ़ाया हो।

अच्छा दोस्त मुशकिल से मिलता है। जब किसी से परिचय हो जाय और वह आपकी नजर में अच्छा भला व्यक्ति हो, तो उससे मित्रता बढ़ाते रहना चाहिए। किसी वक्त भी, अगर आपको ज्ञात हो जाए, कि वह सिर्फ अपने मतलब के लिए मित्रता बढ़ा रहा है तो शीघ्र ही उससे अपना पीछा छुड़ा लेना चाहिए।

जब तक किसी व्यक्ति से गाढ़ी मित्रता न हो जाए, उससे अपने कोई काम नहीं कहने लगना चाहिए। मित्र को कोई भी ऐसा काम, चाहे वह छोटा या बड़ा हो, करने को नहीं कहना चाहिए जिससे मित्र की बदनामी होती हो या उसके बड़प्पन पर बुरा असर पड़ता हो।

मित्र से आप जिस तरह के व्यौहार की आशा करते हैं उसी तरह का व्यौहार उससे भी कीजिए। यदि मित्र से किसी बात में मतभेद हो जाए, और ऐसा होना बहुत मामूली बात है, तो कभी भी क्रोध करके उससे उल्टी सीधी बात करके विरोध नहीं करना चाहिए। यदि मतभेद न मिटे तो उस विशेष मतभेद के अलावा बाकी सभी बातों में उससे पहले की ही तरह व्यौहार मानते रहना चाहिए।

मित्र से मनमुटाव हो जाने पर भी कुछ उसूल जरूर ध्यान में रखना चाहिए। मित्र से मनमुटाव के दिनों में उस कभी भी ऐसी बात न कहिए जो मेल होने पर उसके मन में खटकती रहे। अपने द्वारा किए गए एहसानों को, झगड़े के दिनों में, मित्र से कभी मत कहिए। मित्र की कोई गोपनीय बात यदि आप जानते हैं तो झगड़े के दिनों में उससे अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न कभी मत कीजिए, और न उस गोपनीयता को किसी पर प्रकट कीजिए। हमेशा ध्यान में रखिए कि मित्र से यदि आज झगड़ा हो गया है तो कल फिर मेल होगा। और बराबर मेल का प्रयत्न भी कीजिए। इस प्रयत्न में यह मत सोचिए कि आप ही मेल का प्रयत्न क्यों करें, मित्र क्यों न करे। साथ ही ऐसी कोई बात या कार्य मत कीजिए, जो मेल होने में बाधक हो।

मित्र के झगड़े को बार बार एकान्त में सोचिए और इस तरह सोचिए कि इस झगड़े में मित्र की नहीं बल्कि आपकी गलती है। सोचने में मित्र के स्थान पर अपने को रखिए तो आपको तुरन्त अपनी गलती मालूम हो जाएगी और इस तरह अपनी गलती मान कर मित्र से बात साफ करके मेल कर लीजिए।

मित्रता तभी चलती है जब आप अपने मित्र से बराबर का व्यौहार रक्खें। आपका मित्र यदि आपसे बहुत बार सम्पर्क करता है तो कमो-बेश आपको भी उससे उतना ही सम्पर्क करना चाहिए।

मित्र की बहन बेटी को अपनी बहन बेटी मान कर व्यौहार कीजिए। मित्र पर कभी भी कठिनाई आए तो सदा उसकी सहायता में तत्पर रहिए। मित्र पर बिना एहसान जताए एहसान करते रहिए।

आपका मित्र अगर अपने परिवार के दूसरे लोगों से आपकी मित्रता नापसन्द करे, तो तुरन्त बात समझ कर उससे बचना चाहिए। मित्र का बताया कोई कार्य यदि आप नहीं कर सकते तो उसे स्पष्ट यह जानकारी करा दीजिए कि वह काम आपसे नहीं होगा। ऐसे मामलों में मित्र ही नहीं किसी को भी धोखे में नहीं रखना चाहिए।

मित्रता बराबर वालों से निभती है। यदि बहुत बड़े व्यक्तियों से मित्रता हो जाए तो उन्हें बड़ा ही करके मानिए। उनसे कभी ऐसी बातें न कीजिए जो उन्हें या उनके पास उठने बैठने वाले दूसरे लोगों को अप्रिय लगें। उनके प्रति जो अदब कायदा मुनासिब है पूरी तरह खास तौर पर उनके दूसरे मित्रों के सामने पूरी तरह बरतिए। मित्रता का मतलब बेअदबी नहीं है, यह याद रखिए।

बहुत बड़े लोगों से सभी मित्रता करना चाहते हैं, यह कोई महत्व की बात नहीं है। तारीफ की बात तो तब है जब आप अपने से छोटे और समाज के पिछड़े हुए उन लोगों से मित्रता करें, जिनकी बुद्धि का विकास अभी तक नहीं हुआ है। मित्र बनाकर उनकी बौद्धिक और सामाजिक स्थिति का विकास कीजिए। यह तभी संभव है जब आप उन मैले कुचैले छोटे कहे जाने वाले लोगों से स्नेह करेंगे। इससे वे आपके सच्चे मित्र बनेंगे। क्योंकि छोटे कहे जाने वाले लोग अपने शुभचिंतकों के प्रति बड़े कृतज्ञ होते हैं। साथ ही आपके द्वारा इनकी बुद्धि विकास से अपने देश का भी लाभ होगा।

यदि इस तरह के लोगों से आप मित्रता करते हैं तो उनके साथ छोटे भाई की तरह व्यौहार कीजिए। उनकी गलतियां, जो होती रहेंगी, उन पर कभी भी क्रोध न कीजिए, बल्कि उन्हें क्षमा करते रहिए, और

उनकी गलतियों पर उन्हें समझाते रहिए। खुद उनकी गलतियों के प्रति सतर्क भी रहिए। दूसरे लोगों के सामने उन्हें कभी डाट-फटकार न कीजिए, जिससे वे अपनी बेइज्जती समझें। उन्हें हमेशा समझा बुझाकर उनकी बुराइयां दूर करने की कोशिश कीजिए। इनमें से जो लोग सिर्फ अपने ही लाभ की सोचते हों और समाज के दूसरे लोगों की सुख सुविधा का ध्यान न रखते हों, उन्हें समझाइये कि अगर हम दूसरों की सुख सुविधा का ख्याल रक्खेंगे तभी दूसरे लोग हमारी सुविधा का ध्यान रक्खेंगे।

मुस्काव एक बड़ा जादू है, मित्र ही नहीं सभी पुरुषों से मुसकरा कर मिलिए। इससे मिलने वाला व्यक्ति समझता है कि आपने उसका स्वागत किया है, मुंह फुलाए हुए तरीके से या गम्भीर मुद्रा से मिलने वाले लोगों को, लोग पसन्द नहीं करते। मित्र से कभी भी ईर्षा मत कीजिए। उसके लाभ को अपना ही लाभ मान कर प्रसन्नता प्रकट कीजिए।

मित्रता की नींव प्रेम व स्नेह पर होती है। यदि हम बुरे से बुरे व्यक्ति से प्रेम स्नेह करें तो वह सदैव हमारी दोस्ती करना चाहेगा। और वह हमारे प्रति ईमानदार भी रहेगा। बड़े लोगों ने कहा है—"बुराई से घृणा करो—बुराई करने वाले से नहीं"।

जब भी हम मित्रों में बैठें तो हम वह बात चीत करें जिसमें सभी उपस्थित लोगों को दिलचस्पी हो। बहुत से लोगों की आदत होती है कि वे अपनी ही दिलचस्पी की बातें करते रहते हैं। ऐसे लोगों से दूसरे लोग जल्दी ही ऊब जाते हैं और फिर उनकी संगत से बचने लगते हैं। दूसरे लोगों के बीच यह भी मुनासिब नहीं है कि हम ही हर बात बोलते रहें दूसरों को बोलने का मौका ही न दें।

मित्र जब भी किसी कठिनाई में पड़ जाए तो उसकी सहायता पर तत्पर रहिए। उसे हिम्मत बंधाइये। आपके तसल्ली देने से मित्र को कठिनाई पार करने में बहुत बड़ा बल मिलेगा।

यदि आपका मित्र अपनी कोई बात आपसे छुपाना चाहता है तो जबरदस्ती दोस्ती का वास्ता देकर या घुमा फिरा कर वह बात जानने की कोशिश मत कीजिए। मित्रों की बात चीत में हर बात में अपनी नजीर देने लगना भी कोई मित्र पसन्द नहीं करता, और नाहीं कोई मित्र यह पसन्द करता है कि उसे एक ही किस्सा या एक ही नजीर बार-बार हर बात में सुनाई जाए। ऐसे लोगों से भी मित्र ऊब जाते हैं।

मित्रता में बदला पाने की भावना कभी नहीं रखनी चाहिए, यदि आपने अपने मित्र पर कोई बड़ा एहसान कर दिया है तो आप उनसे बदले की इच्छा न करें। और नाहीं इन एहसानों की चरचा मित्रों से करें। यदि मित्र आप पर कोई एहसान करे तो उस एहसान का जिक्र करके उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते रहना चाहिए। इससे एहसान करने वालों को नैतिक बल मिलता है जिससे वह ज्यादा से ज्यादा लोगों पर एहसान करने को तैयार रहते हैं।

कुछ लोग ज्यादा गहरी मित्रता के कारण मित्रों से बात चीत बहुत ही कटु लफ्जों में करने लगते हैं और कभी कभी अपशब्द भी निकाल देते हैं। दोस्ती की वजह से, बहुत ही खुशगवार हालत में तो कभी कभी यह बात निभ जाती है परन्तु बहुत बार इस तरह की बात चीत कोई मित्र पसन्द नहीं करता। खास तौर से दूसरे लोगों के सामने।

मित्र से अपनी कोई ऐसी गोपनीय बातें जिनका ताल्लुक मित्र से नहीं है, नहीं करनी चाहिए। बल्कि अपनी ऐसी बात भी मित्र से कोई नहीं करनी चाहिए जिससे मित्रता टूटने पर मित्र आपको कोई बड़ी हानि पहुंचा सके।

मित्र ने अगर सिर्फ आपको ही कोई निमंत्रण दिया है तो आप अकेले ही उस निमंत्रण में जाइए, परिवार के दूसरे लोगों को लेकर मत जाइए। बहुत से लोग मुंह पूछे निमन्त्रण में परिवार भर को लेकर

चल देते हैं। वास्तविक और मुंह पूछे निमन्त्रण में फर्क समझने की कोशिश करनी चाहिए।

जब भी मित्र के घर जाइए यदि वहां मित्र न मौजूद हो, सिर्फ महिलाएं ही हों तो वहाँ ज्यादा देर मत ठहरिये।

यदि आपको कभी धन की जरूरत पड़ जाए, और आप समझते हैं कि आपके मित्र के पास है, और आप मित्र से मांग बैठते हैं। यदि उसने आपके मांगने पर धन दे दिया तो कोई बात नहीं उठती, और अगर उसने इन्कार कर दिया तो कई समस्याएं उठ खड़ी होती हैं, जिन पर आपको गंभीरता से विचार करना चाहिए। ऐसे मौकों पर आमतौर से लोग दोस्ती ढीली कर देते हैं, जो उचित बात नहीं है।

आप यह सोचिए कि मित्र ने रुपया देने से क्यों इनकार किया है। इसके कई कारण हो सकते हैं। एक यह कि मित्र के पास उस समय उतना धन तैयार न हो। दूसरा यह कि वह आपसे मित्रता तो पसन्द करता है लेकिन धन का लेन देन नहीं पसन्द करता। तीसरा यह कि आपकी मित्रता में वह उतनी गहराई न समझता हो जितनी आप समझते हैं, इस कारण वह धन लौटने पर पूरा भरोसा न करता हो।

इन बातों में से एक बात भी सही है तो वह आपको धन देने से इन्कार कर देगा। इस पर आपको जरा भी बुरा नहीं मानना चाहिए। और न धन न दे सकने के कारण मित्र को मित्रता की श्रेणी से हटा देना चाहिए। ऐसे मित्रों को भी मित्र मानने में क्या हर्ज है जो आपसे धन का लेन देन तो नहीं पसन्द करते, लेकिन आपके पक्के शुभचिंतक और भलाई चाहने वाले हैं। दूसरे यह कि यदि वे आपके अन्दर दोस्ती की गहराई नहीं समझते तो दोस्ती की गहराई लाने का प्रयत्न बराबर करते रहिए। ताकि आज नहीं तो कल वे आप पर पूरा भरोसा करने लगें। धन न दे सकने के कारण अपने मित्रों को हरगिज मत छोड़िए।

जो व्यक्ति किसी भी मसले में आपका कुछ भी हित चाहें, उसकी

भी कद्र कीजिए। और उसकी भी हमेशा इज्जत कीजिए जो हित तो आपका कुछ नहीं करता परन्तु आपका अहित भी बिलकुल नहीं चाहता।

हम अपने मित्रों से प्रेम स्नेह तो बहुत करते हैं और उनके लिए सैकड़ों हजारों रुपए कुर्बान करने को भी तैयार रहते हैं परन्तु जब मित्र हमसे मांगे हुए हमारे फाउन्टेनपेन का चार आने का निब तोड़ देता है या ऐसा ही कोई छोटा नुकसान कर देता है तब हम अपने मित्र के प्रति बहुत अशिष्ट हो जाते हैं और उससे मित्रता तोड़ने तक को तैयार हो जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है जब हम मित्र को मित्र मानते हैं तो उसके प्रति गुंजाइश भी हमें हर जगह रखनी चाहिए।

आपके मित्रों में बहुत से ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो आपके अच्छे मित्र और शुभचिंतक हैं, परन्तु आपके विरोधी से भी उनकी मित्रता है। ऐसे मित्रों को भी अच्छा मित्र मानिए। उनसे आपके यह लाभ भी होंगे, एक तो यह कि आपका विरोधी आपके उस मित्र की जानकारी में कोई ऐसा काम न कर पावेगा जिससे आपको हानि होती हो। दूसरे, विरोध के दौरान में कोई गलतफहमियाँ आप और आपके विरोधी के बीच नहीं बढ़ने पावेंगी। तीसरे आपकी अपने विरोधी से मित्र की मारफत कई मसलों में बात चीत भी होती रहेगी। विरोध में भी इसकी जरूरत पड़ती रहती है।

ऐसी हालतों में अपने मित्र को कभी भी यह प्रेरणा मत दीजिए कि वह आपके विरोधी से अपना ताल्लुक हटा ले। ऐसा करने से आपका मित्र यह समझने लगेगा कि आप उस पर अविश्वास करते हैं। और अविश्वास की बात आने पर आपके मित्र का रुझान आपकी ओर से कम हो जाएगा और धीरे-धीरे आपकी मित्रता ढीली हो जाएगी।

किसी बन्धन में मित्र को बांधने से मित्रता नहीं चलती है। हर मित्र स्वतंत्रता और भरोसे के साथ आपसे मित्रता चाहेगा।

कभी कभी आपके कामों में कोई अजनबी व्यक्ति मिल जाता है जो मौके पर बड़ा सहायक हो जाता है। ऐसे व्यक्ति का एहसान भी मत भूलिए और उसकी उदारता की कद्र जब भी मौका मिले कीजिए। यह हमारी पुरानी सभ्यता की परम्परा रही है कि हम किसी के यहाँ एक बार भी कुछ खा लें या कोई व्यक्ति एक बार भी जरा सा हमारे काम में सहयोग दे या कोई व्यक्ति हमारे आड़े वक्त पर जरा भी काम आये तो उसके एहसान को हमें कभी भी नहीं भुलाना चाहिए।

:: १० ::

सभा सोसाइटी में

इस प्रजातन्त्र के युग में सभा सोसाइटियों की, समाज सुधार के लिए बहुत बड़ी जरूरत है। इनका उसूल यह होता है कि कुछ समझदार लोग इकट्ठे होकर समाज की भलाई के लिए सोचें और उस उसूल को पूरा करने के लिए ऐसा तरीका बरतें, जिससे लोगों को फायदा पहुंचे। समाज सुधार के लिए कानून उतने फायदेमन्द नहीं होते जितनी यह सभा सोसाइटियां। बशर्ते कि यह सही ढंग से अपना काम करें।

जो सभा सोसाइटियां आम जनता के लिए एक नियम के उसूलों पर बनाई जाती हैं वे आमतौर पर अच्छी कही जा सकती हैं। जो किसी विशेष दल या जाति या श्रेणी के लाभ के लिए बनाई जाती हैं वह इस प्रजातंत्र के जमाने में लाभ के बजाए हानि ज्यादा पहुंचाती हैं। इसलिए हमें उन्हीं सभा सोसाइटियों को मान्यता देनी चाहिए जो जाति-पांति, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के उसूलों पर विश्वास न रखती हों।

जिस तरह हमारे देश में प्रजातांत्रिक सरकार बनी है उसमें सभापति, प्रधान मन्त्री और हर विभाग के मन्त्री होते हैं, और वे कानून बना कर जनता को कानूनों पर चलाते हैं। उसी प्रकार सामाजिक रूप में हमारी यह छोटी-छोटी सभा सोसाइटियों की इकाइयां भी बनती हैं इनमें भी सभापति, मन्त्री और हर काम के अलग-अलग कार्यकर्त्ता, पदाधिकारी चुने जाते हैं। सरकार का काम होता है कानून तोड़ने वालों को सजा दे। सभा सोसाइटियों का काम है कि जनता को ऐसी

शिक्षा दें, उन पर ऐसी सच्चरित्रता की छाप डालें कि वह कानून तोड़ना बुरा समझें। सरकार का काम है कि लोगों को शिक्षा दे। सभाओं का काम है कि शिक्षा लेने के लिए लोगों को प्रोत्साहन दें।

सभा के लोगों की मेहनत और कार्यशैली से समाज की वे बुराइयां दूर हो सकती हैं, जो कितने ही कानून बनाने से दूर नहीं हो सकतीं। लोगों के चरित्र निर्माण का काम इस समय देश के लिए सबसे बड़ा काम है, जिसे सभा—सोसाइटियां ही पूरी कर सकती हैं।

सभा संचालन में हम सब बहुत बार ऐसे तरीके बरतते हैं जिससे सभा सोसाइटियां अपने उसूल से दूर हो जाती हैं और आम लोगों को लाभ के बजाए उनसे हानि भी होने लगती है। इसलिए इन सभा सोसाइटियों में शामिल होने पर हमें कुछ खास बातों पर ध्यान देना चाहिए।

हमें इनमें शामिल होकर कभी भी दलबंदी नहीं करनी चाहिए। यदि उनमें कोई दलबन्दी हो तो सभी दलों को अपना मान कर चलना चाहिए। इससे दलबन्दी से होने वाली हानियों को हम रोक सकेंगे। जब सभाओं में दलबन्दी हो जाती है तो सभाएं अपने मुख्य उसूलों और कार्यों से दूर हो जाती हैं और आपसी लड़ाई का अखाड़ा बन जाती हैं। जब हम सभा सोसाइटी में शामिल होते हैं तब हमारा उद्देश्य यही होता है कि हम उसके जरिए समाज के लोगों की भलाई का कार्य करें। परन्तु जब हम यह देखें कि हमारा यह उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा है तो हमारा उस सभा से चुप चाप हट जाना ही बेहतर है।

सभाओं में हमें अनुशासन की कदर करनी चाहिए और खुद भी अनुशासन मानना चाहिए। हमें सभा के नियमों का पूरी तरह पालन करना चाहिए और उसके अधिकारियों के प्रति कभी भी अशिष्ट नहीं होना चाहिए, जब हम अनुशासन तोड़ेंगे तो हमारी देखा देखी दूसरे लोग भी अनुशासन तोड़ेंगे।

हमें सभाओं में निश्चित समय पर पहुंचना चाहिए। यदि हमारी कही हुई बात का दूसरे लोग समर्थन न करें तो हमें अपनी बात मनवाने की जिद् या क्रोध नहीं करना चाहिए। जनतंत्र का उसूल यही है कि हम ज्यादा लोगों की या बहुमत की बात पर विश्वास करें, और उस पर चलें। सभा में यदि आपकी मरजी के विरुद्ध कोई बात हो रही हो तो कभी भी क्रोध मत कीजिए। और अपनी बात को बहुत ही मीठे ढंग से कहिए।

यदि सभा सोसाइटी का कोई धन या वस्तु आपके सुपुर्द हो तो उसका हिसाब किताब बहुत शुद्ध ढंग से रखिए और उसकी कोई हानि न होने दीजिए।

सभा का कोई कार्य आपके सुपुर्द हो तो उसे ईमानदारी से वक्त पर पूरा कीजिए और अगर आप किसी काम को कर सकने में असमर्थ हों तो उस कार्य को अपने जिम्मे मत लीजिए।

सभा सोसाइटी में यदि किसी उसूल पर आपका लोगों से विरोध हो तो उसे व्यक्तिगत विरोध मत मानिए और उस खास उसूल के अलावा बाकी हर मामलों में लोगों से एकता रखिए।

यदि आप किसी सभा सोसाइटी के अध्यक्ष हों तो सभी सभासदों से एक सा व्यौहार कीजिए। किसी के प्रति कम ज्यादा या पक्षपात मत कीजिए। और ऐसा ढंग बरतिए कि आपके विरोधी भी आपके इस उसूल की तारीफ करें तभी आप सफल अध्यक्ष कहलाएंगे।

आप अपने को एक अच्छा व्यक्ति मान कर किसी सभा में शामिल होते हैं। कुछ दिन उस सभा में रहने के बाद अपने आप पर खुद विचार कीजिए कि जिन अच्छाइयों को लेकर आप उस सभा में शामिल हुए थे उनमें से आपकी कोई अच्छाई, बुराई में तो नहीं बदल गई है। अगर आपको अपनी निष्पक्ष जांच से यह मालूम हो कि आप में कोई बुराई आगई है तो इस बुराई को निकाल कर पहले की अच्छाई लाने

का प्रयत्न कीजिए। यदि वह अच्छाई आप नहीं लौटा सकते हैं तो फिर वह सभा छोड़ दीजिए। क्योंकि अगर किसी कार्य से हमारे अन्दर की अच्छाइयां घटने लगें तो हमें वह काम हरगिज नहीं करना चाहिए।

दूसरी तरफ अगर आप महसूस करें कि उस सभा में रहने से आपके अच्छे मित्रों की संख्या बढ़ रही है और आप में वह अच्छाइयां भी आ रही हैं जो पहले आप में नहीं थीं तो उस सभा से अपना सम्पर्क और ज्यादा गहरा बनाइए।

जिन सभाओं में आप शामिल हों उनके अच्छे उसूलों को पूरा करने में अपना ध्यान लगाइए, न कि उसके पद को प्राप्त करने में अपना व सभा दोनों का समय नष्ट कीजिए। जब आप उसके उसूलों की पूर्ति में लग जाएंगे तो पद देर सबेर खुद ब खुद आपके पीछे भागने लगेगा। आपको पद के लिए दौड़ धूप नहीं करनी पड़ेगी।

ऐसी सभाओं में अगर कोई दूसरे लोग गलत काम करें तो उसे प्रमाण मानकर आप खुद कोई गलत काम मत कीजिए। आप ऐसे ढंग रखिए जिससे लोग आपके अच्छे कामों की मिसालें देने लगें। यह याद रखिए कि जिसके अच्छे काम को दूसरे लोग अच्छा कहें उसी का काम अच्छा है। अपने आप ही द्वारा अच्छा कहा गया काम अच्छा नहीं माना जाता।

यदि आप किसी सभा सोसाइटी या किसी दल का चुनाव लड़ते हैं तो किसी अपने वोटर पर कोई दबाव न डालिए अपनी बात पूरी तरह से कह दीजिए और उसे अपनी इच्छा पर छोड़ दीजिए। चुनाव प्रचार में जो आपके सहायक न हों उन्हें बुरा मत कहिए और अपने विरोधी प्रत्याशी की भी व्यक्तिगत बुराई मत कीजिए। प्रजातंत्र में चुनाव अपनी अच्छाइयों के भरोसे पर लड़े जाते हैं न कि दूसरों की बुराइयों के आधार पर। यदि आप हार जाते हैं तो अपने विरोधी जीतने वाले प्रत्याशी को बधाई दीजिए और चुनाव खत्म होते ही

सभी मतभेदों को भुला दीजिए। अपनी जीत पर भी अपने विरोधी के प्रति उदारता दिखाइए और कटुता को खत्म कर दीजिए। जो लोग चुनाव की खिलाफत को चुनाव के बाद खत्म नहीं कर देते वे अपने क्षेत्र की एकता के प्रति अन्याय करते हैं।

प्रजातंत्र में चुनावों की बहुत बड़ी अहमियत है। इन्हीं चुनावों के जरिए प्रजातंत्र राज्य कायम होता है। देश में स्वराज्य के बाद, चुनावों के जरिए ही हमारी सरकार बनती हैं। परन्तु चुनाव के तरीकों को हम लोगों ने बहुत सी जगह अपवित्र कर दिया है। वोट लेने के लालच में हम जनता में आपसी मतभेद, कटुता फैलाकर और बेजा दबाव डालकर वोट प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि मुहल्ले-मुहल्ले, गांव-गांव लोगों में चुनाव की कटुता जीवन भर के लिए पैदा हो गई।

हम जनता में इसलिए जाते हैं कि हम चुनावों को जीत कर जनता की भलाई करें। चुनाव में हम जीते या हारे यह एक अलग बात है। लेकिन कई जगह जनता को आपस में हमने खूब अच्छी तरह लड़वा कर उनमें आपसी शत्रुता जरूर पैदा करा दी।

प्रजातंत्र देशों के चुनावों के तरीके तो हमें ऐसे रखने चाहिए कि हम प्रत्याशी जनता में अपने उसूलों और कार्यक्रमों का बखान खूब अच्छी तरह कर दें और फिर जनता को खुद ही निर्णय करने दें कि वह किस प्रत्याशी को पसन्द करके उन्हें वोट देती है। चुनावों में हमारे विरुद्ध राय रखने वालों के प्रति क्यों हम द्वेष मानें। क्यों हम ऐसे हालात पैदा करें जिससे हमारे समर्थक हमारे विरोधी वोटरों से झगड़ा करके क्षेत्र में अशान्ति पैदा करें।

यह हम चुनाव लड़ने वालों के लिए एक सच्चरित्रता की बात होगी जब हम अपने देश के लोगों में सच्चरित्रता कायम रखने के लिए चुनावों में जहां अपना या अपने दल का स्वस्थ्य और शान्तिमय प्रचार करेंगे, वहां हम यह भी ख्याल रक्खेंगे कि हमारे कोई भी समर्थक किन्हीं भी

व्यक्तियों के बीच कटुता न पैदा करें। अगर हम जनता में बिना कटुता फैलाए चुनाव लड़ें तो यह हमारी सब से बड़ी जीत होगी।

मुख्य बात एक है कि राजनैतिक विरोध होते हुए भी हम किसी से आपसी मनमुटाव न पैदा करें।

सभा सोसाइटी या जहां भी लोगों से मिलिए तो बराबर के स्तर पर मिलिए और वही स्तर बराबर कायम रखिए तभी लोग आपको मान देंगे।

अकसर सभा सोसाइटियों के जरिए हम दूसरों को कुछ अच्छे उसूलों का पालन करने की शिक्षा देते हैं। शिक्षा देने से पहले हमें यह जरूर अपने मन में सोच लेना चाहिए कि हम खुद उन अच्छे उसूलों पर चलते हैं या नहीं। अगर हम उन पर नहीं चलते हैं तो हमारी उस शिक्षा का जरा भी असर दूसरों पर नहीं होगा। इसलिए हमें उन्हीं अच्छे उसूलों की शिक्षा देने का हक है जिनका हम खुद पालन करते हैं।

:: ११ ::

शिक्षा

शिक्षा प्राप्त करने के दिनों में हमारे लड़के पढ़ाई की तरफ ध्यान न देकर दूसरी बातों में ज्यादा उलझ जाते हैं। जिससे उनकी पढ़ाई पर बहुत बुरा असर पड़ता है। एक तो इसी कारण बहुत से लड़के पढ़ाई में फेल हो जाते हैं और जो फेल नहीं होते वे नासमझ शिक्षित होकर रह जाते हैं।

मां-बाप लड़कों को स्कूलों में भेज कर उम्मीद करते हैं कि उनका लड़का वहां पढ़ लिख कर सच्चरित्र और गुणवान बनेगा और अपने माता पिता, समाज और देश का नाम उज्ज्वल करेगा। परन्तु आज होता है इसका उल्टा। आम तौर पर लड़के पढ़ाई, बुद्धि और सच्च-रित्रता में कमजोर होते जा रहे हैं।

इसका कारण यह है कि लड़के स्कूलों में पढ़ाई की मेहनत करने के बजाए वहां राजनैतिक दल और यूनियनें बनाकर राजनैतिक खेल खेलने लगते हैं। जो शिक्षा प्राप्त करने में जबरदस्त बाधा डालती हैं। नतीजा यह होता है कि मुश्किल से दस पांच प्रतिशत लड़के जो अपनी पढ़ाई के अलावा दूसरी बातों से दिलचस्पी नहीं रखते वे ही कामयाब विद्यार्थी के रूप में लाभ उठा पाते हैं। और बाकी लड़के जो पढ़ाई या शिक्षा में ध्यान नहीं देते स्कूलों से निकलने के बाद वे मामूली क्लर्की के लायक बाबू बन कर रह जाते हैं।

जो लड़के देहाती क्षेत्र से नगरों में पढ़ने आते हैं वे शिक्षा खत्म होने के बाद नगर में ही क्लर्की या नौकरी ढूंढने लगते हैं। यदि ये

देहाती लड़के देहात में जाकर वहां अपनी खेती के तरीकों में परिवर्तन करके सुधार करें या वहां ही रहकर छोटे-छोटे उद्योग धन्धे चलाएं तो उनकी बेरोजगारी का मसला भी हल हो जाए और गांव में इन धन्धों से लोगों को रोजी भी मिलने लगे।

लड़कों को पढ़ने, या शारीरिक व्यायाम के खेल कूद के अलावा किसी भी दूसरी बातों में ध्यान नहीं देना चाहिए। तभी वे अपनी शिक्षा की तरफ ध्यान दे सकते हैं। बहुत से लड़के स्कूल, कालेज खुलने से कई महीने तक पढ़ाई की तरफ बिलकुल ध्यान नहीं देते और जब इम्तहान होने में महीने दो महीने रह जाते हैं तब वे पढ़ने जैसी बातें करते हैं। वे यह नहीं सोचते कि क्या वे एक दो महीने में किसी जादू के बल पर शिक्षित हो जाएंगे। यदि उन्हें पढ़ाई से शौक है तो स्कूल खुलते ही मेहनत से पढ़ाई आरम्भ कर देनी चाहिए, और जब तक सालाना इम्तहान न हो जाए बराबर मेहनत और ध्यान से पढ़ाई जारी रखनी चाहिए। शौकीन पढ़ने वाले लड़के तो छुट्टियों में भी मेहनत से पढ़ाई जारी रखते हैं।

दूसरी बात मास्टरों के प्रति अदब कायदे की है। यदि लड़के अपने मास्टरों की इज्जत नहीं करेंगे, उनके आदेशों पर नहीं चलेंगे तो मास्टर को भी पढ़ाने में दिलचस्पी नहीं होती है। मामूली बात है, जो व्यक्ति अपने मास्टर के हुक्म पर चलेगा, मास्टर की इज्जत करेगा, मास्टर ऐसे ही लड़कों की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देंगे। इसलिए पढ़ने वाले लड़कों का कर्तव्य है कि अपने मास्टरों के लिए पूरी तरह सम्मान और विश्वास रख कर पूरी मेहनत से पढ़ें तो कोई वजह नहीं कि लड़के अच्छी शिक्षा न पा सकें।

लड़कों के आचरण की बात भी बड़ी अहमियत की है। आज कल के कुछ लड़कों की आदत हो गई है कि वे लड़कियों के प्रति बड़े अशिष्ट होते जा रहे हैं। लड़कियों से छेड़छाड़ करना, उनका पीछा करना,

उनको देख कर गाना गाने लगना यह एक बहुत बड़े दुष्चरित्रता की बात है। समाज के दूसरे सभी लोग लड़कों की इन आदतों से बेहद परेशान हैं और लोगों के मन में इस तरह के लड़कों के प्रति घृणा सी हो गई है। लड़कों को यह सोचना चाहिए, यदि उनकी बहनों के साथ कोई ऐसा व्यौहार करे तो उन्हें कितना बुरा लगेगा।

यही बात ट्रेनिंग लेने वाले लड़कों के लिए भी है। मान लीजिए आप सैनिक शिक्षा की ट्रेनिंग ले रहे हैं। इस शिक्षा का प्रथम उद्देश्य है अनुशासन या डिसिप्लिन। अगर आप अनुशासन मानने में जरा भी ढील ढाल करते हैं तो आप सैनिक शिक्षा के बिलकुल अयोग्य हैं। अपने शिक्षा देने वाले इंसट्रक्टरों की आज्ञा मानना उनकी इज्जत करना शिक्षा के प्रमुख अंग हैं। सैनिक राष्ट्र का सेवक होता है। राइफल जिसके रखने का अधिकार देश के बड़े से बड़े असैनिक व्यक्ति को भी नहीं होता, एक सैनिक पर भरोसा करके उसे दी जाती है ताकि मौका पड़ने पर उससे राष्ट्र के दुशमनों को मार गिराए। इतना बड़ा भरोसा और विश्वास एक सैनिक का किया जाता है। सैनिकों का कर्तव्य होता है कि वह अपने अच्छे चरित्र और अनुशासन से राष्ट्र के प्रति वफादारी रहें और अपने अफसर को भरोसे और विश्वास का सबूत दें।

:: १२ ::

शिष्टाचार

यदि हम अपने से सम्बन्धित या गैर सम्बन्धित लोगों से शिष्टाचार नहीं रखते, तो दूसरे लोग भी हमारे साथ शिष्टाचार नहीं रक्खेंगे। जिससे हमारे जीवन की सरसता खत्म हो जाएगी और हमारी गिनती सभ्य लोगों में नहीं रह जाएगी। इसलिए हर व्यक्ति से हमें शिष्टाचार बरतना चाहिए।

यदि आपका कोई विरोधी आपके घर आता है तो कोई भी विरोध या व्यग की बात उसके साथ मत कीजिए। उसे इज्जत से बिठाइये, उसकी खातिर कीजिए। और उससे प्रेम पूर्वक बात चीत कीजिए। उसके इस बड़प्पन की कदर कीजिए कि विरोध रहते हुए भी वह आपके पास आया है।

आप किसी ऐसे स्थान पर बैठे है जहां आपकी बहुत बड़ी इज्जत हो रही है वहीं वह व्यक्ति भी आ जाते हैं, जिनकी आप हमेशा इज्जत करते हैं, तो वहाँ भी उनकी हमेशा की तरह इज्जत कीजिए। इज्जत पाने में इज्जत करना न भूल जाइए।

आप बीड़ी सिगरेट पीते हैं। भारतीय सभ्यता यही है कि यह सब आप अपने बड़ों या अफसरों के सामने न पिएं। अगर आप लेटे हैं या टांग पसारे बैठे हैं तो बड़ों या अफसरों के आने पर तुरन्त अदब से बैठ जाइए। अगर आप बैठे हैं और कोई बुजुर्ग या अफसर वहाँ आ जांए तो खड़े होकर उनका अभिवादन कीजिए और उनके जाने पर दरवाजे तक उनके साथ जाइए।

सेना में शिष्टाचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने से ऊंचे अफसर को सलूट करना एक ऐसी शिष्टता है जिस पर हर सैनिक को फख्र करना चाहिए। इसमें कोई छोटी या हीन भावना नहीं होती क्योंकि हर अफसर भी अपने से बड़े ओहदे के अफसर को सलूट करता है। बड़ों का आदर करना एक शिष्टता की निशानी है।

आपके उठने बैठने या चलने में आपसे किसी को धक्का लग जाए तो तुरन्त उससे क्षमा मांगनी चाहिए। कोई व्यक्ति आपके कहने से या बिना कहे आपका कोई कार्य कर दे तो उसे धन्यवाद दीजिए। आपके कार्यों के लिए कोई व्यक्ति प्रयत्नशील है तो उसे शिष्टता के लफ्जों से बार-बार कृतज्ञता प्रकट कीजिए। कोई वस्तु या धन प्राप्त करते वक्त देने वाले को धन्यवाद दीजिए।

किसी को भोजन का निमन्त्रण दीजिए तो उसके भोजन करने से पहले ही अपना भोजन मत कर लीजिए। या तो उनके साथ ही या उनके बाद अपना भोजन कीजिए।

आप या आपके बड़े लोग या अफसर किसी सवारी में साथ जाने को हों तो पहले उन बड़ों को सवारी में बैठ जाने दीजिए बाद में आप बैठिए।

जब कोई दो बड़े लोग आपस में बात चीत कर रहे हों तो बीच में आप मत बोलिये। उनकी बात खत्म होने पर और उनसे इजाजत लेकर ही बोलिये। जब दो व्यक्ति बात चीत कर रहे हों उनके आस पास खट पट या कोई आवाज मत होने दीजिए, जिससे उनकी बात चीत में बाधा पड़े।

जहाँ बड़े लोग या अफसर बैठे हों वहाँ शोर गुल मत कीजिये। यदि वहाँ बैठे किन्ही व्यक्ति से बात करना जरूरी हो तो, उनके पास जाकर धीरे से कान के पास अपनी बात कहनी चाहिए। अफसर या किन्हीं

बडे लोगों के पास जाइये तो तब तक खड़े रहिये जब तक वे बैठने को न कहें ।

किसी की कोई वस्तु आपने मंगनी में ली है तो उसका उपयोग करके तुरन्त ही उसे वापस कर दीजिए यदि मांगी हुई वस्तु खराब हो गई है तो उसे मरम्मत करा कर दीजिए । और खराब होने के लिये क्षमा मांगिए ।

अपने मित्रों, रिश्तेदारों या घर के प्रिय जनों के साथ हंसी मजाक या खेल कूद या दूसरी आपसी प्रतिद्वन्दिता में आप हार जांए तो खुश होइए कि आपने अपने प्रिय जनों को जीतने दिया है। आपकी हार और प्रियजनों की जीत होने से आपका बड़प्पन बढ़ता है।

आपका कोई विरोधी आपके सामने आत्मसमर्पण कर दे या आपके बड़प्पन को स्वीकार कर ले, तो उसके साथ बराबरी का व्यौहार कीजिये और उसके इस आत्मसमर्पण की कदर कीजिये, उसे कोई ऐसी बात न कहिये जिससे उसे अपने इस कार्य पर पछताना पड़े ।

किन्हीं बड़े लोगों के सामने जब आप बात चीत कर रहे हों तो अपने पैर हिलाना, हाथ हिलाना या जम्हाई लेना या जोर जोर से हंसना या जोर से बात करना शिष्टाचार के विरुद्ध है ।

किन्हीं बड़ों या अफसरों से कोई प्रार्थना मंजूर करानी हो तो अच्छे वातावरण (मूड) का इंतजार कीजिए अफसर का मूड अच्छा न हो तो उस समय उनसे कोई प्रार्थना नहीं करनी चाहिये । अफसरों ही नहीं जहाँ और जब भी हमें किसी से कोई काम लेना हो तो हमें उस व्यक्ति के मूड का जरूर ख्याल रखना चाहिये । अच्छे मूड के समय कही हुई बात का असर हमेशा अच्छा पड़ता है, जबकि कोई व्यक्ति परेशान, उलझन या क्रोध में है, वह हमारी बात की उपेक्षा कर सकता है ।

हम किसी से कोई बात चीत कर रहे हैं यदि हमें उस समय खांसी, छींक या जम्हाई आ जाए तो हमें मुंह घुमा कर या मुंह में कपड़ा लगाकर इसे पूरा कर लेना चाहिये। किसी के मुंह के सामने खांस या छींक देना एक बड़ी अशिष्ट बात है।

आप किन्हीं दूसरों के पास बैठे हैं, वहाँ से जब उठना हो तो वहाँ बैठे हुये लोगों से इजाजत लेकर उठना चाहिये।

कोई व्यक्ति आपसे कोई चीज मांगता है आप देना चाहते हैं या नहीं देना चाहते हैं यह बात स्पष्ट रूप से मांगने वाले को बता दें। उसे धोखे में नहीं रखना चाहिये।

यदि आपसे कोई व्यक्ति किसी काम के लिये कहता है, और वह काम आप करना चाहते हैं, तो बिना बार बार तकाजा किये हुये उसके काम को पूरा कर दीजिये। यदि वह काम आपसे नहीं हो सकता है, तो उसे स्पष्ट बता दीजिये कि वह काम आप नहीं कर सकेंगे।

किसी से मिलने, उसके घर जाइए तो उसकी कोई भी चीज बिना उसकी इजाजत लिये मत छुइये और न उठाइये। यदि कोई व्यक्ति आपसे कोई बात छिपाना चाहता है तो उस बात को घुमा फिरा कर जानने की कोशिश मत कीजिये। जहां आपकी मौजूदगी से दूसरों को जरा भी असुविधा हो रही हो वहाँ से तुरन्त चल दीजिए।

रुपया देने में शिष्टाचार का ध्यान रखिये, यदि आपने किसी को रुपया किसी विशेष तारीख को देने का वादा किया है तो उस तारीख तक जरूर अदा कर दीजिये। अगर किसी कारण से उस तारीख को आप भुगतान नहीं कर सकते हैं तो निश्चित समय के पहले ही रुपया पाने वाले को सूचित कर दीजिए कि अमुक तारीख के बजाए अमुक तारीख को आप भुगतान करेंगे।

आपके दरवाजे चार भले आदमी आते हैं वे जो काम आपसे कहते हैं, अव्वल तो उसे करना ही चाहिये, यदि आप नहीं कर सकते हैं तो

भी उनसे शिष्टता पूर्वक बहुत नर्मी से मना कीजिए। ताकि वे लौटकर जांए तो आपके बारे में अपने बुरे ख्यालात न बनावें।

आपके हाथ में किसी दूसरे व्यक्ति की चिट्ठी पड़ जाए तो उसे खोल कर पढ़ने का प्रयत्न मत कीजिए, बल्कि खुली चिट्ठी भी दूसरों की नहीं पढ़नी चाहिये।

किसी स्थान पर कोई वस्तु बंट या बिक रही है या आप टिकट खरीद रहे हैं। और वहाँ पर कई लोग भीड़ भाड़ किये हैं तो आपका फर्ज है कि तुरन्त खुद भी लाइन में हो जाइये और दूसरों को भी लाइन से ही आने को प्रोत्साहित कीजिये। अगर लाइन लगी हो तो खुद कभी यह कोशिश मत कीजिये कि आप लाइन से हट कर वहाँ अपनी खरीद पहले कर लें।

किसी शिष्टाचार के विरुद्ध आचरण करने पर यदि आपका कोई शुभचिंतक आपको टोक दे तो उसका सम्मान कीजिये और उस टोकने को बुरा मत मानिये। क्योंकि आपको टोकने वाला आपका शुभचिंतक ही होगा।

कोई बड़े बुजुर्ग या अफसर इत्तिफाक से हमारे तरीकों के खिलाफ कोई कार्य कर बैठें तो आपको उनकी हंसी नहीं उड़ानी चाहिये।

कोई बुजुर्ग या अफसर हमारे यहां आवें तो उनकी खातिर के लिये दूसरों को या नौकरों को नहीं ढूंढ़ना चाहिये, बल्कि अपने हाथों उनकी खातिर कीजिये।

लिफाफा, टिकट वगैरह थूक लगाकर नहीं चिपकाना चाहिये, और न नोट या किताब के पन्ने उलटने के लिये थूक का उपयोग करना चाहिये।

खाना खाते वक्त या उससे पहले किसी को अशुभ समाचार नहीं सुनाना चाहिये, भोजन के बाद ही ऐसी खबरें देनी चाहिये।

सभ्य समाज में बैठे होने पर डकारना, खखारना, नाक कान में उंगली या लकड़ी डालना, जम्हाई या अंगड़ाई लेना, उंगलियां चटकाना आदि बातें नहीं करनी चाहिएं। धोती कुरता नेकर, पतलून आदि के अन्दर हाथ डाल कर सब के सामने खुजलाने लगना, शिष्टाचार के विरुद्ध है। जब ऐसी जरूरत पड़ जाए तो एकान्त में जाना चाहिये।

किसी लूले, लंगड़े, भिखमंगे या तुतला कर बोलने वाले की नकल करके उसे चिढ़ाना नहीं चाहिये।

कांच, केले के छिकले, कांटे वगैरह कभी भी रास्ते में या ऐसे स्थान पर न डालो जहाँ से यह सब वस्तुएं लोगों को आहत कर सकें।

किसी के घर अपनी इच्छा से जाइए। जब लौटना हो तो उस घर के प्रमुख व्यक्ति से इजाजत लेकर ही लौटना चाहिये।

कोई व्यक्ति आपके बहुत से काम कर देता है परन्तु वह आपके कोई एक दो काम, किसी समय, किसी कारण से नहीं कर पाता है तो बाकी किए हुए कामों के एहसानों को मत भुला दीजिये।

किसी का पत्र आवे तो उसका उत्तर तुरन्त दीजिए।

:: १३ ::

बुज़ुर्गों की इज्जत

उस वक्त हमारे चरित्र पर बहुत बड़ा धब्बा लगता है जब हम अपने बुजुर्गों, महापुरुषों और दूसरों के महापुरुषों की इज्जत नहीं करते। किसी भी देश के वे ही लोग महापुरुष कहलाते हैं जो अपने देश या समाज के हित के लिए बड़े बड़े कार्य करते हैं। और हमें ऐसे व्यक्तियों की हमेशा इज्जत करनी चाहिए। हमें अपने बुजुर्गों की भी इज्जत का ध्यान होना चाहिए।

हममें से कुछ लोग दूसरों के बुजुर्गों की कभी कभी उचित इज्जत नहीं करते। हमारी यह आदत हमारे लिए ही अच्छी नहीं है। जब हम दूसरों के महापुरुषों की इज्जत नहीं करेंगे तो दूसरे लोग हमारे महापुरुषों की इज्जत क्यों करेंगे। इसलिए सभी महापुरुषों की इज्जत हम सब को करनी चाहिए।

यदि हमारे देश या नगर में कोई ऐसे बड़े व्यक्ति अतिथि रूप में आवें जिनसे हमारे विचार नहीं मिलते हैं तो भी हमारा शिष्टाचार कहता है कि हम उनकी उचित इज्जत करें। मेहमान की इज्जत करना हम भारतवासियों की हमेशा की परम्परा रही है उस परम्परा को हमें कभी भी नहीं तोड़ना चाहिए।

अगर हमें कभी ऐसा मौका मिले जब हम दूसरे धर्म के बुजुर्गों से मिलें या उनकी संगत में शामिल हों तो हमें उनके प्रति समुचित आदर का भाव रखना चाहिए, ताकि वे हमें असभ्य न समझें।

हमें अपने देश के महापुरुषों के प्रति भी बहुत सभ्य रहने की जरूरत

है। कहीं कहीं यह बात देखने में आती है जब हम लापरवाही की वजह से या हंसी मजाक में किन्हीं महापुरुषों के लिए असभ्यता के लफ्ज इस्तेमाल करते हैं या उनके लिए आदर सूचक भाव नहीं दिखाते। यदि किन्हीं विचारों पर मतभेद भी हो तो भी यह बात अच्छी नहीं है। उस राष्ट्र के लोग कभी भी चरित्रवान नहीं कहे जा सकते जो महापुरुषों के लिए अपने मन में उचित इज्जत नहीं रखते।

बड़े लोगों की हमेशा इज्जत कीजिए। उनकी कही हुई बातों का मजाक मत उड़ाइए। उनकी जो बात समझ में न आए उस पर गंभीरता पूर्वक खूब सोच विचार कीजिए, उस बात की तह में पहुंचने का प्रयत्न कीजिए।

आज कल यह भी एक आम बात हो गई है कि कुछ लड़के अपने मां बाप की परिवरिश न करके उनकी बेइज्जती करते हैं। लड़के जब बड़े हो जाते हैं और कमाने खाने लगते हैं तो उनमें से बहुत से अपने मां बाप से बात-बात पर लड़ाई झगड़ा करने लगते हैं। मां बाप उस वक्त तक बूढ़े हो जाते हैं और कमाई करने लायक नहीं रहते। इसलिए बेटे उन मां बाप की हर बात में गलती निकालते हैं और उनसे इतना ज्यादा दुर्व्योहार करते हैं कि अधिकतर उनका एक साथ रहना और उनकी परवरिश होना मुशकिल हो जाता है। तब कोई बेटे अपने बाप से अलग हो जाते हैं और कोई उन्हें खुद अलग कर देते हैं।

लोगों के समझाने पर लड़के मां बाप की इतनी शिकायतें करते हैं मानों दुनियाँ के सारे दोष उनके मां बाप में आकर भर गए हैं। इन लड़कों से अगर यह पूछा जाए कि—जब तुम्हारे बाप अपनी कमाई से तुम्हारी परवरिश करते थे तब तुमने अपने बचपन से लेकर अपनी कमाई कर सकने की उम्र आने तक, अपने बाप की कमाई खाई है और जब तुम अपने मां बाप की कमाई खाते थे तब तुम अपने मां बाप के हुक्म के खिलाफ बहुत से काम किया करते थे, और हजारों बार उनका

कहना नहीं मानते थे, उन्हें परेशान करते थे, उन्हें दुख पहुंचाते थे। तब तुम्हारे मां बाप ने तुम्हें अपने घर से नहीं निकाल दिया था। जिस तरह तुम आज उनके बूढ़े होने पर उन्हें अपने से अलग कर रहे हो यदि वे हुक्म उदूली के अपराध में उस वक्त तुम्हें अपने से अलग कर देते तो शायद तुम दुनियां में जिन्दा भी न रहते।

जिस तरह बीस पचीस साल तक तुम्हारे मां बाप तुम्हारे छोटे बड़े सभी कसूर माफ करते रहे आज उतने वर्ष तक भी तुम उनकी गलतियों को बरदाश्त नहीं कर सकते। जिस तरह वे तुम्हारी सही गलत सभी जिद्दें पूरी करते थे। उस तरह उनके बुढ़ापे की जरूरतें पूरी नहीं कर सकते। जिस तरह वे तुम्हारे सुख में सुखी और दुख में दुखी होते थे उस तरह तुम उनकी सुख सुविधा का ख्याल नहीं रख सकते। इसका क्या जवाब है, तुम्हारे पास।

तुम कहोगे, उनमें यह बुराइयां आ गई हैं। तुम कहोगे वे सठिया गए हैं। तुम कहोगे वे इस जमाने से बहुत पीछे की बातें करते हैं। यह सब कसूर तो उनके हुए। परन्तु जब तुम्हारे कुसूरों की सजा उन्होंने तुम्हें कभी भी नहीं दी। तब तुम अपने मां बाप के कुसूरों की सजा उन्हें कष्ट पहुंचा कर देना चाहते हो। इससे बड़ा तुम्हारा कुसूर और क्या हो सकता है।

उ के विचार जैसे हैं बने रहने दीजिए। उनके विचारों को बदलने के झंझट में आप न पड़िए। आप अपनी जिम्मेदारी निभाइए। हर तरह की तकलीफ उठा कर भी आपकी जिम्मेदारी है कि अपनी हैसियत के मुताबिक उन्हें ऐसी सहूलियत दीजिए कि वे रहने का स्थान, रोटी, कपड़ा, दवा दारू, और इज्जत पाने में वे और किसी के मोहताज न रहें। और यदि आपके जीवित रहते हुए वे और किसी के मोहताज होते हैं तो शर्म आनी चाहिए आपको—इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता।

:: १४ ::

मेहनत

मेहनती आदमी की सब इज्जत करते हैं। मेहनत से ही मनुष्य अपने उसूलों में कामयाब होता है। जो लोग मेहनत से कतराते हैं या शर्म करते हैं वे कभी किसी काम में कामयाब नहीं होते, और न कोई समझदार आदमी उनकी इज्जत करता है। इस लिए हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है कि वह अपनी तरक्की के लिए जी जान से मेहनत करे।

हमारे देश में थोड़ा सा पढ़ लिख लेने के बाद बहुत से लोगों में मेहनत करने की भावना खत्म हो जाती है। बल्कि उनका यह ख्याल हो जाता है कि वे दूसरों से मेहनत लें और खुद सिर्फ हुक्म दें। हमारे देश के अधिकांश नवयुवक दसवां पास करने के बाद मेहनत से बचने और हुक्म देने की नौकरी ढूंढने लगते हैं। यदि ये ही नवयुवक बुद्धि और मेहनत का मिला जुला काम करने पर उतर आएं तो देश में कोई व्यक्ति बेरोजगार न रहे।

हमारे देश में विदेशों से बहुत से विशेषज्ञ हमारे बड़े-बड़े कारखानों में काम करने आते हैं। वे बड़ी-बड़ी तनख्वाहों के लोग होते हैं। उनकी मेहनत देखते बनती है। वे फैक्ट्रियों में आठ घन्टे रोज भूत की तरह जुट कर काम करते हैं और कोई भी मोटे से मोटा काम अपने हाथ से करने में जरा भी नहीं हिचकते।

मेहनती आदमी को यदि किसी की सहायता की जरूरत होती है

तो आमतौर पर लोग उसकी सहायता को तयार हो जाते हैं। जब कि आलसी व्यक्ति की सहायता करना कोई भी पसन्द नहीं करता।

हमारे देश के लोगों में जैसा ऊपर भी कहा गया है एक बड़ी कमी है कि लोग अपने कार्य के घन्टों में मेहनत करने से बचते हैं। और हाथ पैर की मेहनत से शर्म करते हैं। एक सच्चा किस्सा है :—

एक हवल्दार सिपाहियों से एक कड़ी ऊपर चढ़वा रहा था। कड़ी भारी थी, सिपाहियों के पूरा जोर लगाने पर भी पूरी तरह नहीं चढ़ पा रही थी। इसी समय सादे कपड़ों में घोड़े पर सवार एक सज्जन उधर से निकले। उन्होंने कहा हवल्दार साहब जरा आप भी हाथ लगा दें तो कड़ी चढ़ जाए। हवल्दार ने कहा—जनाब मैं इनका अफसर हूं। सवार झट घोड़े से उतरा और आस्तीन समेट कर सिपाहियों के साथ कड़ी चढ़वाने में जुट गया। सवार पसीने पसीने हो गया, पर कड़ी चढ़ गई। सवार जब चलने लगा तो हवल्दार से बोला—हवल्दार साहब जब इस तरह का कोई काम पड़ जाया करे तो आप अपने करनैल साहब को बुला लिया करें, मैं इसी तरह से आकर काम में मदद कर दिया करूंगा।

हवल्दार ने जो सुना, तो उसके होश उड़ गए, डर से वह कांपने लगा। सवार के चले जाने पर उसने सोचा—पूरी फौज का करनैल तो सिपाहियों के साथ जुट कर काम करे और मैं जरा सा ओहदा पाकर काम करने में शरमाऊं। नतीजा यह हुआ कि उस हवल्दार ने फिर कभी काम करने में शर्म नहीं की।

हम अपने कार रोजगार में तो मेहनत करते हैं, क्योंकि वहां हमारे मेहनत न करने से हमारी प्रत्यक्ष हानि हो जाती है। परन्तु यदि हम किसी नौकरी में हैं तो वहां पर हम में से ज्यादा लोग मेहनत से बचते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि हमें अपनी नौकरी के बीच जितनी

तरक्की करनी चाहिए वह नहीं हो पाती। उस समय हम मेहनत के बजाए दूसरे जरियों से अपनी तरक्की की आशा करते हैं। मेहनती आदमी को किसी दूसरे का आसरा, अपनी तरक्की के लिए, लेने की जरूरत ही नहीं है। मेहतन में वह शक्ति है कि जो आदमी को तरक्की की ऊंची मंजिल पर पहुंचा कर ही छोड़ती है।

दुनियां के किसी भी बड़े आदमी का जीवन चरित्र पढ़ लीजिए, आपको मालूम हो जाएगा कि उनकी तरक्की का मूल कारण उनकी मेहनत थी जिसके करने में उन्होंने कभी भी शर्म नहीं की।

हेनरी फोर्ड जो दुनियां का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति हो गया है। जीवन के आरम्भ में एक बहुत ही मामूली आदमी था जो अपनी मेहनत के बल बूते पर ही अरबपति बना। वह बुढ़ापे में भी मोटे से मोटा काम अपने हाथ से करने में कभी भी शर्म नहीं करता था।

महात्मा गांधी ने तो अपने देश में मेहनत की पराकाष्टा ही कर दी थी। पाखाना साफ करना, झाड़ू बुहारू करना, चर्खा चलाना, बर्तन मांजना सभी काम वे अपने हाथों से करते थे। महात्मा गांधी ने कहा था—"सच्चा स्वराज्य तभी होगा, जब सब लोग अपने हाथ से अपना काम करने लगेंगे"।

और हम मेहनत का काम करने में जैसी लज्जा मानते हैं उतनी लज्जा शायद बुरे काम करने में नहीं मानते।

मेहनती आदमी से उसके अफसर हमेशा खुश रहते हैं और हर व्यक्ति मेहनती आदमी की इज्जत करता है। हम सबको मेहनत से जी नहीं चुराना चाहिए। जो काम आज करने का है उसे कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

हर तन्दुरुस्त आदमी को हर वक्त कुछ न कुछ काम करते ही रहना चाहिए। दफ्तर में हों या घर में जब भी हाथ में कोई काम न हो तो काम ढूंढ लीजिए, कोई न कोई काम जरूर मिल जाएगा।

लिखने पढ़ने के काम से थक जाइए तो हाथ पैर की मेहनत का काम करने लगिए। आप देखिएगा काम बदल लेने से थकान में आराम मिलता है। और जवान आदमी को काम करने की आदत बनी रहने से कभी भी थकान नहीं मालूम होती है।

अंगरेजी की मसल है—"खाली दिमाग में भूत अपना डेरा बना लेता है।" इसका मतलब है खाली रहने से दिमाग में इधर उधर के बेकार के उलझन वाले ख्यालात आने लगते हैं इसलिए दिमाग को हर वक्त काम में उलझाए रखना चाहिए।

एक दूसरी देशी मसल है—"खाली बनियां इस कोठरी का धान उस कोठरी में, उस कोठरी के धान इस कोठरी में।" या—"खाली बैठे, बेगार भली।" इन दोनों मिसालों से मतलब है—मनुष्य को बराबर काम करते रहना चाहिए, जब कोई काम न हो तो बेगार या दूसरों का काम करना बेहतर है। मेहनत को इतना महत्व दिया गया है।

काम से जी चुराना उसी तरह की चोरी है जैसे किसी का धन या किसी की कोई और चीज चुराना। जब आप किसी के लिए कहते हैं कि फलां व्यक्ति "कामचोर" है तो सुनने वाले उस कामचोर के लिए चोर की भावना मन में लाते हैं। इसलिए हमें कभी भी ऐसा तरीका नहीं रखना चाहिए कि लोग हमें कामचोर कह कर पुकारें।

सही काम का उसूल तो यह होना चाहिए कि चाहे हम नौकरी में हों या रोजगार में, हमारा जितना खर्च हो उस कीमत का काम हम पहले खुद करलें तभी हमें भोजन करने का हक है। अगर इस उसूल पर हम चलें तो एक अच्छे मेहनती की नजीर हम खुद बनावेंगे और हमारी नजीर से दूसरे लोग भी इस उसूल पर चलेंगे। आप ताज्जुब करेंगे हमारे देश के बहुत से गरीब देहाती लोग इस उसूल पर चलते हैं जबकि हम शहरी लोग इस उसूल से जानकारी ही नहीं रखते।

अमरीका में करोड़पति लोग अपने लड़कों को, मजदूरों का काम

करने को प्रोत्साहित करते हैं। ताकि उनके लड़के श्रम करने का अभ्यास सीखें। और मेहनत करके वे खुश होते हैं। मिलों, कारखानों में करोड़-पतियों के हजारों लड़के मजदूरों के साथ मिल कर कन्धे से कन्धा लगा कर काम करते हैं। इससे दो लाभ होते हैं एक तो लड़का छोटे लोगों के साथ घुल मिल जाता है, जिससे वह छोटों से नफरत के बजाए हर छोटों बड़ों से स्नेह करना सीखता है। दूसरा यह कि लड़के की मेहनत करने की आदत बनती है।

मेहनती व्यवित की तन्दुरुस्ती भी ज्यादा अच्छी रहती है। उसे कम से कम बीमारी होती है।

यही नहीं, योरप के सभी मुल्कों में अपना सामान हर व्यक्ति खुद उठाता है। चाहे बाजार हो या रेलवे स्टेशन कहीं आपको कुली या मजदूर सामान उठाने को नहीं मिलेंगे। हर व्यक्ति अपना अपना सामान खुद ही ले जाता है।

चेहरे पर मुस्कान लेकर मेहनत कीजिए।

:: १५ ::

जाति-धर्म, ऊंच-नीच भेद

हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष देश है। यहाँ सभी जाति और धर्म के लोग सदियों से प्रेम पूर्वक रहते आए हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी सभी जाति के भारतीय नागरिकों को हमारे देश में एक समान अधिकार हैं। हमारे देश की आबादी सबसे ज्यादा हिन्दुओं की है, बाकी जातियों के लोग अल्पमत में हैं। यह हमारे देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य होगा, अगर हम सभी धर्म के लोग एक दूसरे से द्वेष भाव रक्खेंगे। इस द्वेष भाव के कारण हमारे देश की एकता और राष्ट्रीयता को जबर-दस्त धक्का लगता है।

दुनियाँ के सभी देशों में भिन्न-भिन्न धर्मों के मानने वाले लोग शान्ति पूर्वक एक साथ मित्र रूप में रहते हैं। परन्तु अपने देश के कुछ लोगों में जब कब इस एकता की कमी दिखाई पड़ जाती है।

हमारे देश के बहुमत धर्म के लोगों में ही विभिन्न मान्यताओं के उपासक हैं। कोई भगवान राम का भक्त हैं, कोई कृष्ण जी की पूजा करता है, तो कोई शंकर जी का उपासक है। यही नहीं कोई समाधि को पूजता है, कोई वेद, कोई ग्रन्थ साहब को और कुछ संख्या उन लोगों की भी है जो भगवान के अस्तित्व में ही विश्वास नहीं करते। फिर भी इन सबके बीच किसी का कोई द्वेष भाव नहीं होता तो फिर हम दूसरे मत के मानने वालों से ही द्वेष भाव क्यों रक्खें।

योरप के देशों में जहाँ ईसाई धर्म के मानने वालों की संख्या ज्यादा है, वे भी दो दलों में बंटे हैं एक हैं "कैथोलिक" और दूसरे हैं

"प्रोटेस्टेंट्स"। दोनों के उपासना गृह याने गिरजाघर भी अलग-अलग होते हैं। कहीं-कहीं पति-पत्नी दोनों अलग-अलग मतावलम्बी होते हैं। जो एक दूसरे के धर्म में विश्वास नहीं रखते फिर भी वे एक साथ प्रेम-पूर्वक रहते हैं। उन देशों में ईसाइयों के अलावा हिन्दू, मुसलिम, बौद्ध वगैरह सभी धर्मों को मानने वाले लोग भी रहते हैं और सब एक दूसरे के साथ प्रेम व्यौहार करते हैं।

एशिया के पूर्वी देशों में जो भारत की ही तरह अविकसित देश हैं। यहां भी हिन्दू, मुसलिम, ईसाई, बौद्ध सभी लोग एक साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं। उनमें एक दूसरे के धर्म के प्रति कोई द्वैष नहीं होता। तो जब दुनियां के सब देशों में हम सब एक साथ रह सकते हैं तो हम अपने विशाल भारत देश में सबके साथ मिल जुल कर क्यों नहीं रह सकते। क्यों हम एक दूसरे के लिए अपने मन के भीतर एक अलगाव रखते हैं। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थों में लिखाहै कि "मनुष्यमात्र से प्रेम करो"।

भगवान राम जिन्हें हम हिन्दू, सृष्टि का रचयिता मानते हैं उन्होंने अवतार लेकर हर छोटों बड़ों को और हर जाति धर्म के लोगों को अपनाया था। भिल्लनी, शबरी क्या भगवान रामचन्द्र जी की जाति की थी जिसके जूठे बेर उन्होंने खाए थे। केवट दूसरी जाति का था जिसके लिए भगवान राम ने कहा था "तुम प्रिय मोहिं भरत सम भाई" हनुमान जी, सुग्रीव, विभीषण क्या भगवान रामचन्द्र जी की जाति के और उनके राज्य के निवासी थे। जिन्हें भगवान राम ने गले लगाकर अपने प्रेम से विभोर कर दिया था। भरत जी की माता केकयी एक विदेशी देश के विदेशी राजा की पुत्री थीं, जो राजा दशरथ की पत्नी थीं, जिनके पुत्रों को हम भगवान मानकर पूजते हैं।

जिन भगवान राम का चरित्र "रामायण" के रूप में हमारे देश के घर घर में इसलिए पढ़ा जाता है कि हम उनके जीवन से सबक लें, उनके आदर्शों पर चल कर मोक्ष प्राप्त करें। उन्हीं भगवान राम के

आदर्शों की अवहेलना करके हम जाति, धर्म, भेद मान कर मनुष्य मनुष्य में फर्क समझते हैं। यह हमारी कितनी संकीर्ण विचारधारा है।

भारतीय कवि सर इकबाल ने क्या खूब कहा है :—"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, हिन्दी हैं हम वतन है, हिन्दोस्तां हमारा"। जैसा ऊपर कहा जा चुका है भारत का हर नागरिक चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का है, भारतीय है। और एक भारतीय का दूसरे भारतीय के प्रति घृणा करना हमारी सभ्यता के विरुद्ध है।

जहाँ तक राष्ट्र प्रेम या राष्ट्र द्रोह की बात है। हमारे मन में हर राष्ट्र प्रेमी के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। परन्तु राष्ट्र-द्रोह की बात जब सामने आवे तब हमें व्यक्ति विशेष राष्ट्र-द्रोही के प्रति ही घृणा दर्शानी चाहिए न कि उस राष्ट्र-द्रोही की समूची जाति से। राष्ट्रद्रोह एक घृणित कार्य है जो सभी जाति के व्यक्तियों के लिए एक सा घृणित माना जाना चाहिए।

हम भारतीय हजारों वर्षों से मानव धर्म के पुजारी रहे हैं और हमारे भारत ने ही दुनियां को मानव धर्म का पाठ सिखाया है। और आज भी हमारा मानव धर्म ही दुनिया के रंग मंच पर हमारी प्रतिष्ठा बनाए हुए है। किसी जाति या धर्म के विरुद्ध भावना रखना हमारी पुरानी परम्परा व सभ्यता के विरुद्ध है। हमें यह न भूलना चाहिए कि हमारे देश का एक एक नागरिक देश का मालिक है और हम सब की जिम्मेदारी है कि देश की राष्ट्रीयता और एकता कायम रखने के लिए सभी जाति धर्म के लोगों के साथ समता का व्यौहार हो। तभी हमारा राष्ट्र दुनिया में गौरव प्राप्त कर सकेगा।

हमारा एक दूसरा तरीका जो हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता में बाधक बन रहा है वह है हमारी छुआ-छूत, ऊंच नीच और प्रांतीयता की भावना। यह सब भावनाएं जिन लोगों में भरी हैं वे लोग मानों आगे चलने के बजाय पीछे की ओर उल्टा लौट रहे हैं। दुनियाँ

आगे बढ़ रही है और हम इन भावनाओं से प्रेरित होकर पीछे लौट रहे हैं।

एक तरफ तो दुनियाँ के सभी लोगों को एक सूत्र में बांधने के प्रयत्न हो रहे हैं और दूसरी ओर इस अणु युग में हम अपने देश में ही ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, ऊंच, नीच के भेद भाव और प्रान्तीयता के भेद भाव का पोषण कर रहे हैं। कितना छोटा दृष्टिकोण हम अपना रहे हैं।

सैंकड़ों वर्षों की गुलामी की देन है यह छुआ छूत जाति, पांति और प्रांतीयता। और इन्हीं भेदों को पनपा कर हमारे चरित्र को विदेशियों ने नष्ट किया था तभी वे हमें गुलाम रख सके थे। जेल का कैदी कैद से छूटने पर जेल की वरदी जेल में ही छोड़ आता है परन्तु हम स्वतंत्र हो जाने पर भी यह छुआ छूत, भेद, भाव और ऊंच नीच की कैद की वरदी उतारने में शरमाते हैं।

आप ब्राह्मण हैं। आपसे एक दूसरे ब्राह्मण ने १००) कर्जा लिया और एक शूद्र ने भी १००) कर्जा लिया दोनों ही रुपया देने से इन्कार करते हैं तब आप दोनों के ही खिलाफ मुकदमा चलावेंगे। तब आप यह नहीं सोचेंगे कि आप शूद्र पर ही दावा करें और ब्राह्मण पर रुपया छोड़ दें।

आपका बेटा बीमार है आप डाक्टर से यह नहीं पूंछते कि वह किस जाति का है, आप तुरन्त डाक्टर को बुला लेंगे। डाक्टर भी मरीज से नहीं पूंछेगा कि वह किस जाति का है, वह तो तुरन्त इलाज करने लगेगा।

आप बड़े करोड़पति हैं, आपकी मोटर कहीं दूर जंगल में बिगड़ गई है। तब वहाँ आप अपनी मदद के लिए अपने करोड़पति साथी नहीं ढूंढते हैं, वहाँ आपको जो भी छोटा, बड़ा, ऊंच, नीच कहा जाने वाला

व्यक्ति मिल जाता है उसी से सहायता मांगते हैं और वही सहायता करता भी है।

एक शूद्र कहे जाने वाले व्यक्ति को जज का पद मिल जाता है। कोई भी सवर्ण कहलाने वाले सज्जन ने आज तक यह एतराज नहीं किया कि वे उस शूद्र जज से अपना मुकदमा नहीं करावेंगे।

एक मद्रासी का मकान किराए के लिए खाली है और बंगाली बाबू को मकान की सख्त जरूरत है तो बंगाली बाबू पता लगते ही मद्रासी बाबू का मकान किराए पर ले लेंगे। बंगाली बाबू जरा भी यह विचार न करेंगे कि मद्रासी बाबू बंगला भाषा नहीं जानते हैं। या वे बंगाली का ही मकान किराए पर ले सकते हैं। दूसरे प्रांत वालों का नहीं।

बंगाली बाबू को मछली चाहिए तो वह मछली ले लेगा, वह व मछली बेचने वाले की भाषा पूछेगा न उसकी जाति और न उसकी इज्जत या हैसियत।

इससे यह साबित होता है कि जहां हमारा मतलब होता है वहां हम छोटे, बड़े, छूत, अछूत, अपनी भाषा, दूसरी भाषा, अपना प्रान्त, दूसरा प्रान्त, किसी में कोई फर्क नहीं मानते। हम सबसे अपना काम बना लेते हैं। और जहाँ हमारा कोई मतलब नहीं होता, वहां हम बेमतलब इन सब भेद-भाव की बातें उठाकर अपने राष्ट्र की एकता को हानि पहुंचाने लगते हैं। यह है हमारा चरित्र।

भारत राष्ट्र हमारा है, हम सब उसके नागरिक हैं न हममें कोई छोटा है न बड़ा हम यह क्यों नहीं सोचते।

वास्तव में हम सभी लोगों को अपने धर्म का पक्का होना चाहिए और धर्म की हर अच्छाई का उपयोग करना चाहिए। अपनी अच्छी धार्मिक प्रवृत्तियों को राजनीतिक या सामाजिक बुराइयों में डुबो नहीं

देना चाहिए। मसलन हम में से बहुत से लोग मानते हैं कि मरने के बाद हमारी आत्मा दूसरा जन्म लेकर फिर दुनियां में मनुष्य रूप में आती है। पुर्नजन्म मानने वाला कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि जो आत्मा दोबारा जन्म लेती है वह फिर उसी जाति में ही जन्म लेगी, जिस जाति से उसकी मृत्यु हुई है बल्कि वह किसी भी जाति धर्म में जन्म ले सकती है। ऐसी हालत में हमारे प्रिय परिवार के जितने लोग मर चुके हैं उनकी आत्माएं हर जाति के लोगों में मौजूद हैं, पर हम उन्हें जानते नहीं हैं।

अगर हम किसी दूसरी जाति के लोगों से घृणा करते हैं और उनमें हमारे किन्हीं प्रियजनों की आत्माएं हुईं तो हमने अपने प्रिय जनों की आत्मा से ही घृणा की। एक तरफ हम अपने मृत प्रियजनों के नाम पर बड़ी बड़ी धर्मशालाएं, गुरुद्वारे, मन्दिर वगैरह बनवाएं और उनके नाम पर सैकड़ों लोगों को श्राद्ध खिलाएं दूसरी तरफ उनकी आत्माएं जिस शरीर में आएं उस से घृणा करें, यह कहां का न्याय है। यह तो अपने ही मृत बुजुर्गों के प्रति हमारी शत्रुता हुई। अगर हमें अपने मृत बुजुर्गों की आत्माओं के प्रति जरा भी प्रेम है तो हमें हर मनुष्य से यह समझ कर प्रेम करना चाहिए कि हो सकता है इसी मनुष्य में हमारे मृत प्रिय जन की आत्मा हो।

हमारे मुसलमान भाई भी दुनियाँ को एक खुदा की बनाई हुई मानते हैं, और यह भी मानते हैं कि हर इन्सान उसी एक खुदा का बन्दा है। तब फिर यह गुंजाइश कहां रह जाती है कि एक बन्दा दूसरे बन्दे से खिलाफत करे। एक भाई दूसरे भाइयों से प्रेम स्नेह न करे।

ईसाइयों के महात्मा ईसा तो प्रेम, दया और क्षमा, जो भगवान के प्रमुख गुण हैं उनके प्रत्यक्ष अवतार थे। उन्होंने अपने शत्रुओं पर भी प्रेम, दया और क्षमा की वर्षा की थी। उनकी निगाह में मनुष्य-मनुष्य में कोई फर्क नहीं था।

तब कहां गुंजाइश रहती है कि हम अपनी धार्मिक भावना को कलुषित करके मनुष्य-मनुष्य में फर्क समझें। हम सब भारतीयों के मजहबों में कहीं नहीं लिखा है कि यह दुनियां, यह सूरज, चन्द्रमा, तारे और मनुष्य अलग-अलग जाति के भगवानों ने बनाएं हैं। दर असल इन सब का बनाने वाला एक है जिसे कोई 'खुदा' कोई 'गाड' और कोई 'भगवान' कहता है।

हम इंसान ही अपने घर में ही अलग अलग नामों से पुकारे जाते हैं। कोई हमें पिता जी कहता है, कोई पापा, कोई चाचा, कोई ताऊ, कोई बाबूजी, कोई बड़े भइया, कोई छोटे भइया, और कोई हमारा नाम लेकर हमें पुकारता है। पर हम सब एक साथ मिलकर रहते हैं, एक दूसरे की मदद करते हैं, एक दूसरे से स्नेह करते हैं। जब घर में यह एकता की व्यवस्था हम चला लेते हैं तो मुहल्ला, नगर या देश में हम यह व्यवस्था क्यों नहीं चला सकते।

बात कुछ नहीं है—सिर्फ सोचने के तरीके बदलने की है। यदि हम अपने सोचने के तरीके में अपनी सही धार्मिक भावना को स्थान दें तो हमें सब मनुष्य एक से प्रिय दिखने लगेंगे।

इस बात की सत्यता हमें समझ लेनी चाहिए कि जितनी घृणा हम दूसरों के धर्मों से करेंगे, दूसरे लोग हमारे धर्म से उतनी ही घृणा करेंगे। घृणा करके किसी धर्म के प्रति आस्था नहीं बनाई जा सकती।

हम से विरोध रखने वाली किसी राष्ट्र की जनता, अपने राष्ट्र को कमजोर और दुनियाँ में बदनाम करने के लिए यदि अपने देश में कोई कुकृत्य करती है तो करे' उसमें उसी राष्ट्र का अहित होता है। उसकी देखा देखी हम भी वही काम करें जिसे हम बुरा कहते हैं तो हममें और उन बुरे लोगों में क्या फर्क रह जाता है। यह तो वही मूर्खता की मसल हुई कि "तुमने हमारी थाली में गोश्त खाया है, हम तुम्हारी थाली में मैला खाएंगे।"

:: १६ ::

कानून और नियम

कानून और नियम का पालन करना हर मनुष्य का नैतिक कर्तव्य है। कानून वे हैं जो सरकार द्वारा बनाए गए होते हैं और जिनको तोड़ने पर हमें अदालतों से सजा मिलती है। नियम वे हैं जो समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए हमारे समाज ने बनाए हैं, जिन पर चलने वालों को हम सच्चरित्र व्यक्ति कहते हैं।

यदि कोई व्यक्ति चोरी, डकैती, लूट, मार, लड़ाई, झगड़ा, मारपीट कत्ल आदि करता है तो वह कानून का अपराधी होता है और अपराधी कानून से सजा पाने का अधिकारी होता ही है, चाहे वह कानून के शिकंजे में फंसे या कानून को धोखा देकर उससे बचता रहे। मान-लीजिए कोई व्यक्ति आपकी कोई वस्तु चुरा लेता है लेकिन वह पकड़ा नहीं जाता तो भी वह कानून का अपराधी है। और अपराधी अपने अपराध की सजा भोगने का हकदार होता है।

दूसरे किस्म के वे लोग हैं जो सामाजिक नियमों को तोड़ते हैं, ऐसे लोग दुष्चरित्र कहे जाते हैं। चाहे वे धनवान, सफेदपोश या विद्वान कुछ भी क्यों न हों।

सामाजिक नियम हैं :—जैसे मनुष्य मनुष्य सब एक से हैं। न कोई छूत है न अछूत, और न कोई छोटा न बड़ा सभी से अच्छा व्यौहार, और सब की इज्जत होनी चाहिए। महिलाओं की सभी जगह इज्जत होनी चाहिए उनके प्रति कभी कहीं भी अशिष्टता नहीं होनी चाहिए। अपनी शक्ति का बेजा दबाव डाल कर न किसी की हानि करनी चाहिए

और न उससे बेजा लाभ उठाना चाहिए। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाना चाहिए। अपनी मेहनत के अलावा दूसरी अनैतिक कमाई से घृणा करनी चाहिए। राष्ट्र की किसी सम्पत्ति की किसी भी हालत में हानि नहीं पहुंचानी चाहिए। किसी की अमानत हजम नहीं कर लेनी चाहिए। वादा करके उसे पूरा करना चाहिए। किसी की गिरी पड़ी चीज के खुद मालिक नहीं बन जाना चाहिए। अपने राजनैतिक साधनों की पूर्ति के लिए किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए, नाहीं किसी की या राष्ट्र की कोई हानि करनी चाहिए वगैरह वगैरह।

इसके अलावा अपने राष्ट्र के प्रति वफादार रहना चाहिए। अपने राष्ट्र की आवश्यकता पर अपना तन, मन, धन कुर्बान करने के लिए तयार रहना चाहिए। समय का सदउपयोग करना चाहिए। इसी प्रकार सैकड़ों बातें और भी हैं जिनका पालन करके हम नियमों का पालन कर सकते हैं। यदि हम इन सब नियमों का पालन नहीं करते तो हम समाज के नियमों को तोड़ने के अपराधी होते हैं।

कानून तोड़ कर हम जो अपराध करते हैं उसकी सजा तो हमें कानून से मिल जाती है। परन्तु सामाजिक नियम तोड़ कर हम अपने समाज को भ्रष्ट करते हैं। जिससे हमारा चरित्र गिरता है। जिस राष्ट्र के लोगों का चरित्र गिरता है वह राष्ट्र कभी भी सभ्य राष्ट्र कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।

इसलिए कोई बात मुंह से निकालने से पहले या कोई काम करने से पहले हमें अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि हम कोई ऐसी बात तो नहीं करने जा रहे हैं जिससे हमारे द्वारा सामाजिक नियम टूट रहे हों, या हम पर दुष्चरित्रता का दोष आ रहा हो। बहुत बार, लापरवाही की वजह से या दूसरों की हानि की चिंता किए बगैर हम ऐसा काम कर डालते हैं, जिससे लोग हमें कानून या नियम मानने वाला व्यक्ति नहीं मानते। और अपने खिलाफ उस चरचा को सुन कर हम क्रोधित

भी हो जाते हैं। मतलब यह कि हम गलत काम भी करना चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि हमारे गलत कामों को कोई गलत भी न कहे।

यदि हमारे गलत कामों की लोग चरचा करें तो हमें चाहिए कि हम उन कामों में सुधार करें, और आयन्दा उन गलत कामों से बचने का प्रयत्न करें।

अगर हम कल तक कानून या नियम तोड़ते रहे हैं तो कोई हर्ज की बात नहीं है। अगर हम आज से यह निश्चय कर लें कि हम आयन्दा कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे कानून या सामाजिक नियम टूटते हों, तो हमारा यह काम सच्चरित्रता का होगा।

हम लोग परिहास या शौक के कारण कभी कभी जुआं खेलने लगते हैं और जब पकड़े जाते हैं तो बेइज्जत होते हैं। क्या हम ऐसे शौक से अपने आपको अलग नहीं रख सकते, जो हमारी इज्जत को बिगाड़े।

:: १७ ::

अनुशासन

डिसिप्लिन या अनुशासन एक ऐसी आदत है जो मनुष्य के स्तर को ऊंचा उठाती है, उसके चरित्र को बनाती है। और इसी से उस व्यक्ति की ही नहीं बल्कि उस राष्ट्र की भी अच्छाई-बुराई आंकी जाती है। दूसरे सभ्य देशों के लोग अनुशासन पसन्द होते हैं और इसी कारण वे सभ्य कहलाते हैं। परन्तु हमारे देश के बहुत से लोगों में अनुशासन की बहुत बड़ी कमी है जिसके कारण हमारा समाज दुनियां के दूसरे समाज से काफी पिछड़ गया है।

अनुशासन का मतलब है अपने देश और समाज के कानूनों और नियमों का पालन करना। अपने बड़ों और अपने अफसरों की आज्ञा मानना तथा समाज के सृष्टाचार निभाना।

जिस देश में अनुशासन विहीन लोग ज्यादा होते हैं वह देश कभी भी तरक्की नहीं कर सकता। इसलिए हम सब के लिए जरूरी है कि हम अनुशासन पर विश्वास रक्खें, उसकी कदर करें, और उस पर चलें। तभी हमारी जाति या हमारा राष्ट्र तरक्की कर सकता है।

बचपन से मृत्यु तक मनुष्य के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। जब बच्चा छोटा होता है तो उसे मां अपने अनुशासन में चलाती है। बड़े बच्चे को अपने बाप के अनुशासन में चलना होता है। शिक्षा लेने के लिए बच्चा जब स्कूल, कालेज जाता है तब वहां शिक्षक के अनुशासन में चलना जरूरी होता है। और बड़ा होने पर उसे

सरकारी कानून, समाज के नियम और अपने समाज के सृष्टाचार के अनुकूल चलना होता है।

यदि कोई व्यक्ति अनुशासन छोड़ देता है, तो उसे समाज में अच्छा व्यक्ति नहीं माना जाता। इसके विरुद्ध जो व्यक्ति हर स्थान, हर कार्य, और अपने रहन सहन में अनुशासन को महत्व देता है, तो उसके यश और तरक्की को कोई नहीं रोक सकता।

यदि कोई व्यक्ति स्कूल या किसी संस्था में किसी विद्या या हुनर की शिक्षा ले रहा है यदि वह अपने शिक्षक का अनुशासन नहीं मानता तो शिक्षक उससे प्रसन्न होकर कभी भी अच्छी शिक्षा नहीं देगा, यदि मातहत अपने अफसर का अनुशासन नहीं मानता तो वह उस नौकरी पर कभी भी न टिक सकेगा। और यदि टिक भी गया तो वह कभी भी तरक्की नहीं कर सकता।

क्या आप कभी पसन्द करेंगे कि आपका हुक्म या अनुशासन आपसे छोटे लोग याने आपके भाई, बेटे, बेटी, नौकर चाकर वगैरह न मानें। आप कहेंगे हरगिज नहीं। तब फिर आपको भी अपने बड़ों का हुक्म और उनका अनुशासन मानना होगा। तभी आप अपने से छोटों को अपने अनुशासन में रख सकते हैं।

सभी देशों की सैन्य बल की आधार शिला अनुशासन पर ही रक्खी जाती है। इसी अनुशासन को हासिल करने के लिए ही कवायद परेड वगैरह सिखाई जाती है। जिस देश के सैन्य बल में अनुशासन की कमी होती है उस देश के पास सेना होना न होना दोनों बराबर है। ऐसा देश अपनी स्वतंत्रता की रक्षा भी नहीं कर सकता है। इसलिए सेना में जितना महत्व अनुशासन को दिया जाता है उतना और किसी बात पर नहीं।

पूरी तरह से अनुशासित १०० सैनिकों की एक छोटी टोली, अनुशासन विहीन १००० दुश्मन के सैनिकों को मार गिरा सकती है।

इसकी जीती जागती मिसाल है :—सन् १९६३ में जब चीनियों ने हमारी भारत भूमि पर हमला किया तब हमारे भारतीय जवानों ने एक-एक चौकी पर जहाँ वे सिर्फ २५–३० को संख्या में थे उन्होंने कई-कई सौ दुश्मनों को मार गिराया था, और मरते दम तक वे दुश्मनों का सफाया करते रहे थे। कौन भारतीय हमारे इन सैनिकों के अनुशासन और वीरता पर मुग्ध न होगा ?

इसका कारण जैसा ऊपर कहा है अनुशासन और एकता का था। सैनिक अपने अफसर के हुक्म पर चलें, उनके हुक्म पर बिना जान की परवाह किए, अपने देश के लिए जूझ जांए तभी वे इस तरह के बड़े से बड़े काम करके देश के नाम को उज्ज्वल कर सकते हैं।

आपने देखा होगा जब परेड होती है या जब हमारे सैनिक सड़कों पर मार्च पास्ट करते हैं तब उन सबके कदम एक समय में ही एक साथ उठते हैं, एक साथ एक चाल से चलते हैं, एक हुक्म पर मुड़ते हैं और एक हुक्म पर तुरन्त ही थम जाते हैं। कितनी आन-बान शान का वह दृश्य होता है। उस वक्त जो उस मार्च को देखता है उसके मन में अपने इन अनुशासित सैनिकों के लिए प्रेम और विश्वास उमड़ पड़ता है। और यही अनुशासन सिखाने के लिए चाहे वह फौज का सैनिक है चाहे वह नागरिक सेना का सैनिक है महीनों शिक्षा दी जाती है। जिस देश की सेना में इस प्रकार का कठोर अनुशासन होता है वह देश अपने दुश्मन को मुकाबले में जरूर हरा सकता है।

इसलिए सैन्य बल के अलावा नागरिकों को भी अच्छे नागरिक बनने के लिए अनुशासन ही परम आवश्यक है। हम अनुशासन विहीन लोग जब कब आपसी लड़ाई झगड़ा, मारपीट, गाली गलौज, करते रहते हैं, और जब जिसकी चाहते हैं बेइज्जती भी कर देते हैं। पुरुष जाति की जननी महिलाओं के प्रति हम अभद्रता करने लगते हैं। इन सबके कारण कानून के शिकंजे में

फंस कर मुकदमा लड़ते हैं, धन बरबाद करते हैं और कारागार भी काटते हैं। यह है हमारा अनुशासन और सच्चरित्रता। जब हम खुद ही यह सब बुरे कार्य करते हैं तो हम यह कैसे आशा करें कि हमारे लड़के बच्चे बड़े होकर यह सब बुरे काम न करेंगे।

यह हमारे विचारों का छोटापन है अगर हम कानून और समाज के नियमों का पालन नहीं करते। हमारे देश के महापुरुषों ने कभी भी अनुशासन नहीं तोड़ा और हमेशा अनुशासन की कदर करते रहे हैं।

हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्र प्रसाद जी सन् १९२५ में कानपुर कांग्रेस के जलसे में पधारे। कार्यसमिति के पण्डाल के दरवाजे पर जब वे पहुंचे तब सेवा दल के वालेन्टियरों ने उन्हें पहचाना नहीं और बिना आज्ञा पत्र के अन्दर जाने से रोक दिया। राजेन्द्र बाबू बजाए इसके कि अपना परिचय देकर अन्दर चले जाते वे, दरवाजे पर खड़े रहे और जब उनका परिचय पत्र आ गया तभी वे पण्डाल में दाखिल हुए, उन्होंने रोकने वाले वालेन्टियर के इस अनुशासन की तारीफ भी की।

दूसरे महायुद्ध के दिनों में इंगलैंड में भोजन की वस्तुओं की कमी के कारण बहुत से खाद्य पदार्थों का राशन कर दिया गया। जो लोगों को सीमित तादाद में ही मिलता था। परन्तु वहां के लाखों लोग अपनी विशाल राष्ट्रीयता और सच्चरित्रता के कारण अपना मिलने वाला राशन जितना कानूनन मिल सकता था उससे भी कम लिया करते थे, और उस कमी के कारण कष्ट भी उठा लेते थे। जब कि भारत में हम लोग स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी राशन की वस्तुएं चोर बाजार में खरीदते और बेंचते हैं। यह फर्क है हममें और दूसरे चरित्रवान लोगों में।

बीस पचीस वर्ष पहले तक हमारे देश के लड़के स्कूलों में अपने शिक्षकों का अनुशासन बहुत कुछ मानते थे, और उनकी आज्ञा का पालन

खुशी से करते थे। जिसका नतीजा यह होता था कि विद्यार्थी लोग विद्या और बुद्धि से होशियार होकर स्कूल से निकलते थे। परन्तु आज के अधिकांश विद्यार्थी लिखने पढ़ने और अनुशासन मानने के बजाए स्कूलों में अनुशासन तोड़ने के संगठन बनाकर बिना अनुशासन सीखे ही, अनुशासन तोड़ने के कार्यों में लग जाते हैं। विश्वास न हो तो आज के मैट्रिक ही नहीं इंटर पास व्यक्ति से पहले के मैट्रिक पास का मुकाबला कर लीजिए। दोनों की बुद्धि और शिक्षा की योग्यता में जमीन आसमान का फर्क मिलेगा। आज के यही लड़के कल हमारे देश के राष्ट्रपति, मंत्री, प्रधानमंत्री बनेंगे। जब हमारे होने वाले राष्ट्रनायकों की यह हालत है, तो कल हमारे देश का क्या हाल होगा? यह प्रश्न हमारे देश के हर नवयुवक के सामने होना चाहिए।

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। आज भी हमारा युवक समाज चेत जाए तो बात संभल सकती है। उन्हें सोचना चाहिए कि सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद हमारा राष्ट्र आजाद हुआ है। हमारा देश दुनियां में इतना पिछड़ा हुआ है कि वर्षों लग सकते हैं इसे स्वावलम्बी बनाने और दुनियां के साथ बराबर लाने में। आज के नवयुवक, कल राष्ट्र की यह जिम्मेदारी अपने हाथ में लेंगे, उन्हें यही समझ कर अपनी शिक्षा लेनी चाहिए और अपने चरित्र को उज्ज्वल और अनुशासित बनाना चाहिए कि कल उन्हें ही राष्ट्र का कर्णधार बन कर राष्ट्र की तरक्की करनी है।

हम घर में हैं तो अपने बड़ों का अनुशासन मानें। दफ्तरों में काम करते हैं तो अपने अफसरों का अनुशासन मानें। रोजगार करते हैं तो समाज के बनाए हुए नियम और अनुशासन मानें। हमसे छोटा व्यक्ति हमारी गलती बताए तो हम उसका भी अनुशासन मानें।

हम जहाँ भी जिसके यहाँ भी जांय वहाँ का अनुशासन और वहां के नियम हमें मानने चाहिए। चाहे वह छोटे व्यक्ति का स्थान हो या

बड़े का, हमें उनके यहां का अनुशासन मानने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए ।

हमारा देश स्वतंत्र है, हमारा शरीर स्वतंत्र है, हमारे विचार स्वतंत्र हैं पर हमारा रहन सहन, हमारा बर्ताव, हमारे कार्य संचालन की विधि स्वतंत्र नहीं है । वह कानून और सामाजिक नियमों से बंधा हुआ है, हम जो चाहें नहीं कर सकते । हमें सभी जगह अनुशासन जान कर उसके नीचे चलना होगा । तभी हम अपने और अपने समाज को सुव्यवस्थित रख सकते हैं ।

जब हम में से कोई लोग अपनी किन्ही मांगों को लेकर एक समूह बना कर किसी सरकारी या गैर सरकारी विभाग के कार्यालय के सामने एकत्रित होते हैं तो अकसर हम लोग जोश में हिंसात्मक प्रवृत्ति पैदा कर लेते हैं, और घोर अनुशासन विहीन हो जाते हैं । तब हम अपने वास्तविक मांगों से हट भी जाते हैं । हिंसा द्वारा कानून अपने हाथ में लेकर उससे अपने साथियों के चरित्र को भी भ्रष्ट करते हैं । अपने राष्ट्र की वस्तुओं की हानि करके हम शांतिप्रिय जनता के घृणापात्र बन जाते हैं । क्या अपने समर्थकों को लेकर कानून तोड़ना या राष्ट्र की वस्तुओं को हानि पहुंचाना हमारा राष्ट्र विरोधी कार्य नहीं है । इससे हमें बचना चाहिए, और यह सोचना चाहिए कि जिन लोगों को हम अनुशासन तोड़ने को प्रोत्साहित करते हैं वे हमारे विरुद्ध भी अनुशासन तोड़ सकते हैं ।

:: १८ ::

झूठ बोलने की आदत

बहुत से लोग यह कह देते हैं—अरे साहब इस जमाने में बिला झूठ बोले कोई काम नहीं चल सकता—या सच बोलने वाला हमेशा परेशानी उठाता है। यह बात उसूलन सही नहीं है। यदि हम थोड़ा अपना चरित्र बनाने की ओर ध्यान दें तो जहाँ महीने में हम १०० झूठ बोल देते हैं वहां बिना अपनी या किसी की हानि किए अपनी झूठ बोलने की आदत ९५ प्रतिशत जरूर घटा सकते हैं। सब से बड़ा झूठ तो हम तब बोल जाते हैं, जब हम बात बात पर यह कहते हैं कि हम झूठ नहीं बोलते।

महीने भर में हम जितने झूठ बोलते हैं उनमें से ९५ प्रतिशत झूठ हम बेफायदा और अपनी लापरवाही के कारण बोल जाते हैं। यदि हम ध्यान दें तो इन ९५ प्रतिशत झूठों से हम जरूर बच सकते हैं।

यह भी याद रखने की बात है जब हम एक झूठ बोलते हैं तो उस झूठ को सच साबित करने के लिए उसके पक्ष में हमें तमाम और झूठ बोलने पड़ते हैं। यदि हम पहले झूठ से बच जाएं तो उसके अड़ोसी-पड़ोसी कई झूठों से बच सकते हैं। पहला सच बोलने में हमें यदि कोई कठिनाई उठानी पड़ेगी तो वह उसी वक्त तक की होगी जब तक हम अपनी सच बोलने की आदत नहीं बना लेते हैं।

आपने अपने अफसर को प्रार्थना-पत्र दिया कि आपको एक हफ्ते की छुट्टी चाहिए। अफसर के पूछने पर आपने वजह यह बतलाई कि आपका नजदीकी रिश्तेदार सख्त बीमार हैं और आपको उसे देखने जाना

बहुत जरूरी है। जबकि सही बात यह है कि आप एक हफ्ता आराम करना चाहते हैं। तो आपका अफसर बीमारी के नाम पर छुट्टी दे देगा। लेकिन आपके अफसर को यह विश्वास हो कि आपकी आदत झूठ बोलने की नहीं है तो आपका अफसर सच बात बताने पर भी छुट्टी दे देगा। यह आप अच्छी तरह समझ लीजिए कि अकसर आपका अफसर आपके झूठ को जान जाता है। इसलिए हर तरह की बातों में झूठ बोलने की जरूरत नहीं होती।

आपके अफसर ने पूछा कि आपने अमुक काम कर लिया है। आपने अफसर को संतुष्ट करने के लिए झूठ ही कह दिया कि वह काम आपने कर लिया है। यह ठीक है कि आपका अफसर क्षणिक तौर पर प्रसन्न हो गया। लेकिन अगर अफसर ने उस काम का तुरन्त ही मुआइना कर लिया और तब उसे मालूम हुआ कि आपने झूठ बोला है। तो वह आपको आदतन झूठा मान कर आपके सच को भी झूठ समझने लगेगा। सच बोलने की हालत में वह थोड़ी देर के लिए आपसे असंतुष्ट होगा और बाद में आपकी सच्चाई पर वह आपसे खुश होगा।

आपका एक कारखाना है। आपका एक ग्राहक आपसे कोई वस्तु बनवाने आया, जिसे वह दूसरे दिन तयार मांगता है। आपने उससे वादा करके आर्डर ले लिया। अब आपने सोचा ग्राहक आर्डर दे गया और उसके लिए कुछ पेशगी रकम भी दे गया। अब आप उसे वह वस्तु दूसरे दिन के वजाए तीसरे या चौथे दिन बना कर देते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि दो फालतू दिनों में उसका सैकड़ों रुपये का नुक-सान हो जाता है। आपने उस काम में १०) कमाया लेकिन ग्राहक को वस्तु समय पर न मिलने से उसकी सैकड़ों रुपये की हानि हुई तब तो वह ग्राहक और उसके मित्र सदा के लिए आपसे छूट गए ? और आपका कारखाना बदनाम अलग से हुआ। ऐसा न करके यदि आप सही बात

बता कर उससे आर्डर लेते तो आपकी वह अपने मित्रों में तारीफ भी करता और वह आपका हमेशा का ग्राहक भी बन जाता।

रुपये के लेन देन में भी लिखित बात होने पर हम बहुत बार लोगों से झूठ बोल जाते हैं। दिए रुपए को ज्यादा बता देते हैं—लिए रुपये की प्राप्ति से इन्कार कर जाते हैं। यह सब तरीके हमारे चरित्र को बहुत हानि पहुंचाते हैं और समाज में हमारी इज्जत बिगाड़ते हैं।

यह सब तो फिर भी कुछ बड़ी बातें हैं बहुत मामूली मामूली बातों में हम सैकड़ों बार झूठ बोल जाते हैं।

हमारी जेब में रेजगारी है, पर किसी के मांगने पर हम कह देते हैं कि रेजगारी नहीं है। किसी ने हमसे कलम मांगी ताकि वह जरा कुछ लिख ले। कलम ठीक होते हुए भी हम कह देते हैं कि कलम में स्याही नहीं है। हम घर में लेटे आराम कर रहे हैं किसी ने हमें बाहर आवाज दी हम कहला देते हैं कि हम घर में नहीं हैं। हमारे घर की कोई बेकार सी वस्तु किसी ने उधार मांगी। देने में हमारा कोई नुकसान नहीं है फिर भी हम उस वस्तु की मौजूदगी से इन्कार कर देते हैं।

किसी ने हमसे कोई बात पूछी, हम जानते हुए भी आलसवश उस जानकारी से इन्कार कर देते हैं। किसी ने हमसे पूछा कि—तुम कहां जा रहे हो—जाते और कहीं हैं बताते हैं और कहीं। कोई वस्तु हम खरीद लाए ५) की किसी ने पूछा कितने की लाए—हमने कह दिया ६) की।

इस प्रकार की बहुत सी छोटी छोटी बातों में हम झूठ बोलकर अपना चरित्र गिराते हैं।

हम जब भी कोई झूठ बात कहते हैं तो एक बार हमारे मन में एक कुदरती झकोरा सा लगता है, जोह में याद दिलाता है कि हमने यह गलत काम किया है, याने हमारा मन हमें होशियार करता है कि

हमने झूठ बात बोल कर बुरा कार्य किया। जब हम इन झकोरों की परवाह नहीं करते तो झूठ बोलने के आदी हो जाते हैं और तब यह झकोरे लगना भी बंद हो जाते हैं।

हो सकता है कि कोई बात आपसे पूछी जाए जिसे आप नहीं बताना चाहते और न बताने के कारण झूठ बोलना जरूरी हो जाए। ऐसे मौकों पर जैसे भी हालात हों या तो सत्य ही बोलिए या फिर सवाल करने वाले को कह दीजिए कि आप उसका उत्तर नहीं देना चाहते। या खामोश हो जाइए।

यदि कभी जाने या अनजाने में आप झूठ बोल जाएं तो उस बात पर खींच तान या टीका टिप्पणी होने से पहले ही झूट बोलने को स्वीकार कर लेना ज्यादा अच्छा है। ऐसा न करने से वह झूठ खुलेगा और आपको शर्मिंदा होना पड़ेगा। झूठ को स्वीकार करना बड़ी भारी हिम्मत और सच्चरित्रता की बात है। जो ऐसी हिम्मत करते हैं वे हमेशा इज्जत पाते हैं।

हमसे बुरे काम हो जाते हैं। हम भी इंसान हैं। कभी बुरे काम या गलती हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है। परन्तु उससे भी बुरी बात हम तब करते हैं, जब उस बुरे काम को झूठ बोल कर छुपाते हैं। यदि हम बुरे कामों को न छुपाएं, तो वे बुरे काम भी हम से धीरे धीरे छूट जांयगे और हमें झूठ भी नहीं बोलना पड़ेगा।

झूठ मिला हुआ सच बोलने की भी आदत हमारी लापरवाही से हम लोगों की हो गई है, जब हम देखी या सुनी हुई बातों को बहुत घटा या बढ़ा कर बयान करते हैं। हमारे लड़के को कोई मार-पीट दे तो हम अपने लड़के को बहुत ही ज्यादा पिटा हुआ बल्कि अधमरा हुआ बताते हैं। परन्तु जब हमारा लड़का दूसरे के लड़के को मार देता है तब हम उस लड़के को बहुत ही कम पिटा हुआ, बल्कि हमारे लड़के ने अमुक को जरा सा छू दिया है, बताते हैं। जब जहां हमारा लाभ

या हानि होती है उसी के मुताबिक हमारी झूठ घटती बढ़ती है । तो यदि हम अपने को भला व्यक्ति कहलाना पसंद करते हैं तो हमें अपने द्वारा देखी या सुनी सभी प्रकार की बातों को जैसी वास्तव में है वैसी ही बताने की आदत डालना चाहिए।

इसी तरह समय के साथ भी हम झूठ बोल जाते हैं । कभी जान-बूझ कर और कभी अनजाने में भी । जहां हमें १० बजे पहुंचना चाहिए वहां हम देर से १०॥ बजे पहुंचते हैं तब हम घुमा फिरा कर जानते हुए भी खींच तान कर अपने को १० बजे के करीब पहुंचा हुआ बताते हैं। और जब शाम को ५। बजे होते हैं तब उसे हम तोड़ मरोड़ कर ५॥ कह देते हैं। दस पन्द्रह मिनट के फर्क पर इतनी बात लिखने का उद्देश्य यह है कि हम समय को अपने हानि लाभ से आँकते हैं न कि घड़ी से जब समय, और ठीक समय की बात है तो उसे सचाई से नापना और मानना चाहिए । ५ मिनट की देरी के दोष को भी सीधे ही दोष मान लेना चाहिए ।

एक बात समझ लीजिए सच्चा व्यक्ति अपने सब काम आसानी और प्रभावपूर्ण तरीके से बना सकता है। क्योंकि सच्चे व्यक्ति में आत्मबल की ताकत होती है जो दूसरे को प्रभावित करती है। जबकि झूठे व्यक्ति को आत्मबल का लाभ नहीं मिलता है ।

:: १९ ::

समय की पाबन्दी, वादा

समय की पाबन्दी न करने और वादाखिलाफी से हमारे चरित्र को कितनी क्षति पहुंचती है और हमारे राष्ट्र की कितनी हानि होती है इस पर हमें विचार करना है। दोनों दोष हमें अच्छा चरित्रवान बनने में जबरदस्त रुकावटें डालते हैं, साथ ही हमारी नौकरी, रोजगार धन्धे या हमारी ख्याति में हमारा बड़ा अहित करते हैं।

समय की पाबन्दी न करने और वादा पूरा न करने में हमारे दो दृष्टिकोण होते हैं। एक हमारा प्रत्यक्ष लाभ। दूसरा, दूसरों का लाभ। जहाँ हमारा प्रत्यक्ष लाभ होगा वहां हम बहुत कुछ समय की पाबन्दी और वादा पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु दूसरों के लिए समय की पाबन्दी और वादा पूरा करने में हम हमेशा लापरवाही करते हैं। हालांकि कुछ लोग इस दोष के कारण अपने कामों की भी हानि कर डालते हैं।

चरित्रवान व्यक्ति वही है जो हर बात में चाहे वह अपने हानि की हो या लाभ की। या दूसरों के लाभ की हो या न हो अपना वादा पूरा करता है और समय की पाबन्दी करता है। यदि वादा पूरा करने में कोई परेशानी हो तो बेहतर है उस बात का वादा किया ही न जाए।

वादा करके बहुत से लोग भूल जाते हैं। ऐसे लोगों को चाहिए कि अपने पास डायरी रक्खें और इस तरह की सब बातें उसमें याद करने के लिए लिख लिया करें तो भूल के कारण वादाखिलाफी नहीं होगी और किसी से लिया या किसी को दिया वादा भी याद रहेगा।

जो लोग अपनी लापरवाह आदत या इन बातों की प्रमुखता पर ध्यान न देने के कारण इस प्रकार की गलती करते हैं वे वास्तव में दोषी हैं। उन्हें अपने इस दोष को दूर करने की आदत डालनी चाहिए।

जो लोग लिहाज के कारण, यह जानते हुए भी कि–वादा पूरा नहीं होगा—परन्तु वादा कर लेते हैं उन्हें ऐसे मौके पर स्पष्ट बात कहने की हिम्मत लानी चाहिए। थोड़ी देर की कटुता आगे के लिए हमेशा अच्छा नतीजा देती है। और कई बार ऐसा होने पर लोग समझ लेते हैं कि अमुक व्यक्ति झूठा वादा नहीं करता है। इससे कभी भी हानि नहीं होती। यदि आप यह बात समझ लें कि आप किसी को प्रसन्न करने के लिए उससे किसी कार्य करने का वादा करते हैं तो उसके वादा किए हुए कामों को करने के लिए आपको अपना कुछ नुकसान भी करना होगा, तभी आप दूसरे का काम पूरा कर सकते हैं। यहां आपको यह भी सोचना है कि आप अपनी ही हानि लाभ के लिए भी वादा खिलाफी न करें।

आपने किसी से यदि शाम को ५ बजे मिलने का समय दिया है तो आप ऐसे वक्त अपने स्थान से चलिए ताकि आप ठीक ५ बजे उसके पास पहुंच जांए। बहुत से लोग ५ बजे का वादा करके साढ़े पाँच या ६ बजे पहुंचते हैं, इससे मिलने वाले को बहुत ही असुविधा और हानि भी उठानी पड़ जाती है।

यदि आपका समय १० बजे दफ्तर पहुंचने का है तो ठीक १० बजे हर सूरत में आपको अपने दफ्तर पहुंच जाना चाहिए। यदि आपने अपने अफसर के दिए हुए काम को किसी खास समय तक पूरा कर देने का बचन दिया है तो आलस, लापरवाही और बहाना छोड़ कर उसे समय से ही पूरा कर दीजिए। बहाना करना एक बड़ा औगुण है।

अगर आप किसी कारखाने के मालिक या उसके जिम्मेदार व्यक्ति हैं और आपने अपने ग्राहक को कोई वस्तु तयार करके किसी खास समय

या दिन पूरा करके देने का वादा किया है तो उसे समय से पहले पूरा कर दीजिए। अगर इसी तरह आपके किसी मातहत ने कोई वादा किया है तो उसे पूरी सुविधा दीजिए कि वह अपना वादा पूरा कर सके।

अगर आपके किसी मित्र ने किसी से कोई वादा किया है और मित्र उस वादे को पूरा करने में ढील ढाल कर रहा है और वह चाहता है कि उसकी ढील ढाल में आप भी शामिल हो जाएं ताकि उसे वादा तोड़ने में आपका बल मिल जाए। तो भी आपको वादा पूरा करने पर ही जोर देना चाहिए। इसका यह मतलब है कि आप खुद तो समय की पाबंदी और वादा पूरा करने के नियम पर चलें हीं साथ ही अपने सहयोगियों और मित्रों को भी प्रेरणा दें कि वे भी इन पर चलें।

दुनियां के दूसरे विकसित देशों के लोगों में वादा पूरा करने और समय की पाबंदी करने के गुण बहुत ज्यादा होते हैं। वहाँ के लोग अपनी हानि उठाकर भी वादा पूरा करते हैं और समय की पाबंदी करते हैं। विदेशों में यदि किसी ने आपसे ९ बजे मिलने का समय दिया है तो वह ९ बजे अपना कोई दूसरा कार्य अपने पास नहीं रक्खेगा ताकि वह आपसे मिलकर अपना समय आपको दे सके। अगर आप उस समय उसके पास नहीं पहुंचेंगे तो फिर समय निकल जाने के बाद वह आपसे नहीं मिल सकेगा और आपके समय की पाबंदी न करने के कारण आपसे रुष्ट भी हो जाएगा।

समय की पाबंदी न करने से हमारे यहां कितने ही लोगों को अपनी रेलगाड़ी छोड़ देनी पड़ती है, जिससे बड़ी से बड़ी हानि भी हो जाती है। समय की पाबंदी न होने से अदालतों में देर से पहुंच कर अपने मुकदमें बिगाड़ लेते हैं। समय की पाबंदी न करके कितने लोगों को अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ जाता है और अपने अफसर को भी नाराज कर लेते हैं। फिर भी हम इस ओर ध्यान नहीं देते हैं।

एक सच्चा किस्सा है :—

अमरीका के राष्ट्रपति वेलिंग्टन समय के बड़े पक्के और पाबंद थे। वे अपना हर काम समय पर किया करते थे। एक बार उनके एक मंत्री को आने में कुछ देर हो गई। राष्ट्रपति ने देर से आने का कारण पूछा तो मंत्री ने अपनी घड़ी सुस्त होने की बात कही। राष्ट्रपति ने मंत्री से कहा — महोदय या तो आप अपनी घड़ी तुरंत बदल लें जो आपको धोखा देती है वरना मैं अपना मंत्री बदलने को मजबूर हो जाऊंगा।

समय के इतने पाबंद लोग ही महान काम कर सकते हैं तभी वे महान व्यक्ति कहलाते हैं।

सही वादे पर दुनियां के बड़े बड़े काम चल रहे हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के वादे पर ही करोड़ों, अरबो रुपए का सामान लेता देता है। वादे के भरोसे पर ही एक राष्ट्र के दूसरों से बड़े बड़े समझौते होते हैं। जिनमें राष्ट्रों की जिन्दगी मौत के मसले होते हैं। यदि ये राष्ट्र वादा-खिलाफी कर जाएं तो उनकी दुनियां में कोई कीमत न रह जाय।

क्या आप वादा करेंगे कि आयन्दा आप समय की पाबंदी करेंगे और वादाखिलाफी नहीं करेंगे। वादाखिलाफी करने वाले को चरित्रहीन ही नहीं बल्कि झूठा भी कहा जाता है, और उसका कोई विश्वास भी नहीं करता।

अगर आप किसी समय किसी को दिए हुए समय की पाबंदी नहीं कर सकते हैं या उससे किया हुआ वादा नहीं निभा सकते हैं तो बेहतर है कि उसे पहले ही इस की सूचना दे दें।

:: २० ::

राष्ट्रीय भावना

आप किस दल या किस नीति के मानने वाले हैं यह कोई अहम बात नहीं है। परन्तु हर भारतीय के मन में राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना और राष्ट्र के लिए आत्म बलिदान की भावना होना हमारे चरित्र की सबसे अच्छी बात होगी। इसके विपरीत भावना हमारे लिए कलंक की बात है।

हिन्दी के महान लेखक स्व० पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा था—"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं नर पशु निरा है, और मृतक समान है"। याने—जिस भारतीय के मन में आत्मगौरव और अपने देश के प्रति अभिमान नहीं है वह इन्सान नहीं बल्कि मुरदे के समान है।

राष्ट्रीय भावना में हमें सबसे पहले अपने राष्ट्रीय झंडे की इज्जत का ध्यान होना चाहिए। राष्ट्रीय झंडे को कहीं ऐसे स्थान पर नहीं रखना चाहिए जिससे उसकी इज्जत घटती हो। उसे मामूली कपड़े के रूप में इस्तेमाल करना या इधर उधर लापरवाही से डाल देना, झंडे का अपमान करना है।

झंडे को राष्ट्रीय पर्वों पर सीधा फहराना चाहिए। उसके फहराने का स्थान स्वच्छ व आकर्षक होना चाहिए। और जिस लट्ठे या लकड़ी में उसे फहराया जाए वह साफ और सीधी होनी चाहिए। फहराने से पहले देख लें कि झंडा टेढ़ा मेढ़ा या उसमें सिकुड़न तो नहीं है। झंडा फहराने के बाद उसके प्रति आदर भाव दर्शाना चाहिए।

पर्व समाप्त हो जाने पर झंडा उतार कर ठीक प्रकार से रख लेना चाहिए।

इसी प्रकार हमें अपने राष्ट्रगान की भी इज्जत करनी चाहिए। राष्ट्रगान या उसकी धुन बजने पर उसके सम्मान में तुरन्त शान्ति पूर्वक खड़े हो जाना चाहिए और तब तक सीधे खड़े रहना चाहिए जब तक राष्ट्रगान पूरा न गा लिया गया हो। हर भारतीय को पूरा राष्ट्रगान याद होना चाहिए और उसे ठीक प्रकार से गा लेने का अभ्यास भी होना चाहिए। जिन लोगों का अपना राष्ट्रगान नहीं आता है उन्हें शीघ्र ही इसे सीख लेना चाहिए। क्योंकि अपने देश का राष्ट्रगान न जानना अपनी तौहीनी की बात है।

हम सिनेमा देखने के शौकीन होते हैं परन्तु सिनेमा के अन्त में जब राष्ट्रगान बजता है तब हममें से बहुत से लोग उसकी इज्जत के लिए दो मिनट खड़े नहीं होते। यह कितनी बुरी बात है।

हमारे दो प्रमुख राष्ट्रीय त्यौहार हैं। पहला स्वतंत्रता दिवस जो १५ अगस्त को पड़ता है, दूसरा है गणतंत्र दिवस जो २६ जनवरी को पड़ता है।

जिनके मन में अपने राष्ट्र के प्रति राष्ट्रीयता का जरा भी भाव है उन का नैतिक कर्तव्य है कि वे इन दोनों पर्वों पर राष्ट्रीय झंडा अपने घरों और कार्यालयों पर फहराएं।

दुनियाँ के सभी राष्ट्रों की जनता अपने राष्ट्रीय पर्व बड़े धूम धाम से मनाती है। इस दिन बच्चे, बूढ़े, युवक, युवतियां सभी हर्ष और उल्हास से भर जाते हैं। परन्तु हमारे देश में इन राष्ट्रीय पर्वों के प्रति उल्हास की बहुत कमी दीखती है। जो राष्ट्रहित में अच्छी बात नहीं है।

हमें अपने राष्ट्रीय महापुरुषों की भी इज्जत करनी चाहिए। जब भी कभी अपने देश के जीवित या मृत राष्ट्र निर्माताओं या महापुरुषों के नाम आपसी बातचीत में आयें तो उनका नाम इज्जत से लेना

चाहिए। उनके प्रति कभी भी अशोभनीय बात मुंह से नहीं निकालना चाहिए।

हम में से कुछ लोगों की आदत सी हो गई है कि हम विदेशी महापुरुषों की तो कुछ हद तक कदर करते हैं, जो एक अच्छी बात है। परन्तु अपने देश के महापुरुषों की इज्जत करने में सकुचाते हैं। हमें हमेशा अपने राष्ट्रीय महापुरुषों के लिए किसी भी हालत में अभद्र नहीं होना चाहिए।

दुनियां के किसी दूसरे देश के नागरिक के सामने यदि आप उनके महापुरुषों के प्रति जरा भी अशोभनीय बात कह दें तो वह व्यक्ति तुरन्त मरने मारने को तयार हो जाएगा। यही भावना हमारी अपने राष्ट्र के महापुरुषों के प्रति भी होनी चाहिए। जिस देश में अपने राष्ट्रीय महापुरुषों और अपने राष्ट्रीय झंडे और अपने राष्ट्र के प्रति मान अभिमान नहीं होता वह कौम अपनी स्वतंत्रता की रक्षा ज्यादा दिन नहीं कर सकती है।

यदि हमें कभी भी अपने राष्ट्र का कोई ऐसा भेद मालूम हो जाए जिसे दुशमन राष्ट्र जान कर हमारे देश को हानि पहुंचा सकता है तो वह भेद हमें कभी भी किसी को नहीं बतलाना चाहिए। क्योंकि दूसरे को बताया हुआ भेद किसी तरह बढ़ते बढ़ते दुशमन तक पहुंच कर हमारे देश को हानि पहुंचा सकता है।

हमारी सेना के जवानों में राष्ट्रीयता कूट कूट कर भरी होती है। यदि कोई शत्रु कभी भी हमारे आजाद देश की भूमि पर हमला करने का दुःस्साहस करे तो हमारे देश की सेना के जवान उसका सर कुचलने के लिए लालयित हो उठते हैं और मौका पड़ने पर हमारे देश के जवान देश की रक्षा के लिए प्राण बिछावर करने में जरा भी नहीं हिचकेंगे।

राष्ट्रीय भावना के खिलाफ हममें से कुछ लोगों का एक आचरण उस समय सबसे हीन हो जाता है जब हम राष्ट्र की वस्तुओं को जान

बूझकर या अपनी लापरवाही से हानि पहुंचाते हैं। इसलिए उस हर व्यक्ति का कर्तव्य है, जिसे अपने देश के प्रति जरा भी प्रेम है, कि राष्ट्र की किसी वस्तु की हानि अपनी जानकारी में न होने दें।

राष्ट्र की वस्तु की हानि हम सब की हानि है। क्योंकि राष्ट्र की हर वस्तु हम सब के पैसे से खरीदी जाती है। बिना टिकट खरीदे राष्ट्र की रेलों में सफर करना, रेलों की वस्तुओं को हानि पहुंचाना, टैक्सों की चोरी करना, राष्ट्र की वस्तुओं का अपने निजी उपयोग में लाना हमारे इस तरह के सभी कार्यों से राष्ट्रीय हानि होती है।

हमें चाहिए कि इस तरह की कोई हानियां हम खुद भी न करें और दूसरे लोग यदि इसी तरह की हानियां करें तो उन्हें रोकें।

जो लोग राजनैतिक या किन्हीं कारणों की आड़ में राष्ट्र की वस्तुओं की हानि करते हैं वे देश के कट्टर शत्रु हैं। उनके यह अपराध कभी भी क्षमा योग्य नहीं हैं। क्योंकि जब हमारा देश आजाद है और हमारे देश की हर सम्पत्ति भारतीय जनता की सम्पत्ति है तो भारतीय जनता की सम्पत्ति की हानि को किसी भी सूरत में बरदाश्त नहीं किया जा सकता। हम, आप, सबको ऐसे राष्ट्र द्रोहियों से सावधान रहना चाहिए जो अपने देश की सम्पत्ति को भारतीय जनता की सम्पत्ति नहीं मानते।

जिस देश की मिट्टी से हमारा शरीर बना है उस देश का पूरा अधिकार हमारे शरीर पर है। देश की जरूरत पर हमें इस शरीर को देश के हित में लगा देने की भावना हर समय रखनी चाहिए।

:: २१ ::

बड़े बनो

हर व्यक्ति "बड़ा व्यक्ति" बनना चाहता है। ठीक भी है, हर व्यक्ति को बड़ा बनने का अधिकार भी है, जो एक अच्छी बात है।

हम बड़ा तो बनना चाहते हैं, परन्तु दूसरे को छोटा मान कर बड़ा बनना चाहते हैं। हम बड़प्पन को भी ग्रहण नहीं करना चाहते। बिना बड़प्पन ग्रहण किए हमारा बड़ा बनने का प्रयास हरगिज सफल न होगा। हम अपनी नजर में भले ही बड़े हो जाएं पर दूसरों की नजरों में यदि हम बड़े नहीं हैं तो हम छोटे से भी छोटे रह जाते हैं।

आपने पढ़ा या सुना होगा कि जितने भी व्यक्ति दुनियां में बड़े कहलाए हैं वे अपने आपको कभी भी बड़ा व्यक्ति नहीं समझते थे। दूसरा यह कि उनके सभी कार्य दूसरों की भलाई के लिए हुए हैं। चाहे अपने देश के लिए, चाहे अपने समाज के लिए। उन्होंने हमेशा दूसरों के लिए मेहनत और कुरबानी की है, तभी वे लोग बड़े कहलाए हैं। सिर्फ अपने धन या वैभव के कारण आज किसी का भी नाम बड़ों की सूची में नहीं है। इसके बरखिलाफ जिन लोगों ने अपने त्याग, तपस्या से, अपने तर्ज तरीके से, दूसरों को लाभ पहुंचाया है उनका नाम दुनियां के इतिहास में कायम है और कायम रहेगा।

अगर वाकई हमको भी बड़ा बनने का शौक है तो हमें भी बड़े काम करने चाहिए जिससे हमारे मित्रों, पड़ोसियों, मुहल्ले वालों, नगर वालों या देश वासियों को सुख सुविधा मिले। तभी लोग हमारी ओर आकर्षित होंगे और हमें बड़ा करके मानेंगे।

बड़े कामों के लिए हमारा दृष्टिकोण और हृदय भी बड़ा होना चाहिए। किसी बात को हम छोटे तरीके पर न सोचें। इसके लिए हमारी कुछ नीचे लिखे तरीकों की भावनाएं दूसरों के प्रति होनी चाहिए :—

"तुमने हमारा बड़ा अहित किया है, आओ, हम इसकी तुम्हें कोई सजा नही देते, तुम हमारे मित्र बनो, आयंदा हमें क्या किसी को भी हानि पहुंचाने की बात मत सोचना। तुम अच्छे व्यक्ति हो और अच्छे व्यक्ति किसी का अहित नहीं करते"।

"तुम—तुमने हमें बुरा भला कहा, यह अच्छा किया—हमें अपनी बुराई सोचने का मौका दिया। ताकि आयंदा हम अपनी बुराइयों के प्रति सजग रहें। तुम्हारा जैसा मित्र सबको नहीं मिलता। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा जैसा व्यक्ति मेरा मित्र बना रहे और समय समय पर मेरी बुराइयां मुझे बताता रहे। मैं तुम्हें हृदय से अच्छा व्यक्ति मानता हूं"।

"तुम—तुम्हें सब लोग बुरा कहते हैं, कोई भी तुम्हारा साथी नहीं बनना चाहता ? मैं तुम्हारा साथी बनूंगा तुम मेरे साथी बनो—आओ बैठें और सोचें कि क्यों तुम्हें लोग बुरा कहते हैं, तुम तो अच्छे व्यक्ति हो तुम्हारे अन्दर भी दूसरों की तरह बहुत सी अच्छाइयाँ हैं-आओ उन अच्छाइयों से दूसरों को फायदा पहुंचाएं, तब कोई तुम्हारी बुराई नहीं करेगा"।

'तुम्हे यह तकलीफ है, आओ हमारे पास—हम कोशिश करते हैं कि तुम्हारे कष्ट दूर हों। हाँ, बताओ सब अपने कष्ट हमें, हम उन्हें सुन कर उनको दूर करने का पूरा प्रयत्न करेंगे"।

और जितना भी आपसे संभव हो दूसरों के कष्ट दूर करने का प्रयत्न कीजिए। सिर्फ धन से ही लोगों के कष्ट दूर नहीं किए जाते। उनके साथ सहानुभूति, उन्हें अच्छी सलाह देकर और उनके साथ थोड़ा

समय देकर भी बहुत से लोगों के कष्टों को दूर करने में आप सहायक हो सकते हैं। सहानुभूति से दुखी मनुष्य को बहुत बड़ा सहारा मिलता है जिसे हम मुफ्त में ही लोगों को देकर उनके सहायक बन सकते हैं, और बड़प्पन हासिल कर सकते हैं।

हम लोग बात चीत में कभी कभी ओछे बोल बोल जाते हैं जैसे :- "मै किसी की परवाह नहीं करता"—"मैं किसी से कमजोर नहीं हूं"—"मैं तुम्हें देख (या) समझ लूंगा"—इस तरह के छोटे बोल कमजोर और नासमझ लोग बोलते हैं। बड़े लोगों को इस प्रकार के बोल कभी नहीं बोलने चाहिए। ये बोल हमेशा बोलने वालों को ही कष्ट पहुंचाते हैं। इस तरह के बोल के जवाब में चुप हो जाना ही बेहतर है। क्योंकि ऐसे बोल क्रोध में ही लोग बोलते हैं, जिनका कोई मतलब नहीं होता।

यदि हमसे कोई व्यक्ति यह कहे कि हमारा फलां दोस्त हमारी बुराई कर रहा था—तो हमें तुरंत अपने मित्र पर गुस्सा आ जाएगा और हम तुरंत अपने मित्र के लिए उल्टी सीधी बातें कर बैठेंगे। यह बात अच्छी नहीं है। हमें चाहिए कि उस वक्त कहने वाले को कोई उत्तर न दें और किसी वक्त मित्र से असलियत जानने का प्रयत्न करें इससे कभी भी कोई गलतफहमी पैदा नहीं होगी और सही बात मिल जाएगी।

आप अपने को बुद्धिमान और समझदार मानते हैं तो आपकी बुद्धिमानी से दूसरों को लाभ पहुंचना चाहिए। तभी आप समझदार कहलाने के सही हकदार होंगे। यदि आपकी अच्छी बुद्धि का लाभ दूसरो को नहीं मिलता तो आप बुद्धिमान हैं या नहीं दूसरे लोगों के लिए दोनों बराबर हैं।

जब भी कभी दूसरों के बारे में सोचने का अवसर मिले दूसरों की अच्छाई और बेहतरी के लिए सोचिए। बुराई के लिए किसी की बात मत सोचिए। बुराई के लिए सोचने से, कुछ भी न सोचना अच्छा है।

दुनियाँ के ज्यादा लोगों को दूसरों की नकल करने की आदत होती है, इसलिए आप कोई काम ऐसा मत कीजिए जिससे छोटे लोग आपकी नकल करके हानि उठाएं। आप हमेशा ऐसे काम करें जिससे आपकी नकल आदर्श समझ कर दूसरे लोग करें और उससे दूसरों को लाभ हो, और उन कार्यों से उनका भी चरित्र ऊंचा हो।

कभी भी किसी की वस्तु मुफ्त में ले लेनी की इच्छा मत कीजिए। दे सकते हों तो दीजिए बदले में लेने की इच्छा मत कीजिए। यदि कहीं लेना ही पड़ जाए तो मौका निकाल कर उससे ज्यादा लौटाल दीजिए।

हाँ यदि लेना ही है, तो चाहे छोटा हो या बड़ा, दोस्त हो या दुश्मन, उसकी अच्छी बातें ढूंढ कर जरूर ले लेनी चाहिए। दूसरों की अच्छी बातें लेने के काबिल तभी आप होंगे जब आप खुद कम बोलेंगे, और दूसरों की ज्यादा सुनेंगे, और हर बात को गहराई तक सोचेंगे।

ज्ञान और अच्छी बातें अच्छे और बुरे दोनों तरह के मनुष्यों के पास होती हैं। अच्छी बातें दोनों से ले लीजिये चाहे वह अभी काम की न भी हों।

किसी से ईर्षा मत कीजिए। ईर्षालू व्यक्ति से हर व्यक्ति शीघ्र ही घृणा करने लगता है। दूसरे लोग आपको धोखा दे दें तब भी दूसरों को धोखा मत दीजिए।

दुनियां का सारा ज्ञान पुस्तकों और मनुष्यों के पास है। दोनों ही से ज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न में बराबर लगे रहिए। कभी भी अच्छे काम करने का मौका मिले तो तुरन्त उससे लाभ उठाने का प्रयत्न कीजिए।

आप कभी भी कोई वस्तु या धन किसी से उधार मत लीजिए। यदि मजबूरी में ऐसा करना पड़े, तो तकाजा होने से पहले ही कष्ट उठा कर भी, जल्दी से जल्दी लौटा दीजिए।

यदि किसी स्थान पर जाने की इजाजत न हो तो वहां जाने का

प्रयत्न मत कीजिए। जहाँ जाने के लिए टिकट या अनुमति लेना जरूरी हो, वहां टिकट या अनुमति के बगैर मत जाइए। ऐसे स्थानों पर दूसरे उपायों से जाना छोटेपन की निशानी है।

अच्छी बुरी दोनों तरह की बातें दूसरों के द्वारा रोज हमें सुनने को मिलती हैं। बुरी बातों को पेट में हजम करने का अभ्यास डालिए। और अच्छी बातों का उपयोग कर लीजिए। कोई भी बात मुंह से निकालने के पहले सोच लीजिए कि वह बात किसी को हानि या कष्ट पहुंचाने की तो नहीं है। यदि है तो उसे जबान पर हरगिज मत लाइए।

यदि कोई दो या ज्यादा व्यक्ति कहीं एकान्त में बात कर रहे हैं तो उनके बीच उनकी इजाजत लेकर ही जाइए। चाहे वे लोग आपके कितने ही नजदीकी व्यक्ति क्यों न हों।

आप किसी व्यक्ति से बात चीत कर रहे हैं और उसी समय कोई दूसरा व्यक्ति भी उनसे बात करने आ जाए, तो आपका फर्ज है कि आप अपनी बात शीघ्र ही खत्म करके वहाँ से हट आवें, ताकि आए हुए व्यक्ति चाहें तो उनसे एकांत में बात चीत कर सकें। बहुत से लोग अपनी बात चीत के सामने दूसरों की बात चीत की परवाह नहीं करते और खुद ही उस व्यक्ति को बातों में लगाए रहते हैं। इससे दूसरे लोगों को बड़ी असुविधा होती है।

कोई छोटा व्यक्ति जब बड़ा हो जाए तो उससे छोटे की तरह व्योहार न कीजिए। उसे उचित बड़प्पन दीजिए, ताकि उसे आपको अपना साथी बनाने में हिचक न लगे। छोटे से बड़े हुए व्यक्ति को उचित सम्मान न देने में हम अपना बड़प्पन ढूंढते हैं, परन्तु वहां हमारा कोई बड़प्पन नहीं होता है। सही बात तो यह है कि जमाने के बदलने पर इन मामलों में हम भी अपने को बदलें।

यदि आप, दूसरे लोगों के बीच बैठ कर बात चीत कर रहे हैं। तो यह ध्यान दीजिए कि आपकी बात चीत का लोगों पर वही प्रभाव पड़ रहा है, जो आप डालना चाहते हैं। अगर वह प्रभाव नहीं पड़ रहा है तो,

या तो अपनी बात चीत का तरीका बदल दीजिए या अपनी बात बंद कर दीजिए। जो लोग यह बात ध्यान में नहीं रखते उनसे लोग बचने लगते हैं।

अपने अन्दर हीन भावना (inferiority complex) मत आने दीजिए। हर बात में यह मत सोचिए कि लोग आपको छोटा या हीन समझते हैं। क्योंकि हीन भावना आते ही अपनी नैतिकता कमजोर पड़ जाती है।

जो लोग आपकी नजर में गलत ढंग के काम करते हैं, उनकी गलत बातों से प्रेरणा मत लीजिए, वरना आपका रुझान भी गलत बातों की ओर हो जाएगा। जिन बातों को आप खुद गलत समझते हैं, उन बातों को आप खुद मत कीजिए। गलत काम करने वालो की बुराई मत कीजिए। बल्कि अपनी अच्छाइयों से उन्हें अच्छी प्रेरणा दीजिए। गुणी व्यक्ति की, चाहे अपना विरोधी ही क्यों न हो उसके गुणोंकी खुल कर तारीफ कीजिए।

अपने धर्म के पक्के आचरण कीजिए। धर्म में संकीर्णता मत आने दीजिए। धर्म के नाम पर कोई ऐसा भी काम न कीजिए जिससे किसी को भी कष्ट पहुंचता हो।

अपने तर्ज तरीके और व्योहार की समीक्षा बराबर करते रहिए। और ध्यान दीजिए कि आपके किन्हीं आचरण से आपकी लोकप्रियता घट ता नहीं रही है। यदि ऐसा जान पड़े तो अपने आचरण में परिवर्तन कीजिए। छोटों को अपनी अच्छी बुद्धि से लाभ पहुंचाइए और बड़ों और बुद्धिमानों से बुद्धि प्राप्त कीजिए।

जब आप किसी की भलाई का कोई काम करने जा रहे हों तो यह जरूर सोचिए कि उस भले काम से किसी की बुराई या हानि तो नहीं हो जाएगी। यदि ऐसी सम्भावना हो तो सोच समझ कर भलाई कीजिए।

जहाँ जिस सोसाइटी में, जिस जगह भी आप जाइए वहाँ अपनी सच्चरिता से, अपनी बुद्धि से, अपना स्थान बना लीजिए। वहाँ अपनी

लोकप्रियता कायम कर दीजिए। ताकि वहां आपकी जरूरत समझी जाने लगे। अपने मीठे बोल, अपनी कार्यशक्ति, अपने सेवा भाव से आप हर जगह अपना स्थान बना सकने में सफल हो सकते हैं।

दुनियां के एक बड़े व्यक्ति का कहना है कि—"यदि तुम्हारे पास दो कोट हैं तो एक उसे दे दो जिसके पास एक भी नहीं है"। कोट हम दें या न दें यह अलग बात है, लेकिन कम से कम हमारी यह भावना जरूर होनी चाहिए कि हमारी फालतू चीजों से उन लोगों को लाभ हो, जो उनके पास नहीं हैं। हमारे देश में विनोबा जी ने इस चमत्कार को चरितार्थ करके दिखा दिया है। उन्होंने हजारों लोगों से उनकी जमीनों में से कुछ हिस्सा लेकर हजारों बिना जमीन वालों को जमीनें दी हैं। जिससे हजारों लोगों की भलाई हुई है।

हमेशा बातों को सोचते रहिए। अपने दृष्टिकोण से सोचिए, दूसरों के दृष्टिकोण से सोचिए और देश—व्यापी दृष्टिकोण से सोचिए। तभी आप हर बात को ठीक तरह से जान सकेंगे। जहां बात के जानने में कठिनाई हो वहाँ बड़े लोगों से उस पर बात चीत कीजिए। कहीं न कहीं आप सही रास्ते पर पहुंच जाएंगे।

अच्छी बातों की तो नकल कीजिए, परन्तु हर बात में दूसरों की बराबरी मत कीजिए। बल्कि अपने अन्दर वह भिन्नता लाइए जिससे आपकी नकल दूसरे लोग अच्छी बात मान कर करें।

किसी की प्रार्थना मानने में यदि जरा भी अच्छी बात होती हो या आपका अपना या किसी दूसरे का चरित्र बनता हो तो उसे जरूर मानिए। चाहे वह बात किसी छोटे व्यक्ति द्वारा ही क्यों न कही गई हो।

हर व्यक्ति की अच्छी बात और उसके अधिकार को मान दीजिए चाहे वह आपका प्रिय हो या न हो। यदि कोई व्यक्ति आप पर कोई आरोप लगावे तो उसके जवाब में आप उस पर दूसरा आरोप न लगा दें, बल्कि अपने पर लगे आरोप पर विचार करें और उसका निराकरण करें।

:: २२ ::

सिफारिश

आज कल हम अपनी सभी जरूरतों को पूरा कराने में सिफारिश का उपयोग बड़ी जोरों से करने लगे हैं। जिसके कारण "योग्यता" का महत्व घटने लगा है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है। यदि हम अपनी योग्यता बढ़ाने का प्रयत्न करें तो हमें सिफारिश की कोई जरूरत नहीं रह जाती है। इसलिए हम सबका नैतिक कर्तव्य है कि हम अपनी योग्यता का भरोसा रख कर सिफारिश से परहेज करें।

हमें नौकरी चाहिए तो हम नौकरी की दरख्वास्त पीछे देते हैं, पहले हम सिफारिश ढूंढ़ने लगते हैं। अगर हम यह देखें कि नौकरी में जिन-जिन खूबियों की जरूरत है वह सभी खूबियाँ हम में पूरी तरह हों, यदि नहीं हैं तो उन्हें हम प्राप्त करें, तो हमें किसी सिफारिश के बिना भी वह नौकरी मिल सकती है।

हम नौकरी करते हैं। हमें तरक्की चाहिए। अगर उस तरक्की के लिए जरूरी काबलियत हम अपने में पैदा करते रहें तो हमें आज नहीं तो कल तरक्की जरूर मिल जाएगी। लेकिन जब हम बिना काब-लियत पैदा किए सिफारिश के बल पर तरक्की पाने का प्रयत्न करते हैं तो हम उन व्यक्तियों के साथ बेईमानी करते हैं जो उस तरक्की की जगह पर काम करने की काबलियत रखते हैं। इस बेईमानी से हमें बचना चाहिए।

हमारा लड़का पढ़ता है, वह पढ़ने में कमजोर है उसे इम्तहान में पास कराने के लिए हम सिफारिश ढूंढते हैं। यदि लड़का सिफारिश के

बल पर पास करा लिया गया और योग्यता उसमें नहीं आई तो लड़के का पढ़ाना और न पढ़ाना दोनों बराबर रहा। दूसरे, लड़का जब समझता है कि सिफारस के बल पर वह पास हो जाएगा तो वह पढ़ने से भी जी चुराने लगता है। ऐसे सिफारिशी पास हुए लड़के पढ़े लिखे मूर्ख कहलाते हैं, यह हम क्यों नहीं सोचते।

हम किसी कार्यालय में काम करते हैं। हमसे कोई अपराध हो गया है। हम चाहते हैं कि सिफारिश करा कर हम उस अपराध से मुक्त हो जाएं। अगर हमने अपराध किया है तो हम स्वयं ही सच्चे मन से पछता कर साफ-साफ लफ्जों में अपने अफसर के सामने अपराध स्वीकार करके क्षमा मांग लें तो हमारा कसूर जरूर माफ हो जायगा या उस हालत में हमें उसकी कम से कम सजा मिलेगी, जो हमें मान लेना चाहिए।

और सिफारिश सुनने और मानने वालों को भी सोचना चाहिए कि:

हमारे हाथ में लोगों को नौकरी देने का अधिकार है। यदि हम सिफारिशी अयोग्य व्यक्तियों को नौकरी पर रखते हम उन योग्य व्यक्तियों के साथ अन्याय करते हैं, जिन्होंने उस योग्यता को प्राप्त करने में मेहनत की है।

हमारे हाथ में वस्तुओं के परमिट देने का कार्य है। अगर हम सही जरूरतमन्दों को परमिट न देकर सिफारिशी लोगों को दे देते हैं, तो हम उस वस्तु के काला बाजार को प्रोत्साहन देते हैं जो देश व समाज के लिए एक घातक बात है।

परिमिट लेने में सिफारिश, मुकदमा जीतने के लिए सिफारिश, ठेके लेने में सिफारिश, भरती के लिए सिफारिश, स्थानांतर कराने के लिए सिफारिश, स्थानांतर रोकने के लिए सिफारिश, फीस माफ कराने के लिए सिफारिश, अपने नफे के लिए सिफारिश, और दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए सिफारिश। हर जगह हमने अपने को सिफारिश-मय बना डाला है और हम अपने समाज को, सिफारिश करा करा कर

ऐसा बनाए दे रहे हैं जिसमें हम एक कदम भी बिना सिफारिश के चल नहीं सकेंगे। इसी सिफारिश के कारण हम, हमारे दोस्त, रिश्तेदार सभी काबलियत से दूर होते जा रहे हैं क्योंकि हम न काबलियत पैदा करते हैं न उसके लिए प्रयत्न करते हैं। हमें तो भरोसा है सिफारिश का। इस चरित्रहीनता से हमें किसी तरह भी छुटकारा पाना चाहिए ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी सिफारिश के बजाए अपने में योग्यता पैदा करे और उस योग्यता पर भरोसा कर सके।

हमें आपको यह सोचना चाहिए कि इस सिफारिश की पद्धति को यदि हम कायम रक्खेंगे तो आज तो हम अपने सब काम अपने प्रभाव से सिफारिश के बल पर करा लेंगे परन्तु कल जब हमारी दूसरी पीढ़ी के हमारे ही लड़के प्रभावशाली न होंगे और वे सिफारिश भी न पहुंचा सकेंगे तब उनके हर काम रुक जाएंगे। उस समय हमारे आपके लड़के हमें ही इस सिफारिश प्रथा का संचालक मान कर हमें आपको कोसेंगे और बुरा भला कहेंगे। तो अगर हम अपने बाल बच्चों की भलाई चाहते हैं तो हमें अपने जीवन में ही इस बुरी प्रथा को बन्द कर देना चाहिए ताकि हमारे बाल बच्चे अपनी योग्यता के बल पर तरक्की कर सकें।

सरकारी नौकरी वाले लोगों को अपने ट्रांसफर में कभी भी सिफारिश नहीं करानी चाहिए जब नौकरी करना है तो नौकरी देने वाला जहां ट्रांसफर कर दे वहीं जाना चाहिए। सिफारिश के लिए बीस झूठ बोल कर बीस गलत बातें बता कर अपना ट्रांसफर कराना या रुकवाना दोनों ही सच्चरित्रता की बातें नहीं हैं।

:: २३ ::

महिलाओं के प्रति

महिलाओं के प्रति आज हमारा पुरुष समाज इतना अशिष्ट हो गया है, जिसकी जितनी भी भर्तस्ना की जाए कम है। हमारी बहन बेटियों का घर से बाहर निकलना एक कठिन समस्या बन गई है।

हमारे स्वतंत्र देश की बहन बेटियां यदि घर के अन्दर पर्दे में बैठती हैं तो यह हम सबके लिए एक बहुत बड़े पिछड़ेपन की निशानी है। और यदि वे घर से बाहर निकल कर पुरुषों के बराबर मिले अधिकारों का उपयोग करती हैं तो वे पुरुष समाज से सभ्यता और शिष्टता का व्योहार नहीं पातीं।

और तमाशा यह है कि जो अभद्र व्योहार हम दूसरे की बहन बेटियों के प्रति करते हैं वही अभद्र व्योहार दूसरे लोग हमारी बहन बेटियों के प्रति करते हैं। जब हम अपने ही को इस बेहूदगी से नहीं रोक पाते तो हम दूसरों को कैसे रोकें।

जिस देश में महिलाओं के प्रति सभ्यता का व्योहार पुरुषों द्वारा नहीं होता वह देश, वह जाति कभी भी सच्चरित्र नहीं बन सकती। इस युग में पुरुष जाति पर यह सबसे बड़ा कलंक है, कि वह अपनी जननी जाति के प्रति शिष्ट नहीं है। इस कलंक को धोने के लिए पुरुष समाज को कोई ठोस कदम उठाना ही होगा।

बात गहराई से सोचने की है। किसी समवयस्क महिला को देख कर हम थोड़ी देर के लिए यह विचार कर लें कि यदि यह महिला हमारे

घर में पैदा हुई होती तो यह हमारी बहन होती। इस तरह के विचारों से हमारे मन की कलुषित भावना हटाई जा सकती है।

हमारी बहन बेटियों को भी इस प्रकार अशिष्टता को मिटाने में समाज को सहयोग करना चाहिए। हमारी बहन बेटियां अपने माँ बाप के नगर या मुहल्लों में कुछ इस तरह का रहन-सहन और पहनावा रखती हैं, मानों उस नगर या मुहल्ले के सभी पुरुष उनके बाप या भाई हैं। उन्हें यह न भूलना चाहिए कि आज के भीड़ भाड़ वाले समाज में घर के दरवाजे से बाहर पैर रखते ही मुहल्ले की बहन-बेटी के रिश्ते का वातावरण खत्म हो जाता है, और अशिष्ट निगाहें उनके चारों तरफ घूमने लगती हैं। जिससे उन्हें सतर्क रहना चाहिए, और अपने पहनावे और रहन-सहन को इस प्रकार सादा रखना चाहिए कि लोग उन्हें अपनी बहन बेटी ही मानने की इच्छा करें।

अगर फिर भी कहीं उन्हें अपने प्रति असभ्यता की सीमा पार होते जान पड़े तो तुरन्त ही चंडी रूप धारण कर हिम्मत से उसका प्रतिकार करने में जरा भी नहीं हिचकना चाहिए। अगर यह तरीका हमारी बहन बेटियां अपनायें तो समाज से जल्दी ही यह अशिष्टता दूर हो सकती है।

महिलाओं को घर से बाहर रास्ते में इस प्रकार हाव-भाव नहीं रखने चाहिए जिससे अशिष्ट लोगों की अशिष्टता को बढ़ावा मिले।

महिलाओं को, बनाव सिंगार से थोड़ा हट कर अपने समाज और देश की समस्याओं में भी दिलचस्पी लेनी चाहिए। हमारी मध्यम श्रेणी के परिवारों की महिलाओं में समाज और देश की समस्याओं के प्रति चेतना की बहुत बड़ी कमी है। इस कारण हमारी और समाज की प्रगति नहीं हो पा रही है। इन महिलाओं की संकुचित

कूप मंडूक भावनाओं के कारण परिवारों में नित्य झगड़े झंझट भी होते रहते हैं। जिसका बुरा प्रभाव परिवार के सभी लोगों को भुगतना पड़ता है।

महिलाओं के प्रति हमें हमेशा शिष्टता बरतनी चाहिए। किन्हीं महिलाओं से बात करते समय अपनी निगाह उनकी निगाह पर न रख कर उनके चेहरे के निचले हिस्से पर रखिए। महिलाओं से ऐसे लफ्ज कभी मत बोलिए जिससे उनके सम्मान को ठेस लगे।

किसी अपरिचित महिला से बिना जरूरत बोलने का प्रयत्न मत कीजिए। और नाहीं महिलाओं से एकान्त में बात चीत कीजिए। अपने घर की महिलाओं को भी गाली गलौज या मार पीट न कीजिए। महिलाओं और बच्चों के सामने कोई भद्दी गाली किसी दूसरे को भी न दीजिए। यदि पुरुष जन किसी जगह बैठे हैं और वहाँ महिलाएं आ जाएं तो तुरन्त उनके बैठने के स्थान की व्यवस्था कीजिए। यदि उनके लिए बैठने का स्थान न हो तो अपना स्थान खाली कर दीजिए। बस या रेल के सफर में भी महिलाओं के लिए अपना स्थान खाली कर दीजिए।

जो महिलाएं थोड़ा भी पढ़ी लिखी हैं उन्हें पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने को प्रेरित किया जाना चाहिए। इसमें किसी प्रकार की ढील ढाल या बहाना नहीं मानना चाहिए। जो महिलाएं पढ़ी लिखी नहीं है उन्हें अखबार की खबरें पढ़कर सुनानी चाहिएं। महिलाओं में चेतना की भावना उभारने के लिए उनसे मुहल्ला, समाज और देश विदेश की चरचा भी की जाती रहनी चाहिए। अपनी नौकरी या कार रोजगार के बारे में भी उनसे चरचा करनी चाहिए, जिससे महिलाओं का दृष्टिकोण ऊंचा हो।

महिलाओं को घर से बाहर निकलने, वस्तुएं खरीदने और लोगों से बात करने की हिम्मत होनी चाहिए। तभी उनकी विचार शक्ति

में परिवर्तन होगा। महिलाओं को कूप मंडूक बनाकर घर की चहार दीवारी में बन्द रखने का समय अब खत्म हो गया है। जिस तरह पुरुष अपनी सभा सोसाइटियां बनाकर एक साथ बैठते, सोचते हैं उसी तरह महिलाओं को भी अपने समाज में प्रगति लाने और उस पर सोचने विचारने को तयार होना चाहिए। हम सबको महिलाओं की इस प्रगति में सहयोग करना चाहिए।

महिलाओं को नकली खूबसूरती बढ़ाने की वस्तुओं के उपयोग का बहिष्कार करना चाहिए। इन नकली वस्तुओं के उपयोग से नारी सुलभ कुदरती कोमलता उनके चेहरे से लुप्त हो जाती है।

महिलाओं की गलतियों पर भी उन्हें मार पीट या गाली गलौज नहीं करनी चाहिए बल्कि उन्हें समझाना बुझाना चाहिए।

:: २४ ::

क्रोध या गुस्सा

क्रोध एक ऐसी बुरी आदत है जो हमें हर तरह से नुकसान पहुंचाती है, और पहुंचाती रहती है फिर भी हम जब कब क्रोध के शिकार होकर कष्ट पाते रहते हैं।

हमें क्रोध तब आता है जब हमारी राय के खिलाफ राय हमारे सामने आती है, या झूठी बात हमारे सामने सचाई के रूप में रक्खी जाती है, या हम कोई काम दूसरों से कराना चाहते हैं जो वे नहीं करते।

पहली बात, हमारी राय के विरुद्ध दूसरों की राय का होना। यह हमेशा मुमकिन है। क्योंकि हर व्यक्ति उसी तरह अपनी राय का मालिक होता है। जैसे आप अपनी राय के मालिक हैं। जब एक राय दूसरे की राय से भिन्न हुई तब किसकी राय वास्तव में सही है और किसकी गलत? इसका फैसला कौन करे? इसमें एक की राय सही और दूसरे की गलत भी हो सकती है—और दोनों की सही या दोनों की गलत भी हो सकती हैं। अगर आप अपनी पिछली दस पांच रायों पर जो दूसरों के खिलाफ रही हों, खुद ही दूसरों के दृष्टिकोण से टीका टिप्पणी करें तो आपको खुद ही मालूम हो जाएगा कि आपकी सभी राएं सही नहीं थीं।

ऐसी हालत में अपने से विरुद्ध राय रखने वाले पर हम क्रोध क्यों करें। क्यों न ठंढे दिल से अपनी राय पर फिर से गौर करें और अगर अपनी ही राय ठीक मालूम हो तो प्रेम पूर्वक दूसरे को अपनी राय में

परिवर्तन करने का मीठा आग्रह करें। इस पर भी अगर वह अपनी ही राय सही मानता है तो उसे अपनी राय सही मानने दीजिए। आपको क्रोध करने की कोई जरूरत नहीं है।

अगर झूठी बात आपके सामने सत्य के रूप में आती है और आप जानते हैं कि वह झूठी है। तो भी आपको क्रोध करने की जरूरत नहीं है बल्कि अगर आपको उससे कोई नुकसान होने की सम्भावना हो तो उससे आप सतर्क हो जाइए। और मुमकिन हो तो गलत राय रखने वाले को क्रोध के बजाए मुस्कान से जीतिए।

हम किसी से कोई काम कहते हैं, यदि वह नहीं करता तो उस पर क्रोध करने के बजाए आप उस काम की कोई दूसरी व्यवस्था कर लीजिए। बल्कि जिस व्यक्ति के बारे में जरा भी शक हो कि वह आपका अमुक काम नहीं करेगा तो उससे वह काम करने को कहना ही नहीं चाहिए।

ऐसे मौके भी पड़ सकते हैं जब कि आपको अपनी आज्ञा, अनुशासन के लिए मनवाना जरूरी हो, तो बहुत ही सोच समझ कर आज्ञा दीजिए। बच्चों या शिक्षार्थियों या दूसरों पर अनुशासन या शिक्षा देने के लिए यदि थोड़ा क्रोध दिखाना जरूरी हो तो उस समय थोड़ा नकली क्रोध दिखा कर काम लिया जा सकता है।

बहुत से लोग यह समझते हैं कि क्रोध करने से दूसरे लोग उनके बड़प्पन को मानने लगेंगे या उनसे डरने लगते हैं। यह बात सही नहीं है, बल्कि सही यह है कि बहुत क्रोध करने वाले से धीरे धीरे लोग अलगाव करने लगते हैं। चाहे सामने वे कुछ न कहें। क्रोध से सही अनुशासन नहीं आता है, बल्कि उससे अलगाव व घृणा पैदा हो जाती है।

मान लीजिए आप अपने अफसर पर क्रोध करते हैं तो उसका नतीजा यह होगा कि वह आपसे रुष्ट रहने लगेगा जिससे या तो आपकी नौकरी खत्म हो सकती है या आपकी तरक्की रुक सकती है।

यदि आप रोजगार में अपने ग्राहकों से क्रोध करते हैं तो आपके ग्राहक आप से छूट जाएंगे। आप दोस्तों, रिश्तेदारों से क्रोध करते हैं तो वे आपसे ताल्लुक हटा लेंगे। आप अपने बीबी बच्चों से क्रोध करेंगे तो उनके प्रेम स्नेह में भय और आपसे अलगाव की भावना आ जाएगी जो आपकी सुख शान्ति में कमी कर देगी।

एक बात आपको मानना होगी, वह यह कि क्रोध करने के बाद हर व्यक्ति अपने किए हुए क्रोध पर पछताता है। चाहे वह अपने मुंह से इस बात को कहे या न कहे। तो फिर ऐसा काम क्यों किया जाए जिसके करने के बाद हर बार पछताना पड़े। क्रोध आ जाना बहुत सम्भव है परन्तु उसे जाहिर करने से बचना ज्यादा मुशकिल नहीं है। क्रोध के वक्त एक गिलास पानी पी लेने से या मौके से हट जाने से क्रोध की हानि से बचा जा सकता है।

बहुत से लोगों की आदत हो जाती है कि वे रास्ता चलते, आपसी बात चीत करते या बाजार में लोगों से क्रोध करने लगते हैं। और क्रोध में वे गाली गलौज भी बोल जाते हैं। और इसी कारण मार पीट तक कर लेते हैं। यह कोई भी बातें एक अच्छे नागरिक को शोभा नहीं देतीं।

दूसरे लोग आपसे क्रोध करते हैं। उन्हें करने दीजिए। क्रोध एक आग है उसे ठंडक से हजम करने की शक्ति अपने में पैदा कीजिए तब देखिए आपका अपना क्रोध भी कम हो जाएगा।

एक बात मत भूलिए कि क्रोध में कही हुई बात शक्तिहीन और बेबुनियाद होती है, जिसका कोई महत्व नहीं होता। क्रोध में कही हुई बातों से जो हानियाँ हुई हैं वे इतिहास में भी लिखी गई हैं ताकि आगे लोग उससे सबक लें। परन्तु यह बात कहीं नहीं मिलेगी कि किसी की क्रोध में कही हुई बात से किसी को भी लाभ हुआ हो।

बहुत बार ऐसा भी होता है कि जिस बात को असत्य या अपने

विपक्ष में समझ कर आप शीघ्र ही क्रोध कर डालते हैं। लेकिन जब उस बात का पूरा हिस्सा आपके सामने आता है तब वही बात सत्य होती है। तब भी आपको अपने क्रोध पर पछताना पड़ता है। इसलिए किसी बातों को पूरी तौर से जाने बिना उस पर अपनी मुस्तकिल राय न बनाइए।

जोर से या भद्दे तरीके से बोलना क्रोध का प्रतीक है। इसलिए सही या गलत हर बात के उत्तर को आहिस्ता से और शान्ति से कहना चाहिए।

यदि किसी अपने शुभचिन्तक की कही हुई बातों पर आप क्रोधित हो जाते हैं। तो वह शुभचिंतक आयन्दा आप से कोई बात कहने में लिहाज करने लगता है। इस तरह उसकी अच्छी बातों के लाभ से भी आप वंचित हो जाते हैं।

जब हमारे मां, बाप, भाई, बहन, बेटा, बेटी, अफसर, मातहत, यार दोस्त कोई भी हमारे क्रोध को मान, इज्जत देने को या उसे बरदाश्त करने को तैयार नहीं होते हैं, हमारे क्रोध करने पर सभी हमसे विद्रोह करने को तैयार हो जाते हैं, तो हम क्रोध करके क्यों अपनी बेइज्जती कराएं। क्रोध के बजाए हम वही काम मुसकान लेकर आसानी से करा सकते हैं, मुसकान भी क्रोध पर काबू पाता है।

:: २५ ::

जिम्मेदारी

हर व्यक्ति जिम्मेदारी का पद या उसकी कुर्सी तो प्राप्त कर लेना चाहता है, परन्तु उसकी जिम्मेदारी निभाने और जवाबदेही से दूर भागने का प्रयत्न करता है। यानी हम लोग जिम्मेदारी दूसरों के कंधों पर रख कर जिम्मेदार कहलाना चाहते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि हम जिस जिम्मेदारी पर होते हैं उस काम की, और उसी के कारण हमारे राष्ट्र की भी हानि होती है।

मान लीजिए आप किसी स्कूल के मास्टर हैं। आप उस स्कूल के हेड मास्टर हो जाना चाहते हैं। अपनी तरक्की के लिए आपका यह सोचना गलत नहीं है। परन्तु जब आप हेड मास्टर हो जाते है तो उस पद के कारण आपकी जिम्मेदारियां भी बहुत बढ़ जाती हैं। पढ़ाने के अलावा आपकी जिम्मेदारी यह भी बढ़ गई कि उस स्कूल के इम्तहान के नतीजे बेहतर रहें, सभी लड़कों में ज्यादा से ज्यादा अनुशासन हो, स्कूल के शिक्षक और दूसरे कर्मचारी अपने अपने काम पर मुस्तैद और ईमानदार हों। स्कूल की जायदाद व दूसरी वस्तुएं टूटने फूटने या खोने न पावें।

आपकी तरक्की से आपके काम की जिम्मेदारी बढ़ गई। अगर आप इन जिम्मेदारियों को दूसरों पर डाल कर लापरवाह हो जाते हैं तो आपका वह पद प्राप्त करना सारहीन और गलत हो जाता है। आपको हर बात की फिक्र करके यह देखना ही होता है कि जिन जिन लोगों में आपने काम बाँटा है वह लोग आपके काम को, आपके मन चाहे ढंग से कर रहे हैं या नहीं। इसकी पूरी जानकारी और हर व्यक्ति के कार्य की प्रगति का ज्ञान यदि आपको नहीं रहता है तो आप अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रहे हैं। ऐसी हालत में यदि आप आठ घंटे से

ज्यादा मेहनत नहीं करते तो अपने से नीचे के सहयोगियों से आठ घंटे भी काम नहीं ले सकते ।

आप एक मुहकमे के बड़े इन्जीनियर हैं । आपके नीचे कई छोटे इन्जीनियर काम करते हैं । छोटे इन्जीनियर की गलती से कोई काम की हानि हो गई । हो सकता है कानूनी जिम्मेदारी उस छोटे इन्जीनियर की हो जिसने वह कार्य किया है । परन्तु उस विभाग के बड़े इन्जीनियर होने के नाते उसके द्वारा हुए नुकसान के नैतिक जिम्मेदार आप हैं । क्योंकि आप उसके भी अफसर थे और उसके काम की पूरी निगरानी रखने की जिम्मेदारी आपकी थी ।

बड़ी बातों के अलावा मामूली मामूली बातों में भी हम लोग अपनी जिम्मेदारी नहीं निवाहते हैं ।

हमें भेजा गया हम फलां आदमी को उसके घर से बुला लावें । हम जाते हैं वह आदमी अपने घर पर नहीं मिलता । हम लौट कर यही जवाब देते हैं कि—"वह घर पर नहीं है" । इतना ही जवाब हमारी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता । यदि हम उस आदमी के बारे में यह जानकारी और कर लेते कि वह आदमी कहां गया है और कब लौटेगा और अगर मुनासिब हो तो उसके घर या पड़ोसी से यह भी कह कर आते कि वापस लौटने पर उस आदमी को फलां व्यक्ति ने बुलाया है, यह सूचना उसे दे दी जाय । तो उस काम के प्रति हमने अपनी पूरी जिम्मेदारी निवाही ।

हमें किसी मित्र ने एक चिट्ठी दी कि हम बाहर जा रहे हैं रास्ते में उस चिट्ठी को डाकखाने में छोड़ दें । हम लापरवाही के कारण भूल जाते हैं और वह चिट्ठी हमारी जेब में ही पड़ी रह जाती है या हम एक दो दिन बाद उसे डाक में छोड़ते हैं । अगर हम अपनी जिम्मेदारी समझें तो उस चिट्ठी को सबसे पहले डाक में छोड़ दें ।

आप देखिए—कोई व्यक्ति चाहे हमारा अफसर, चाहे मित्र या रिश्ते-

दार हमारे ऊपर कोई काम छोड़ता है तो वह यह समझता है कि हम एक जिम्मेदार विश्वासपात्र व्यक्ति हैं। तभी वह हमारे ऊपर काम छोड़ता है। जब हम उस काम में लापरवाही बरतते हैं तो इसका मतलब होता है कि हमने उसके विश्वास व उस काम की अहमियत के साथ धोखा किया उस काम की कितनी अहमियत है यह हमें जानने की जरूरत भी नहीं है। क्योंकि उस काम की कितनी अहमियत है यह बात काम देने वाला व्यक्ति ही समझता है। जब हमारे जिम्मे वह काम कर दिया गया तो हमें उस काम को सबसे बड़ी अहमियत देनी चाहिए। अगर हम उस काम को अहमियत नहीं देते हैं तो दूसरे लफ्जों में हम काम देने वाले के साथ विश्वासघात करते हैं।

नौकरी में अपने अफसर के दिए हुए कामों को जो लोग ईमानदारी के साथ पूरा नहीं करते उनके अफसर उनसे कभी भी प्रसन्न नहीं रहते बल्कि काम को पूरा न करने से उन्हें हानि भी उठनी पड़ती है।

हुक्म या काम एक बताया जाता है मगर उस काम को पूरा करने में उसकी कई शाखें हो जाती हैं। जैसा कि ऊपर आदमी बुलाने के लिए एक नजीर में बताया गया है। काम पूरा करने में उस काम के सब हिस्से पूरे कर लेना ही पूरा काम कहलाता है। इसके लिए एक दूसरी नजीर भी दी जा सकती है :—आपके अफसर ने आप से कहा कि—एक चिट्ठी लिख लीजिए—जो अभी भेज देनी जरूरी है। अब आपको वह चिट्ठी लिखता है, उसके लिए लिफाफा टिकट और उसके भेजने का इन्तजाम करना है और भेजने से पहले उसे किताब में दर्ज भी कर लेना है। इतना सब काम करने पर ही आपके अफसर का मंशा पूरा होता है। और तभी आपकी जिम्मेदारी भी पूरी होती है।

सेना में जिम्मेदारी को बहुत बड़ा महत्व दिया जाता है जो सेना की बुनियाद "अनुशासन" का ही एक अंग है। जिसको जो जिम्मेदारी दी जाती हैं उसे वह हर तरह से उस की सब शाखाओं को पूरा करता है। और पूरे हुए काम की रिपोर्ट करता है। सेना में हुक्म या जिम्मेदारी

पाने वाला व्यक्ति यह कभी भी नहीं सोचता कि इस हुक्म का महत्व कम है या ज्यादा वहां तो जिम्मेदारी को जिम्मेदारी समझ कर और जान देकर भी पूरा किया जाता है।

यदि आप अपने को चरित्रवान और तरक्की पसंद मनुष्य मानते हैं तो जिम्मेदारी का नाम आते ही अपने को जिम्मेदारी उठाने के लिए पेश कर दीजिए और उसे पूरे तौर से निबाहिए। यह भी याद रखिए कि किसी भी जिम्मेदारी को पूरा करने में बहुत बार कठिनाइयां भी आती हैं, अपना कुछ हर्ज भी होता है। फिर भी हर हालत और सूरत में उन कठिनाइयों को हिम्मत, बुद्धि और मेहनत से पूरा कीजिए।

नौकरी में, समाज में, मुहल्ले में, पड़ोस में, घर में सभी जगह जिम्मेदारी के काम मौजूद हैं। आप जिम्मेदारी की तरफ कदम बढ़ाइए, तो देखिए आपकी कितनी इज्जत होती है और आप क्या से क्या बन जाते हैं।

बगैर जिम्मेदारी निबाहे आपको आशा नहीं करनी चाहिए कि आप जिम्मेदारी के पद के काबिल हैं।

जो लोग जिम्मेदारी मानते हैं, वे अपनी जिम्मेदारी को तो पूरा ही करते हैं साथ ही अपने सहयोगियों की जिम्मेदारी को भी अपने ऊपर उठाने को तयार रहते है।

:: २६ ::

किफायतशारी

गुजरे हुए जमाने में किफायतशारी का समाज में बहुत बड़ा महत्व था, और हर व्यक्ति उससे लाभ उठाता था। आज हम किफायतशारी के प्रति बहुत कुछ लापरवाह होते जा रहे हैं। जिससे हमें बहुत बार कठिनाई भी उठानी पड़ जाती है और देश की भी हानि होती है।

बहुत से लोग किफायतशारी को कंजूसी समझ लेते हैं। दोनों में फर्क है। कंजूसी अच्छी चीज नहीं है जबकि किफायतशारी हमें सहूलियत पहुंचाती है और हमारी फिजूलखर्ची को रोकती है।

हमारी जितनी भी आमदनी है यदि उस पर विचार करके हम किफायत से चलें तो हम उसी आमदनी में कुछ बचा भी सकते हैं। जो कठिन समय में हमारे काम आए। यदि आप ध्यान से देखें तो आपको एक ही आमदनी के दो परिवार, आपके दोस्तों या रिश्तेदारों में ही मिल जांएगे उनमें फिजूलखर्ची वाले परिवार को आप कठिनाई में पाएंगे जबकि किफायतशार परिवार उससे ज्यादा आराम से रहता होगा।

सोचने की बात है, परन्तु है बहुत मामूली। हमारे बहुत से घरों में जूठन के रूप में कुछ खाना नालियों में फेंक दिया जाता है। मान लीजिए दोनों वक्त के खाने में हमने एक छटांक गल्ला जूठन बना कर फेंक दिया तो साल भर में हमने करीब २२—२३ सेर गल्ला नाली में फेंक कर बरबाद कर दिया। जो हमारी गाढ़ी कमाई का था। इतना गल्ला हमारे परिवार में कम से कम १५ दिन जरूर काम आता, जो हमने अपनी लापरवाही से फेंक दिया। याने हम साल में १५ दिन का

खाना फेंक देते हैं। जो किफायतशारी करके बचाया जा सकता था। जूठन के अलावा अपनी लापरवाही से, ठीक प्रकार से न रख सकने के कारण, इससे भी ज्यादा गल्ला हर वर्ष हम चूहों को खिला देते हैं। देश का हर परिवार यदि इन दोनों नुकसानों को बचा ले, या कम कर ले, तो हमारा लाभ तो होगा ही, साथ ही देश की गल्ला कमी की समस्या बहुत कुछ हल हो जाए।

हम सब साफ कपड़े पहनते हैं। कपड़े धुलाने में पैसा खर्च होता है। जो कपड़ा हम ४ दिन तक साफ रख सकते हैं, लापरवाही करके, गंदे स्थानों पर बैठ कर, उसे हम एक दो दिन में ही गंदा कर डालते हैं। ज्यादा बार धोबी के यहाँ कपड़े धुलने से पैसा भी अधिक लगता है और कपड़ा फटता भी जल्दी है। इसका यह मतलब नहीं है कि हम कपड़े गंदे रख कर किफायतशारी करें। बल्कि साफ कपड़े रखने में मुनासिब किफायत करें।

यदि हम साल में ६ कपड़ों से काम चला सकते हैं तो हम अपनी लापरवाही से या झूठे दिखावे के कारण ज्यादा कपड़े बनवाकर भी फिज़ूल खर्ची कर लेते हैं।

हम किसी दफ्तर में काम करते हैं। हमारी मेज पर बहुत से कागज फ़ाइलें रहती हैं। यदि हमें कोई छोटा सा हिसाब जोड़ना हुआ, कोई मजमून बनाना हुआ या कुछ याद दिहानी के लिए लिखना हुआ तो हम एक कोरा कागज उठा लेते हैं और उस पर यह सब लिख कर उस कागज को फेंक देते हैं। जो कागज हमने नष्ट कर दिया, वह नुकसान हुआ हमारे राष्ट्र का। यदि हमने एक कागज रोज बरबाद किया तो साल भर में करीब ३०० कार्य दिनों में हमने २०० या ३०० कागज नष्ट कर दिए। देश में हजारों नहीं लाखों दफ्तर हैं बहुत से लोग इसी प्रकार से कागज नष्ट करके साल में करोड़ों रुपए की राष्ट्र की

हानि कर डालते हैं। यही हिसाब या नोट एक रद्दी कागज पर लिखा जा सकता था।

हम बाजार में कोई काम की वस्तु खरीदने जाते हैं। उस काम की वस्तु के अलावा आदतन एक दो दूसरी वे वस्तुएं भी खरीद लाते हैं जिनकी हमें कोई जरूरत तो नहीं होती लेकिन वे हमें देखने में अच्छी लग गई होती हैं। या दूकानदार ने अपनी चतुराई के कारण वह वस्तु, हम पर प्रभाव डाल कर, हमें बेच दी होती हैं। इस तरह की बेजरूरत खरीदी हुई वस्तुओं से फिजूलखर्ची हो जाती है।

अगर हम अपने काम की कोई वस्तु नीलाम घर से खरीदने जाते हैं तो हम वहाँ से कोई न कोई बेकार की चीज जरूर खरीद लाते हैं जिसका हमारे घर में कोई उपयोग नहीं होता। यह भी किफायतशारी नहीं है।

अगर हम यह उसूल बना लें कि हम बाजार से सिर्फ वही चीजें खरीदेंगे जिनकी हमें बहुत ज्यादा जरूरत है या जिनके बगैर हमारा काम नहीं चल सकता तो हम हर महीने बहुत सी फिजूलखर्ची से बच सकते हैं। इससे देश का भी लाभ हो सकता है। वह यह कि हमारी कम खरीदारी से वस्तुओं की कीमतें घटती हैं। दूसरे यह कि ये वस्तुएं विदेशों में भेजने को ज्यादा उपलब्ध रहती हैं। जिनसे अपने देश को बाहर से पैसा भी मिलता है। आपके किफायतशारी करने से देश का भी लाभ होता है और आपका भी।

यदि हमारे उपयोग की कोई वस्तु फटने या टूटने लगे तो हमें चाहिए कि हम उसे तुरन्त मरम्मत करा लें, तो वह वस्तु ज्यादा दिन उपयोग में आ सकती है।

:: २७ ::

सोचिए और जानिए

हर बात को खूब सोचिए और पूरी तरह जानने का प्रयत्न कीजिए थोड़ी सी बातें जानने और छोटे से दायरे में, सोच विचार का युग खत्म हो गया है। अब अगर हम ज्यादा से ज्यादा बातें नहीं जानेंगे और ज्यादा से ज्यादा दूर तक नहीं सोचेंगे तो हमारा जीवन पिछड़े हुए लोगों का जीवन होकर रह जाएगा, और हमारा देश भी पिछड़े हुए लोगों का देश बना रहेगा।

अगर आप अपने मुहल्ले के बारे में जानते हैं तो अपने नगर, प्रदेश और देश के बारे में भी जानने का प्रयत्न कीजिए। अगर आप अपने घर और परिवार के बारे में सोचते हैं तो नगर, प्रदेश और देश भर के मसलों पर भी सोचिए। अगर आप अपने देश–प्रदेश के बारे में सोचते हैं तो अपने मुहल्ले के बारे में भी जरूर सोचिए।

इस दृष्टिकोण से सोचिए:—पहले आप सोचते रहे हैं कि यह भंगी है इसे मत छूना। बात मामूली है। जब से आपने होश संभाला तभी से मेहतर को नहीं छुआ जाता था। परन्तु अब जमाना बदल गया है हम आप आजाद हो गए हैं और अब कुछ आगे दूर तक सोचिए :—

क्या भंगी को अछूत समझना ठीक है ? देश की आबादी इतनी····भंगी इतने····ये हमसे अलग····हम इनसे अलग। हम पढ़ लिख रहे हैं ये गंवार बने रहें····। हम भी भारत मां के पुत्र ये भी उसी मां के पुत्र····फिर फर्क क्यों ? अगर हम इनसे छुआ छूत न मानें, एक भारतीय कौम के मान लें, इनके साथ बराबर का

व्यौहार करें, ये भी पढ़े लिखें बुद्धिमान बनें। तब हमारे देश की शक्ति बढ़ेगी, देश की एकता बढ़ेगी, देश का सम्मान बढ़ेगा, देश की तरफ आंख उठाने वाले की हम, ये और सब मिल कर आंखें निकाल लेंगे। पहले की गलतियां अब क्यों दुहराई जाएं।

हमने सोचा वह विधर्मी है उसे नौकरी न दें। वह विधर्मी हो या स्वधर्मी। सभी भारतीय हैं—हमारे देश के निवासी हैं। हमारे उनके बाप दादा में तो दांत काटी थी। इनमें क्या बुराई है जैसे हम वैसे ये, सब एक से····फिर फर्क क्यों ? विदेशियों ने हमें और इन्हें अलग अलग रक्खा था····विदेशी चले गए अब हम आजाद हैं। विदेशियों की "फूट" की नीति हम क्यों अपनाएं। गांधी जी नासमझ नहीं थे, दुनियां उन्हें महापुरुष मानती थी। वे सबको भाई मानते थे, हम सबको भी यही कहते थे। दुनियां के दूसरे धर्म मानने वाले सभी देश तो हमें मित्र मानते हैं और हमारे सहयोगी हैं इसलिए कि हम सभी धर्म वालों से मित्रता रखते हैं। धर्म के कारण हम किसी से बैर नहीं रखते। फिर ये····। ये दूसरे कहां है ये भी भारतीय····हम भी भारतीय। जब हम बेईमानी करते हैं तो ये भी करते हैं, एक ही समाज जो हुआ। हम ईमानदार सच्चरित्र बनेगें तो ये भी वही बनेंगे। लोग गलत कहते हैं, हम इनके साथ समता का व्यौहार जरूर करेंगे। अब हमें इन्ही बड़े तरीकों से सोचना चाहिए।

पिता जी कहते हैं कोई काम करो नहीं तो गुजर बसर कैसे होगी। मित्र ने सलाह दी कि राशन का जमाना है एक दूकान राशन की कर लो, खूब लाभ होगा। काला बाजार में कुछ माल खिसका दिया जाएगा तो उससे भी खूब आमदनी होगी। यह ठीक है धन्धा करने के लिए एक राशन की दूकान कर ली गई। परन्तु आगे की भी सोचिए :—

ब्लैक या काला बाजार करने से आमदनी तो खूब बढ़ जाएगी···। देश में गल्ला कम था, ऊंचे भाव के कारण गरीब लोग भूखों न मरने पावें

इसी लिए तो सरकार ने यह सस्ते गल्ले के राशन की दूकानें खुलवाई हैं। ब्लैक में बेंचने से कुछ धन तो मिल जाएगा। परन्तु एक बोरी गेहूं ब्लैक में जाने से दस गरीब परिवारों को गल्ला कम हो जाएगा। तो वे भूखों मरेंगे। उनका पाप हम पर पड़ेगा। पाप की कमाई हमें कहां फलेगी। देश के हजार दो हजार दूकानदार यदि यही कर गए तो लाखों गरीबों की रोटी छिन जाएगी। उसी तरह जैसे सन १९४३ में बंगाल में भुखमरी से ३५ लाख गरीब भूखों मर गए थे। हमारे ब्लैक करने के इतने भयंकर परिणाम, अब तो यह देशद्रोह है। नहीं, यह ब्लैक का धन्धा हमसे नहीं होगा।

एक मित्र ने हमें राय दी कि फौज में भर्ती हो जाओ तो बेरोजगारी की समस्या हल हो जाएगी। फौज में भरती हो जाने से सिर्फ बेरोजगारी की ही समस्या हल होगी ? नहीं, आगे भी सोचिए :—

बेरोजगारी की समस्या तो हल होगी ही साथ ही हमें अपने राष्ट्र की सीधी सेवा करने का मौका भी मिलेगा, अनुशासन सीखने को मिलेगा, और हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा बनेगा। हमारे प्यारे देश पर जो दुश्मन हमला करेगा उसका सर कुचलने का मौका मिलेगा। हम लड़ाई में बहादुरी दिखाएंगे तो हमारी तरक्की होते होते हम बड़े से बड़े अफसर भी बन सकेंगे। हमें बहादुरी के तमगे मिलेंगे। हम सैनिक रूप में जिधर से निकलेंगे हमारे देशवासी हमारे ऊपर गर्व करेंगे। और हमें वे "देश का सजग प्रहरी" कह कर सम्बोधित करेंगे। तब हमारी छाती स्वाभिमान से फूल जाएगी। यह सब भी सोचिए। तब रोटी की समस्या जो पहली समस्या थी वह आखिरी समस्या रह जाएगी। तभी हम अपना सैनिक जीवन सुखमय बना सकेंगे।

किसी भी समस्या को पूरे तरह सोचने पर और उसकी सब बातों की अहमियत समझ कर ही हम उससे पूरा लाभ उठा सकते हैं।

आपने अखबार में पढ़ा कि हमारे देश ने इतने लाख टन गल्ला

विदेशों से मंगाया। आपका धंधा खेती का है। अब आपको सोचना चाहिये कि हमारे देश में गल्ले की कमी है। यदि आप अपने खेत में सौ मन गल्ला पैदा करते हैं तो आप प्रयत्न कीजिये कि सौ मन के बजाए उन्हीं खेतों में एक सौ दस मन गल्ला होने लगे, जिससे देश में दस मन गल्ले की कमी पूरी हो और साथ ही आपकी आमदनी भी बढ़े। यह ठीक है कि आपके खेतों की पैदावार दस मन बढ़ जाने से देश में गल्ले की कमी पूरी नहीं हो जाएगी। लेकिन अगर हममें से बहुत से काश्तकारों का दृष्टिकोण ऐसा हो जाएगा तो हमारे देश में ही गल्ले की बहुत कुछ कमी पूरी हो जाएगी। जब आप उपरोक्त तरीके पर सोचेंगे तो आप उसकी चरचा दूसरे लोगों में करेंगे, तब हो सकता है यही बातें बहुत से लोग सोचने लगें।

आप देखते हैं सरकार द्वारा बहुत से टैक्स लगाए जाते हैं। जो हम सबको किसी न किसी रूप में देने पड़ते हैं। हममें से कुछ ना समझ लोग कह देते हैं—अरे भाई, सरकार को रुपया चाहिए इस लिए टैक्स पर टैक्स लगते जा रहे हैं। बात इतनी ही नहीं है इससे आगे भी सोचिए :—

जब विदेशी हमें आजाद करके हमारे देश से गए तब हमारे देश की पूरी जनता के खाने के लिए गल्ला, पहनने के लिए कपड़ा और सबके रहने के लिए साफ सुथरे मकान नहीं थे। बाजार में जितनी वस्तुएं हम सबके उपयोग की बिकती थीं, उनमें ९० प्रतिशत वस्तुएं विदेशों की बनी होती थीं। जिस देश की यह हालत हो वह देश दूसरों के भरोसे कब तक जीवित रह सकता है।

यही सब सोच कर हमारे देश में तमाम कल कारखाने खोले गए ताकि वस्तुएं खरीदने के लिए देश के बाहर पैसा न भेजना पड़े। बड़े-बड़े बांध बनाए गए ताकि उनसे हमारे देश के सूखे खेतों को पानी मिले और हमारे कल कारखानों को बिजली मिले। लाखों मकान बनाए गए, बहुत सी सड़कें बनाई गईं ताकि हमारे देशवासियों को इन सबका लाभ

मिले। और इन सब कामों में से हमारे देश के लोगों को धंधा मिले ताकि देश से बेरोजगारी कम हो।

इन सब कामों के लिए रुपया चाहिए था सो यह हम आप सबसे टैक्सों के रूप में लिया जाता है और तब तक लिया जाता रहेगा जब तक भारत के सभी लोगों के उपयोग की वस्तुएं हमारे ही देश में ही न पैदा होने लगेंगी। जब टैक्स से रुपया लेना एक देशव्यापी जरूरत है जो देश और हमारी आने वाली पीढ़ी की बेहतरी के लिए है तो हम उस टैक्स को खुशी से क्यों न दें।

मान लीजिए सरकार ने दस करोड़ रुपयों से सड़कें और मकान बनवाए। इनके बनाने में ईंटा, सीमेंट, लकड़ी, गिट्टी और मजदूरी लगी। यह सब वस्तुएं भारत में ही होती हैं तो फिर वह दस करोड़ रुपया घूम फिर कर हमारे आपके सबके बीच फिर वापस आ गया। सरकार के पास कहां रहा। इस तरह मानों यह हुआ कि जो पैसा देश की जनता ने टैक्स के रूप में सरकार को दिया। वही रुपया वस्तुओं की खरीद और मजदूरी वगैरह में लग कर फिर जनता में फैला दिया गया और सड़कें मकान वगैरह मुफ्त में तयार हो गए। हाँ इसमें थोड़ी सी वह रकम सामान खरीदने के लिए विदेशों को भी चली जाती है जो सामान हमारे देश में नहीं मिलता या बनता। इस बाहर जाने वाली रकम को भी बचाने के प्रयत्न हो रहे हैं। यह कि जितनी कीमत की वस्तुएं हम विदेशों से मंगावें कम से कम उतनी ही कीमत की हमारे देश की बनी वस्तुएँ हम विदेशों को भी भेजें ताकि हमारे देश का धन वस्तुओं की खरीद के कारण विदेशों में न रह जाए।

दुनियां के हर देश को अपनी तरक्की और आत्मनिर्भरता के लिए यही तरीका बरतना पड़ता है जो हमारे देश में बरता जा रहा है। इसी तरह हमारा देश भी आत्मनिर्भर हो सकेगा।

यह सब बातें हमें आपको जाननी चाहिएं, और इस लिए कि जब हमारा देश आजाद नहीं था तो दुनियां में हमारी या हमारे राष्ट्र की कोई

हस्ती नहीं थी। हम अपने दोषों की जिम्मेदारी अपने ऊपर हुकूमत करने वाले विदेशियों पर डाल कर बच जाते थे। परन्तु अब हम एक आजाद राष्ट्र के निवासी हैं। हमारी एक कौम है जिसे दुनियाँ के दूसरे लोगों के मुकाबले में अपनी आत्मनिर्भरता और अच्छाइयों का सुबूत देना है।

हमारे उठने-बैठने-बोलने चालने, व्योहार करने के तरीकों का असर हमारे परिवार और मुहल्ले पर पड़ता है। मुहल्लों का असर हमारे नगरों और हमारे देश पर पड़ता है और उसी के मुताबिक हमारी सभ्यता बनती या बिगड़ती है। इसलिए हमें सभी बातों को सोचने और जानने को प्रयत्नशील रहना होगा। तभी हम अच्छे ढंग पर चल कर अपना और अपने राष्ट्र का मिर्माण कर सकेंगे। राष्ट्र के निर्माण से ही हमारी और हमारी आने वाली पीढ़ी की भलाई होगी।

सोचना और जानना हमेशा जारी रखिए। कुछ लोग कह देते हैं अरे साहब—"कहीं बूढ़ा तोता भी पढ़ता है"। जी हां—बूढ़ा तोता चाहे पढ़े या न पढ़े, पर मनुष्य को बूढ़ा होने तक भी हर बात जानना और सीखना होता है, और सीखना चाहिए भी। हर बात की गहराई तक जानकारी करने ही से आदमी का दृष्टिकोण बड़ा होता है और बड़े दृष्टिकोण वालों को ही हम सब समझदार और बुद्धिमान कहते हैं।

सोचिए, जिस देश की भूमि की मिट्टी और अन्न से आपका शरीर बना है, उस देश का पूरा अधिकार आपके शरीर पर है। देश की जरूरत पर हमें इस शरीर की सेवाएं अर्पण करने में जरा भी आना-कानी नहीं करनी चाहिए।

दूसरों की बुराई को अपनी चरचा का विषय मत बनाइए।

यह विचार कीजिए कि यदि हम देवता नहीं बन सकते तो सही परन्तु हम अच्छे मनुष्य तो बन ही सकते हैं।

अच्छी किताबें ज्ञान मिलने वाली पढ़नी चाहिए न कि कहानियां या नावेल जिसके पढ़ने से कोई मानसिक प्रगति नहीं होती।

:: २८ ::

सेना और सैनिक

हमारे देश में एक अच्छी खासी तादाद सैनिकों की है। देश की सुरक्षा का पूरा भार हमारे इन सैनिकों पर ही होता है। अनुशासन, राष्ट्रीयता तथा सच्चरित्रता के आधार पर ही इन सैनिकों को शिक्षित किया जाता है।

हर सैनिक का कर्तव्य है कि वह अनुशासन (डिसिप्लिन) को अपना पहला और प्रमुख अस्त्र माने। क्योंकि अनुशासन से बढ़ कर सेना के लिए कोई भी ऐसा अस्त्र अभी तक दुनियाँ में ईजाद नहीं हुआ और न आगे कभी भी होगा, जिसे अनुशासन से बड़ा कहा जा सके। जिस सेना में अनुशासन की कमी है, वह सेना बड़ी से बड़ी संख्या की होते हुए भी बेकार है। वह कभी भी अपने शत्रु पर काबू नहीं पा सकती। इस-लिए दुनियाँ के हर मुल्कों में सैनिक को अनुशासन की अहमियत और उस पर अमल करने की बुनियादी सिखलाई दी जाती है। इसलिए हमारे हर सैनिक का कर्तव्य है कि वह अपनी जान रहते हुए अनुशा-सन न छोड़े।

सैनिक शिक्षा तभी पूरी होती है जब सैनिक अनुभव करे कि उसने (१) पूरी तरह अनुशासन मानना सीख लिया है। (२) उसने अपने अफसर के हुक्म को बिना हील-हुज्जत के मानना सीख लिया है। (३) अपने राष्ट्र के लिए पूरी तरह से वफादारी और राष्ट्र की मांग पर देश के हमलावरों के सर कुचल देने के लिए अपनी जान का मोह

थ करना जान लिया है। ऐसे ही सैनिकों पर भारत की जनता गर्व करती है।

हमारे सैनिकों को सेना संबन्धी कोई बात कभी भी गैर सैनिकों से नहीं करनी चाहिए। क्योंकि उन गैर सैनिकों में हमारे राष्ट्र के दुश्मन का एजेंट भी हो सकता है जो हमारी सेना की जानकारी के भेद जानने के प्रयत्न में हो।

चाहे लड़ाई के दिन हों, चाहे दुश्मन के हमला होने की सम्भावना के दिन हों या न हों, हर सूरत में सेना की हर गतिविधि, और सेना की शक्ति की बातें गोपनीय रहनी चाहिए। सेना के एक एक सैनिक का राष्ट्रीय और नैतिक कर्तव्य है कि वह सेना का कोई भी भेद कभी भी किसी को न बताए, और न ऐसे तरीके बरते जिससे कोई दूसरा व्यक्ति इन बातों को जान सके। क्योंकि इन बातों की गोपनीयता भंग हो जाने से हमारे देश व सेना की सुरक्षा खतरे में पड़ जा सकती है। इसलिए सैनिक को अपनी ज़ान देकर भी अपनी सेना के भेद छिपाने चाहिए।

हमारे सैनिकों को आपसी बात चीत या हंसी मजाक में कभी भी कायरता या ढीलेपन की बातें नहीं करनी चाहिए। बल्कि अपने को अपने महान देश का महान वीर सैनिक मानकर बात करनी चाहिए। सैनिकों को अपने अफसरों की आज्ञा पर हर काम करने को हर वक्त तयार रहना चाहिए। उन्हें अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद और सजग रहना चाहिए। सैनिक को अपने सुपुर्द हुआ कोई हथियार किसी भी गैर सैनिक या दूसरे व्यक्ति के हाथ में कभी भी नहीं देना चाहिए चाहे वह कितना ही बड़ा मित्र क्यों न हो। सैनिक को अपने पर, अपने हथियार पर और अपने अफसर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। सैनिकों को अपने साथी सैनिकों से हमेशा दोस्ताना व्यौहार रखना चाहिए। राष्ट्रहित के लिए सैनिक द्वारा किया गया हर काम पवित्र माना जाता है, इसलिए अपने अफसर द्वारा दिए गए हर काम को खुशी खुशी करना चाहिए।

सैनिकों को अपने उस्ताद या इंसट्रक्टर की डांट या जोर से बोल देने पर कभी भी बुरा नहीं मानना चाहिए। क्योंकि उस्ताद का ओहदा गुरू का होता है और गुरू की डांट का मंशा हमेशा शिक्षा देना होता है। हमारे देश में गुरू का ओहदा बाप से भी बढ़ कर पवित्र माना जाता है, तभी उनसे अच्छी शिक्षा मिलती है।

सैनिकों का नागरिकों से मिलना जुलना बहुत कम हो पाता है। लेकिन जब भी कभी जनता के बीच जाने का मौका मिले तो उन्हें हमेशा नागरिकों से प्रेम व्यौहार का बर्ताव करना चाहिए। अपने देश के सैनिकों के लिए नागरिकों के मन में बड़ी श्रद्धा की भावना होती है। हर सैनिक को ऐसे तरीके बरतनें चाहिए जिससे नागरिकों की श्रद्धा भावना पर जरा भी आंच न आने पावे।

रस्सा–कशी (टग आफ वार) का खेल तो सभी सैनिक खेलते हैं। आप देखिए, दोनों तरफ बराबर बराबर जवान होते हैं और दोनों टीम के जवान रस्सा अपनी अपनी तरफ खींचते हैं। जो टीम, रस्सा अपनी तरफ खींच लेती है, वह टीम जीत जाती है। इस खेल से यह सबक मिलता है कि सैनिकों में टीम स्प्रिट याने मिल जुल कर काम की भावना बढ़े। टीम स्प्रिट का मतलब है, जितने साथी हमारे हैं वह सब एक दूसरे की मदद और सामूहिक ताकत से हमला करके जीतने की कोशिश करते हैं। यही टीम भावना सैनिक में हर जगह, हर सैनिक साथी के लिए होनी चाहिए। बड़ी बड़ी लड़ाइयां भी इसी टीम भावना से जीती जाती हैं।

हमारी सेना की कुछ टुकड़ियों को दूसरे देशों के आपसी झगड़ों में शान्ति स्थापन कार्य के लिए राष्ट्र संघ की ओर से जब कब विदेशों में भी जाना पड़ जाता है। इससे यह लाभ भी होता है कि हमारे सैनिकों को विदेशों में विदेशी सेनाओं के सम्पर्क में आने से कुछ नई बातें देखने, जानने का मौका मिल जाता है।

विदेशों में हमारी सेना के तर्ज तरीके, चरित्र और अनुशासन को विदेशी सैनिक और वहां की जनता बड़े ध्यान से देखती है। वे इन्हीं सैनिकों के तर्ज तरीकों से हमारे देश और सेवा की अच्छाई बुराई अन्दाजते हैं। वहाँ जाने वाले हमारे सैनिकों को बहुत सतंक रहना चाहिए। वहां उन्हें अपना चरित्र, व्यौहार अनुशासन और रहन सहन ऐसा रखना चाहिए जिससे विदेशी लोगों पर हमारे देश और हमारी सेना के लिए अच्छा असर पड़े।

सैनिकों को अपनी निजी चिट्ठी पत्री में सेना सम्बन्धी कोई भी बात हरगिज नहीं लिखनी चाहिए। मृत या जख्मियों के बारे में भी कोई बात दूसरे को नहीं बतानी चाहिए। सैनिकों को सेना की जिन बातों की जानकारी होती है या वे बातें जिनकी जानकारी सैनिक को सुनने सुनाने से हो जाए, सभी बातें सैनिकों को अपने दोस्तों नागरिकों, रिश्तेदारों या गैर जानकार सैनिकों से भी छुपा कर रखनी चाहिए।

हमारे उन सैनिकों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, जो सीमा पर हमारी चौकियों या उस क्षेत्र की हिफाजत के लिए तैनात होते हैं। वैसे तो हिफाजत के तरीके उनके अफसर उन्हें बताते ही हैं। जिन पर उन्हें ध्यान से अमल करना चाहिए। ऐसे सैनिकों को अपनी ड्यूटी में चौकन्ना और सतंक रहना चाहिए। क्योंकि जरा सी लापरवाही से वे अपने और अपनी चौकी को खतरे में डाल सकते हैं। हिफाजत की आज्ञाओं में मीन मेख निकालना सैनिक का कर्तव्य नहीं है। सीमा पर लगे सैनिकों को इस बात से भी सतर्क रहना चाहिए कि हमारे विरोधी देशों के सैनिक जो सीमा के उस पार लगे हैं, कभी भी अपने छल बल से हमें हानि पहुंचा सकते हैं। उनके दांव-पेच पर हमेशा पैनी निगाह रखनी चाहिए। सीमा के पास रहनेवाले उन नागरिकों से भी सावधान रहना चाहिए, क्योंकि उनमें कोई विरोधी राष्ट्रों के एजेंट भी हो सकते हैं।

सीमा की रक्षा के हालात व लड़ाई के होते हैं और न शान्ति समय की तरह के। इसमें बुद्धि का उपयोग ज्यादा करना होता है। हमारा विरोधी धोखे से हमें मात देना चाहता है या हमारी हानि कर देना चाहता है।

एक पुरानी, लेकिन सच्ची कहानी है :—

सीमा पर हमारी चौकी के गार्ड रूम में संतरी तैनात था। शाम का झुटपुटा वक्त था। दो कबायली गार्ड रूम के बाहर गार्ड रूम से थोड़ी सी दूर पर आकर आपस में लड़ने लगे। उनकी लड़ाई, कुश्ती, मारपीट, करीब घन्टा भर तक चली। उस लड़ाई को सन्तरी भी दिलचस्पी के साथ देखता रहा। लड़ाई खत्म होने के बाद मालूम हुआ कि गार्ड रूम से राइफलें चोरी हो गईं।

चौकी के हर सैनिक को और हर संतरी को अपने काम में इतना सतर्क रहना चाहिए कि कोई किसी तरह की दुर्घटना न होने पावे।

:: २९ ::

नागरिक पुलिस

नागरिक पुलिस बल के सैनिकों का काम जनता के सम्पर्क का होता है। पिछली विदेशी हुकूमत में हमारी पुलिस देश के शान्ति-प्रिय नागरिकों की शुभ कामनाएं प्राप्त करने में कामयाब नहीं हुई। परन्तु आज देश आजाद है और देश के सभी लोगों की मांग है कि हमारे पुलिस बल की नैतिकता बढ़े ताकि उन पर जनता का विश्वास बढ़े। इसके लिए हर छोटे बड़े पुलिस सैनिक को कोशिश करनी चाहिए।

पुलिस सेवा का कार्य कठिन भी बहुत है। उसे एक तरफ तो दोषी लोगों को दंड दिलाना पड़ता है, दूसरी तरफ ऐसे दोषी लोगों के सम्बन्धियों को जिनमें कुछ अच्छे भले लोग भी होते हैं, प्रसन्न रखना होता है। दोनों बातें एक दूसरे से अलग होती हैं। इसलिए पुलिस बल को बड़ी कठिनाइयां भी होती हैं। फिर भी पुलिस बल यदि अपने चरित्र को निर्मल रख सके तो बहुत कुछ कठिनाई दूर हो सकती हैं, और वह शान्तिप्रिय जनता की शुभ कामनाएं प्राप्त कर सकता है। उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि कानून समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए बनाए गए हैं न कि कानून के लिए समाज बनाया गया है।

पुलिस को जनता से सद्व्यौहार रखना चाहिए, उनसे किसी प्रकार के लालच की इच्छा तक नहीं करनी चाहिए। उन्हें जनता से कभी भी द्वेष भावना नहीं रखनी चाहिए। निर्दोष लोगों को कानून की गिरफ्त में नहीं फंसने देना चाहिए। अपनी बुद्धिबल से कभी भी ऐसा मौका नहीं आने देना चाहिए जिससे जनता कानून तोड़ने को

उत्तेजित हो जाए। जनता की उत्तेजना जहाँ तक सम्भव हो बुद्धिबल से शान्त करना चाहिए।

पुलिस के सैनिकों को जनता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए और उनसे बहुत ही नम्रता का व्योहार करना चाहिए। कानून तोड़ने वाले कानून न तोड़ने पावें इस बात की अग्रिम व्यवस्था रखनी चाहिए। उन्हें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पुलिस के मुंह लगे लोग अनैतिक या गैर कानूनी कार्य न करने पावें। शान्तिप्रिय लोग पुलिस से आतंकित या भयभीत हों ऐसे आचरण कभी नहीं करने चाहिए।

पुलिस के पास दुख पाए हुए लोग पहुंचते हैं। जिस तरह एक अच्छा डाक्टर मरीज को देखने पर अपने सद्व्योहार से मरीज के कष्ट को हलका कर देता है, उसी प्रकार पुलिस को भी दुखी जनता से बहुत ही नम्रता पूर्वक व्योहार करना चाहिए।

दोषी आदत का व्यक्ति अगर ईमानदारी से सच्चरित्र और शान्ति-प्रिा बनने का प्रयत्न करता है तो उसे उसके सद्-प्रयत्नों में सहयोग करना चाहिए।

पुलिस बल की वरदी कानून, अनुशासन और शान्ति व्यवस्था की प्रतीक है, उस वर्दी को पहन कर पुलिस कर्मचारी को कोई ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए जिससे उस वर्दी का सम्मान जनता की नजरों में घटे।

पुलिस बल के लोगों को शारीरिक बल के बजाए अपनी बुद्धि बल पर ज्यादा भरोसा करना चाहिए और बुद्धि बल से ही कानून और व्यवस्था कायम रखने का प्रयत्न करना चाहिए। पुलिस को होने वाले जुर्मों की किस्म में तोड़-मरोड़ नहीं करनी चाहिए। इससे अग्रिम व्यवस्था करने में बहुत जगह कठिनाइयाँ पड़ जाती हैं।

पुलिस बल के सभी लोगों को स्वयं भी हर कानून का पालन करना चाहिए। इससे जनता पर बहुत अच्छा असर पड़ता है।

जनता के भी, अपनी रक्षक पुलिस के प्रति बहुत से कर्त्तव्य हैं। जिन्हें हम लोगों को निभाना चाहिए। अगर पुलिस बल का अस्तित्व न हो तो देश भर में गुंडों, बदमाशों और अताताइयों का राज्य हो जाए। किसी की न तो इज्जत बचे और न कोई व्यक्ति धन लेकर ही एक कदम चल सके। जब समाज की इतनी बड़ी जिम्मेदारी का काम पुलिस संभाले हुए है तो उससे उसी तरह गलतियां हो जाना भी संभव है, जिस तरह हम आप अक्सर अपने काम में गलतियां कर लेते हैं, पुलिस की गलतियों का एक कारण सबसे बड़ा यह होता है कि दोषी लोगों को दंड दिलाने में उन्हें जनता से सहयोग नहीं मिल पाता। इसकी वजह यह है कि हम लोग पुलिस की टीका टिप्पणी करने में तो पीछे नहीं रहते, परन्तु उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने से दूर भागते हैं।

पुलिस के प्रति अपने कर्त्तव्यों को न निभा कर हम अपनी तथा अपने मुहल्ले के सुरक्षा प्रयत्नों से दूर भागते हैं और फिर दोष देते हैं दूसरों को। अगर हम सुरक्षा प्रयत्नों में पुलिस को सहयोग करें तो पुलिस के लोगों की गलतियां भी कम होंगी और हमारे रक्षा प्रयत्न भी बेहतर हो जाएंगे जिससे हमारी शान्ति सुरक्षा और ज्यादा मजबूत हो जाएगी।

आपके सामने एक चोर को पुलिस पकड़ती है, परन्तु आप उस सच्ची बात की गवाही देने में भागते हैं। आपको मालूम है कि कल्लू नाम के व्यक्ति ने चोरी की है और पुलिस कल्लू की तलाश में है। अगर कल्लू आपका परिचित व्यक्ति है तो कल्लू को देखकर भी आप उसे पुलिस में नहीं देते हैं। पुलिस ने नत्थूलाल नाम के व्यक्ति को पकड़ा, पुलिस को पूरा यकीन है कि नत्थूलाल ने धोखादेही का जुर्म किया है। परन्तु नत्थूलाल आपका या आपके रिश्तेदार का रिश्तेदार है या आपके किसी मिलने वाले का रिश्तेदार है इस लिए आप पुलिस पर अपने प्रभाव का दबाव डालकर या दूसरे तरीकों से पुलिस से छुड़ा

लाते हैं । आपकी अपने किसी पड़ोसी से शत्रुता हो गई, पुलिस पर आप बेजा दबाव डालकर पड़ोसी को फंसवा देते हैं ।

तो आप बताइये इनमें से कितनी जगह आपने अपनी जिम्मेदारी निबाही, और नहीं निबाही तो क्यों ? इसलिए कि हम आप अपने चरित्र के पक्के नहीं हैं ।

हम चाहते हैं कि हमारे जाने माने लोगों के जुर्म करने पर भी, पुलिस उन पर कोई कार्रवाई न करे, और जब वे किसी दोष में पकड़ भी लिए जांए तो हम हर अच्छे, बुरे तरीकों से उन्हें छुड़ाने में कामयाब हो जांए । परन्तु जो बुरे लोग हमसे परिचित नहीं हैं उन्हें पुलिस खूब सजा दिलवाए, और तमाशा यह है कि यह बात हम ही नहीं बल्कि हर समझदार व्यक्ति भी यही चाहता है, तो कैसे पुलिस उचित काम करे ।

हमारा सामाजिक धर्म है कि हम समाज की शान्ति सुरक्षा के कार्यों में कानून को अपना सहयोग दें ताकि पुलिस को अपने कर्तव्य पालन में कठिनाई न हो ।

:: ३० ::

नागरिक सुरक्षा

पिछले चीनी हमले ने हमारे देश को सतर्क कर दिया है कि हमारे देश को हर परिस्थिति के लिये हर समय तयार रहना चाहिए। भारत एक शान्तिप्रिय देश है उसकी नीति किसी देश पर हमला करने की नहीं है। परन्तु अपने देश को दूसरों के हमले से बचाने के लिए यदि हम हर समय तयार नहीं रहते हैं तो हमारी आजादी किसी वक्त भी खतरे में पड़ सकती है।

नागरिक सुरक्षा का जो काम सरकार का है वह तो सरकार कर ही रही है। परन्तु उनमें जो काम हम नागरिकों के करने के हैं उनसे हमें उदासीव नहीं रहना चाहिए। और न यही सोचना चाहिए कि आज देश पर किसी दुशमन का हमला नहीं है तो नागरिक सुरक्षा के प्रति उदासीन हो जाएं। दुनियां के राजनैतिक हालात से देश का बच्चा बच्चा जानकारी रखता है, और कौन कह सकता है कि कोई हमारा विरोधी राष्ट्र हम पर कब हमलावर न हो जाएगा। यह ठीक है कि हमारे राष्ट्र पर जो भी हमला करेगा उसे अब मुंह की खानी पड़ेगी, पर उस समय, जब हम अपनी रक्षा के लिए खुद भी तैयार रहेंगे।

लड़ाई के हालात होने पर कोई भी परिस्थिति आ सकती है। हो सकता है दुश्मन हमारे नगरों पर बमबारी करे। ऐसे हालात में हमें अपने घर, मुहल्ले और नगर की रक्षा का भार स्वयं उठाना होगा। इसके लिए हम सबको शिक्षित होना चाहिए। इसमें, घायलों की सेवा

सुविधा उनका प्राथमिक उपचार करना नागरिकों को मलवे से निकालना, आग बुझाना, वगैरह काम की शिक्षा लेना आवश्यक है।

जिस तरह हम अपने दूसरे काम रोजाना जानते रहते हैं उसी तरह हम सभी नागरिकों को सुरक्षा की जानकारी रखना आवश्यक है।

कठिन समय में, हो सकता है हमारी पुलिस ऐसे युद्ध कार्यों की मदद में लग जाए जो देश की सुरक्षा के लिए नागरिक सुरक्षा से भी ज्यादा आवश्यक हो, उस समय हो सकता है कहीं कहीं पुलिस के कार्यों की जिम्मेदारी भी नागरिकों को ही लेनी पड़े। ऐसे समय के लिए हमें उन गृह सैनिकों की भी जरूरत होगी जो गृह रक्षा में जनता की मदद करें। हर नगरों में प्रान्तीय रक्षक दल और होम गार्ड संगठित किए जा रहे हैं। इनको सैनिक शिक्षा भी दी जाती है ताकि मौका पड़ने पर वे गृह रक्षा में दुश्मनों का भी मुकाबला कर सकें। दुश्मनों के अलावा, लूटमार, चोर, डकैत जो कठिन समय में जनता को हानि पहुंचावें, उनसे भी ये हम सबके साथ मिलकर हमारी रक्षा कर सकेंगे। इसलिए जनता को इन संगठनों में शामिल होकर सैनिक शिक्षा भी ले लेना चाहिए। सैनिक शिक्षा लेने से हमारा दृष्टिकोण भी विशाल हो जाता है।

इन सब प्रकार की शिक्षा लेने वाले लोगों को भी अपना चरित्र निर्मल रखना चाहिए। क्योंकि कठिन समय में इन सैनिकों के सामने धन के ढेर आ जाएंगे ऐसी हालत में उन्हें अपने लालच पर काबू रख कर उस धन की हिफाजत करनी होगी ताकि धन उसके मालिक के पास सही सलामत पहुंच जाए। इन सैनिकों के सामने अकेली दुकेली महिलाएं भी आ सकती हैं जिनके शील की रक्षा करना सैनिकों का पुनीत कर्तव्य होगा। उनके सामने घायलों की चीख पुकार आ सकती है, हर प्रकार के कष्ट उठा कर उनको सुविधा पहुंचानी होगी।

यही नहीं, इन गृह सैनिकों को उस कठिन समय में अपने साहस, सच्चरित्रता और बुद्धि बल से ऐसे तरीके बरतने होंगे जिससे जनता

में आतंक या घबराहट न पैदा होने पावे। चोर, डाकू, बदमाश लोग लूटमार न करने पावें, देश के अंदरूनी दुशमन राष्ट्र की सम्पत्ति को हानि न पहुंचाने पावें। और जनता की नैतिकता न घटने पावे यह सब व्यवस्था हमारे गृह सैनिकों को ही करनी पड़ेगी।

ऐसे कठिन समय में जिस देश की जनता का मानसिक संतुलन और नैतिकता कायम रहती है उस देश को कोई भी दुश्मन कभी भी हरा नहीं सकता।

पिछले द्वितीय महायुद्ध में जरमनी के हवाई हमले इंगलैंड पर बराबर कई वर्षों तक होते रहे। इन हमलों में लाखों घर बरबाद हो गए और लाखों व्यक्तियों की जानें गईं। बीसियों मोरचों पर वर्षों तक इंगलैंड हारता भी रहा। फिर भी इंगलैंड निवासी जनता की नैतिकता पर जरमनी काबू नहीं पा सका। रोज रात में बमबारी होती थी, और दिन भर बमबारी से बचे हुए कारखानों में युद्ध में काम आने वाला माल तयार होता था। यही नहीं, जनता के रोजाना काम आने वाली हर वस्तुएं खेती, कपड़ा मिलों आदि के सब काम बदस्तूर चलते रहते थे। इंगलैंड निवासी "हो गए नुकसान" को लेकर नहीं रोते थे। बल्कि "अब क्या काम करना है" इस पर जुट जाते थे। इस प्रकार उन्होंने अपनी नैतिकता को नहीं गिरने दिया और न जनता ने अपने दिलोदिमाग का संतुलन खोया, जिसका नतीजा यह हुआ कि अन्तिम जीत इंगलैंड की ही हुई।

भगवान न करे कि ऐसा हो, परन्तु जब हमें आज़ादी के साथ जिन्दा रहना है, तो हमारी तरक्की को देखकर दूसरे ईर्षालु देश कभी भी हम पर हमलावर हो सकते हैं। जिसके लिए पहले ही से हमारे देश के एक एक व्यक्ति को अपना चरित्र बनाकर रखना होगा तभी हम दुशमनों को मुंहतोड़ उत्तर दे सकेंगे।

ऐसी कायरता का जवाब किसी को नहीं देना चाहिए कि "हमारी इच्छा—हमें नागरिक सुरक्षा से क्या मतलब"।

एक बात हम सबको समझ लेना चाहिए कि यदि सन १९४७ की आजादी से पहले हमारे ऊपर कोई दूसरा देश हमला करने की सोचता, तो उसे यह सोचना पड़ता कि वह भारत पर नहीं बल्कि इंगलैंड पर हमला कर रहा है क्योंकि उस समय इंगलैंड जैसे बड़े साम्राज्य की क्षत्रछाया में हमारा देश था। उस समय हमारी रक्षा इंगलैंड को ही करनी होती। पर अब हम इंगलैंड की क्षत्रछाया से मुक्त है और हमारी अपनी स्वतन्त्र हस्ती है। अब हम पर जो हमला करने की सोचेगा वह हमारे बल से ही अपने बल की तुलना करेगा। बल की तुलना दो प्रकार से होती है, एक सेना और हथियार से दूसरा हमारा चरित्र बल, हमारी नैतिकता और एकता से, यदि हमारे चरित्र बल, नैतिकता और एकता को दुशमन ने कमजोर अंदाजा तो उसे हम पर हमला करने को प्रोत्साहन मिलेगा।

इसलिए हमें अपने चरित्र, नैतिकता और एकता को हर सूरत में संभाल कर रखना होगा तभी हम अपने दुशमनों के हौसले पस्त कर सकते हैं।

:: ३१ ::

हमारा आडम्बर

हममें से कुछ लोग आडम्बर या झूठी विडंबना से पीड़ित रहते हैं। इसका मतलब है कि असलियत को छिपा कर नकली बातों का प्रदर्शन करना और असलियत से शर्माना।

आप किसी कार्यालय में काम करते हैं, एक दिन आपने देखा कि आपका साथी कर्मचारी बहुत कीमती सूट पहन कर दफ्तर आया है। उस सूट की चरचा और तड़क भड़क देख कर आपकी झूठी विडंबना जागी। आपने आगा पीछा कुछ नहीं देखा तुरन्त उसी तरह का सूट आपने भी बनवा डाला। चूंकि उस तरह का कीमती सूट पहनना आपके आर्थिक स्तर से ऊंची बात थी इसलिए आपको इसके बनवाने के लिए कर्ज भी लेना पड़ा। जबकि आपके साथी को वह कीमती सूट अपने रिश्तेदार से व्यौहार में मिला था या उसके भाई ने जो एक ऊंचे आर्थिक स्तर का व्यक्ति था, उसे भेंट किया था। आपने जिसकी नकल की उसका तो कुछ नहीं बिगड़ा परन्तु आपको, उस सूट के लिए लिया गया कर्जा अदा करने के लिए कई महीने कष्ट उठाना पड़ा, क्योंकि आप इतना कीमती सूट बनवाने की स्थिति में नहीं थे।

ब्याह शादी के मौकों पर हम झूठी बिडंबना और "लोग क्या कहेंगे" के झूठे दबाव में हम न जाने कितना धन फिजूल में खर्च कर डालते हैं। लम्बी लम्बी बारातें ले जाना, सैकड़ों रुपये की आतशबाजी फूंकना, बड़े बड़े दिखावे करना, यह सब पुराने रूढ़िवादी आडम्बर ही तो हैं। उसे एक दो दिन की वाहवाही लूटने के लिए फिजूल खर्च करके हम

अकसर लम्बे कर्जदार भी बन जाते हैं। "लोग क्या कहेंगे" खुद एक आडम्बर है जिससे हमें अपना पीछा छुड़ाना चाहिए। हमें हर मसले में अपनी परिस्थिति और स्तर के हिसाब से चलना चाहिए।

यदि हम अच्छे कीमती कपड़े पहने हुए, तड़क भड़क वाले मित्रों के बीच बैठे हैं और वहाँ हमारा कोई ऐसा रिश्तेदार या मित्र जो मामूली देहाती रहन सहन का है मिल जाता है तो हम झूठी विडम्बना के कारण उससे अपने को सम्बन्धित बताने में शर्माने लगते हैं। बल्कि शीघ्र ही अकारण यह घोषित कर देते हैं कि उक्त व्यक्ति से हम किसी प्रकार से सम्बन्धित नहीं हैं। ऐसा करके हम अपने उन सीधे सादे सम्बन्धियों की बेइज्जती करते हैं। वह भी इसलिए कि हम दूसरों को नहीं बताना चाहते कि ऐसे घटिया लोगों से हमारी मित्रता या रिश्तेदारी है। हमारी यह बात कितनी ओछी है। हमें यह सत्यता जान लेनी चाहिए कि सभी बड़े कहे जाने वाले लोगों के मित्र या सम्बंधी छोटे और गरीब व्यक्ति भी होते हैं।

आज कल के पढ़े लिखे बहुत से नवयुवक जिनकी समझ और बुद्धि परिपक्क नहीं होती है इस झूठी विडम्बना के रोगी होते हैं। वे मामूली दिखने वाले मजदूर, किसान या गरीब लोगों से अपने को अलग रखने में अपनी इज्जत समझते हैं। इसे वास्तव में रोग ही कहना उचित होगा क्योंकि आज के इस प्रजातन्त्र के युग में जहां जाति-पांति, छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, व छुआ-छूत का फर्क मिटाने के लिए बड़े बड़े "वाद" चल रहे हैं और प्रजातांत्रिक समाजवाद को तो हम भी मान चुके हैं, वहां हमारी ऐसी भावनाएं होना हमारे पिछड़े पन की निशानी है।

यदि हममें चरित्र है, बुद्धि है, समझ है तो हमारा आदर सादे और स्वच्छ कपड़ों में भी सब जगह होगा। जब लोग जान जाते हैं कि हम अपने स्तर से ऊपर- अपना दिखावा कर रहे हैं, तो लोग हमें अच्छा व्यक्ति नहीं समझते हैं।

इसी आडम्बर का उपयोग हम अपने हाथ से काम करने में शर्म करके भी बहुत जगह करते हैं। कोई मित्र या मुलाकाती घर में आ जाए तो उसकी खातिर के लिए हम दूसरों को ढूंढते हैं। अपने घर में कोई मेहमान आ जाए और हम कोई काम कर रहे हैं तो हम तुरन्त यह बताने की कोशिश करेंगे कि हमारा वह काम दूसरे लोग करते हैं, परन्तु इस समय हम उस काम को करके अपना मन बहला रहे थे। कितना छोटा दृष्टिकोण होता है हमारा।

विदेशों में बड़े बड़े लखपती, करोड़पती लोग बहुत से अपने काम खुद अपने ही हाथों से कर लेते हैं और अपने हाथ से किया गया काम लोगों को शौक से बताते और दिखाते हैं। वे कभी भी काम करने में हीनता नहीं मानते हैं। इसी तरह और आडम्बरों से भी वे दूर रहते हैं।

हम सभी अगर झूठी विडम्बना छोड़ दें तो कुछ दिनों में हमारे देश में भी हाथ से काम करने की झिझक खत्म हो जाए।

इसी आडम्बर प्रवृत्ति के कारण हम अपने को वह जाहिर करते हैं जो हम नहीं हैं। इससे हमारी जो अपनी असली प्रतिष्ठा है उस पर भी धक्का लगता है। हम क्यों न असली प्रवृत्ति के प्रति अपने में और दूसरे लोगों में अच्छी भावना पैदा करें।

:: ३२ ::

हमारे गाँव

हमारे देश की लगभग ८० प्रतिशत जनता देहातों में ही रहती है। यह बात बड़े गर्व से कही जा सकती थी कि सच्चरित्रता में हमारे गाँव हमारे नगरों के मुकाबले में आगे रहे हैं। परन्तु इधर कुछ वर्षों में नगरों का प्रभाव हमारे गाँवों पर भी पड़ने लगा है जिससे वहां दलबन्दी, लड़ाई झगड़े, मुकदमे, मार-पीट अब ज्यादा होने लगे हैं।

देश की स्वतंत्रता के बाद हमारे देहातों में गाँव के लोगों को ग्राम-पंचायतें बनाने के अधिकार दिए गए हैं। ये ग्राम-पंचायतें अपने यहां के आपसी झगड़ों के मुकदमों के फैसले भी करते हैं। देहातों में जो विकास हो रहे हैं उन विकास-कार्यों में भी गाँव के लोगों का सहयोग प्राप्त किया जाता है। और संभावना यह है कि आगे चल कर गाँव के लोगों को और भी ज्यादा अधिकार दिये जाएं।

इन सब जिम्मेदार लोगों का जनता से ही चुनाव किया जाता है। देहातों की दलबन्दी और आपसी मतभेदों के कारण गाँवों में सुख, शान्ति की कमी होगई है। गाँवों से जमीदारी खतम हो गई है, परन्तु जमीदारी भावनायें कुछ लोगों में अब भी घर किए हुए हैं।

जो लोग शक्तिशाली हैं वे कमजोरों को अपने बंधन में रखना चाहते हैं। जो उनके बंधन में नहीं रहना पसंद करते उन्हें हर तरह से परेशान करके काबू में किया जाता है। यह सब चरित्रहीनता की बातें हैं जिन पर हमारे गाँव के समझदार लोगों को ध्यान देना चाहिए।

गाँवों में शिक्षा की अभी कमी है। लोगों को चाहिए कि अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने का पूरा प्रयत्न करें। गाँव के लड़कों को शिक्षा दिला कर उन्हें गाँव में ही आबाद करना चाहिए। पढ़े लिखे लड़के गाँव की जिन्दगी को अप्रिय समझने लगते हैं उनकी इस भावना को रोकना चाहिये। क्योंकि शहर में सिवाय इसके कि वे ९०) या १००) के क्लर्क बन जाँए और कुछ नहीं कर सकते। शहर में ही हजारों लड़के क्लर्की के लिए मारे मारे फिरते हैं उन्हें नौकरी नहीं मिलती।

गाँव के लड़के पढ़ लिख लेने के बाद यदि गाँव में ही आबाद हों तो वे अपनी खेती बाड़ी में और ज़्यादा तरक्की कर सकते हैं। नई नई किताबें पढ़ लिख कर नए नए तरीकों से खेती की उपज बढ़ा सकते हैं। जो लड़के खेती न कर सकें वे देहातों में छोटे छोटे धंधे जैसे—लकड़ी के फरनीचर, खिलौने बनाने का काम, चमड़े का काम, तेल घानी का काम, हाथ के बने कागज का काम, कपड़ा बनाने का काम, इसी तरह के और बहुत से कम लागत के काम करके देहात में ही रोजी पैदा कर सकते हैं। साथ ही गाँव में रोजगार होने से और भी बहुत से लोगों को काम मिल सकता है। देहातों में काम करने के लिये सरकार भी बड़ी बड़ी सुविधाएं देती है। यदि इस तरह के धंधे "कोआपरेटिव" ढंग पर किये जाएं तो उनमें सरकार धन की भी सहायता करती है।

हमारे गाँव में समझदार लोगों को गाँव की सफाई पर भी ध्यान देना चाहिए। कुओं के पास और घरों के बाहर नाली बना कर पानी का निकास कर देना चाहिए इससे मकानों और कुओं में गंदगी नहीं होती और मच्छर भी पैदा नहीं होते। जानवरों के बांधने के स्थान साफ और पक्के रखने चाहिये।

हैजा, और चेचक के टीके बीमारियाँ शुरू होने से पहले ही लगवा लेने चाहिए। इनसे बीमारियाँ काबू में रहती हैं। इस बात को देखते रहना चाहिए कि सभी बच्चों को चेचक का टीका लग गया है।

देहात के बहुत से लोगों में बात बात पर गाली गलौज करने या लाठी चलाने की भावना बहुत होती है। सामाजिक मसलों में लाठी और गाली का जमाना अब नहीं रहा है। अब बुद्धि युग है। हर मसले को बुद्धि से तय करना चाहिए। लाठी और गाली से कोई भी सामाजिक मसले कभी भी हल नहीं होते हैं। बल्कि इन तरीकों से वे हमेशा बढ़ते हैं। गाँव गाँव में पंचायतें इसीलिए बनी हैं जिससे लोग आपसी मसले पंचायतों में हल कर लिया करें। न्यायप्रिय और समझदार लोगों को इन पंचायतों पर विश्वास करना चाहिये।

पंचायत के पंचों को भी चाहिए कि जब वे पंचायत के आसन पर बैठें तो यह भूल जांए कि उन्हें किसी के साथ रियायत या किसी के साथ सख्ती बरतनी है। "पंच परमेश्वर" कहा जाता है अपने को वही मान कर शुद्ध न्याय करना चाहिए। तभी गाँव की जनता का विश्वास इन पंचायतों पर बढ़ेगा।

गाँव के लोगों को उन परिवारों की पूरी तरह संभाल और देखभाल रखनी चाहिए जिन परिवारों के पुरुष देश की सेवा के लिए सेना में काम कर रहे हैं। गाँव के लोगों को इन सैनिकों को विश्वास दिला देना चाहिए कि उनके परिवार की हिफाजत और देख भाल गाँव के लोग जी जान से करेंगे। ताकि हमारे सैनिकों को घर की कोई चिन्ता सैनिक सेवा में बाधा न डाले। गाँव वालों का यह कार्य अप्रत्यक्ष रूप में राष्ट्रीय सेना की भलाई का कार्य माना जाता है।

गाँव के जो लोग नगरों में अपनी गाड़ियाँ लेकर आते हैं उन्हें नगरों के यातायात कायदे जानना चाहिए, और उन्हीं नियमों से अपनी गाड़ियाँ चलानी चाहिए। नगर के यातायात कानून कायदे न जानने से कभी कभी गाँव वाले कठिनाई में पड़ जाते हैं। गाँव के समझदार लोगों को यह कायदे गाँव वालों को बताना चाहिए।

गाँव के लोग मेहनत के धनी होते हैं। अपनी खेती-बाड़ी के काम

से कुछ समय निकाल कर अगर गाँव के लोग अपने गाँव की सफाई और कच्चे रास्तों को हमवार करने का काम जब कब सामूहिक रूप से करते रहें तो गांव की शोभा में चार चाँद लग जाएं।

देश की आबादी के साथ साथ गाँवों की आबादी भी तेजी से बढ़ रही है और हर गाँवों में मकानों की संख्या भी बढ़ रही है। नये बनने वाले मकान अगर कायदे से एक लाइन में बनाए जाएं तो गांव के नक्शे में खूबसूरती भी आ जाए और निकलने के लिए रास्ते भी चौड़े बने रहें। हर मकानों में साफ हवा और रोशनी आने के लिए रोशनदान भी बनाने चाहिए। पुराने मकानों में भी यदि रोशनदान न हों तो बनवा देने चाहिए। यह स्वास्थ्य के लिये बहुत जरूरी है।

:: ३२ ::

भ्रष्टाचार

हमारे देश की सभी जनता भ्रष्टाचार की ओर उंगली उठा रही है। यह ठीक है कि यह रोग समाज में व्यापक रूप से छाया हुआ है। और यह भी सही है कि यह बुराई "भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार" चिल्लाने से नहीं जा सकेगी, बल्कि हमें आपको इस पर ठंडे दिल से विचार कर इसका इलाज करना होगा, तभी यह भ्रष्टाचार दूर होगा।

भ्रष्टाचार की शुरुआत उस जगह से होती है जब हम गैर कानूनी या अनअधिकार कार्य दूसरों से कराना चाहते हैं। दूसरा व्यक्ति जब हमारा गैर कानूनी काम नहीं करता है तो हम उसे लालच देकर भ्रष्ट करके अपना गैरकानूनी काम करा लेते हैं। जब वह व्यक्ति हमारे लालच से भ्रष्ट हो जाता है तब वह हमारे कानूनी काम में भी हमसे कुछ प्राप्त करने की इच्छा करने लगता है और अपना कानूनी काम कराने में भी हम उसे 'कुछ' देने लगते हैं और धीरे धीरे यही चीज भ्रष्टाचार के रूप में फैल कर एक पद्धति बन गई।

यह तो हुआ एक 'रिश्वत' किस्म का भ्रष्टाचार। दूसरा एक और हमारा तरीका है जिसमें हम प्रभाव डाल कर भ्रष्टाचार करते हैं। मसलन—किसी नौकरी के लिए चार व्यक्तियों का चुनाव होना है। जिसमें पचास व्यक्ति उम्मीदवार हैं। चुनाव करने वाला चाहता है कि वह पचास में से सबसे काबिल चार व्यक्ति चुन ले। परन्तु हमारा एक रिश्तेदार भी उसमें उम्मीदवार है, जिसमें आवश्यकतानुसार काबलियत

की कमी है और हम जानते हैं कि वह चुनाव में कामयाब नहीं होगा। तब हम उस चुनाव करने वाले पर दूसरे लोगों से दिमागी दबाव डलवा कर अपने नाकाबिल रिश्तेदार का चुनाव करवा लेते हैं। यह हुआ दूसरे किस्म का भ्रष्टाचार, जो हम सब करते हैं।

यह ठीक है कि रिश्वत लेने वाले को रिश्वत नहीं लेना चाहिए। चुनाव करने वाले को ठीक चुनाव करना चाहिए। पर उसके दिमाग को यदि हम भ्रष्ट न करें तभी तो वह न्याय पूर्वक काम करने का जिम्मेदार हो सका है।

यह तो हुई सरकारी कर्मचारियों और जनता के बीच के भ्रष्टाचार की बात। हम नागरिक एक दूसरे के बीच किसी का काम कराने के बदले हममें से बहुत से लोग एक दूसरे से रिश्वत या दूसरे रूप में "कुछ" ले लेते हैं। यह भी तो भ्रष्टाचार ही है।

सरकारी कर्मचारी किसी दूसरी जगह से नहीं आते हैं वे भी हमारे आपके ही भाई बन्धु होते हैं। जब हम उन्हें भ्रष्ट करते हैं तभी वे भ्रष्ट होते हैं।

यदि हम भ्रष्टाचार को बुरा समझते हैं और समाज से इसे निकालना चाहते हैं तो हमें खुद ही भ्रष्टाचार बन्द करना होगा तभी वह बन्द होगा।

हम खुद कानून के अन्दर चलें, और किसी से गैरकानूनी काम कराने की इच्छा न करें। यह तभी हो सकता है जब हम गैरकानूनी कार्यों के लाभ से अपने को रोक सकें। जब हम गैरकानूनी कार्यों से अपने को रोक लेंगे तो हममें हिम्मत आजाएगी कि कानूनी कामों में रिश्वत मांगने वालों को हम कानून के हवाले कर सकें।

भ्रष्टाचार फैलाने में सबसे पहले दोषी हम हैं जो दूसरों को अनैतिक धन का लालच देते हैं। और उतने ही दोषी वे लोग भी हैं जो लालच में पड़ कर अनैतिक धन लेना मंजूर करते हैं।

अपनी मेहनत की कमाई के अलावा दूसरे जरियों से कमाई हुई आमदनी चरित्रहीनता की कमाई है, जिससे हम सभी सच्चरित्र लोगों को बचना चाहिए ।

विलायत में बहुत सी दूकानें ऐसी हैं जहां बेंचने वाला दूकानदार नहीं होता है । वस्तुएं रक्खी होती हैं, उन पर कीमत लिखी होती है, कीमत निश्चित स्थान पर रख कर लोग वस्तुएं ले जाते हैं । इन दूकानों में कभी भी कोई व्यक्ति बेईमानी नहीं करता । ठीक पैसे रख कर ही लोग वस्तु ले जाते हैं। अखबारों की बिक्री ज्यादातर इसी तरह होती है ।

यही हाल रुपए के लेन देन में भी है । दफ्तरों खजानों, बेंकों से रुपया लेकर गिनना वहाँ सभ्यता के विरुद्ध माना जाता है । आपसी लेन देन में भी लोग इतने सच्चरित्र हैं कि प्राप्त धन को बिना गिने ही अपनी जेब में रख लेते हैं और कभी भी रुपया कम नहीं होता । क्या हम अपने को ईमानदार बना कर एक दूसरे पर भरोसा नहीं पैदा कर सकते ।

भ्रष्टाचार किस्म के काम, अकसर हम यह सोच कर कर लेते हैं, कि वह हम मजबूरन आज ही कर रहे हैं, कल नहीं करेंगे । और फिर वह 'कल' कभी नहीं आता, हर रोज 'आज' ही रहता है । यदि हम यह सोच लें कि ऐसा मौका पड़ने पर हम 'आज' भी नहीं करेंगे तो फिर हम रोज ही उस बुरे काम से बच सकते हैं ।

:: ३५ ::

छुआ-छूत

छुआ-छूत ने हमारे देश के करोड़ों लोगों को हमारे समाज से अलग कर दिया है। जिससे हमारी एकता को बहुत बड़ी हानि पहुंच रही है।

हम उन्हें अछूत कह कर उनसे ऐसा व्योहार करते हैं मानों वे हमारे देश के नागरिक ही नहीं हैं। हम गन्दगी करें तो हम सवर्ण, और जो अपने छोटे छोटे दुधमुंहे बच्चों को घर में रोता बिलखता छोड़ कर, रोज सबेरे, हमारी की हुई गन्दगी को साफ करने चल पड़ें वे अछूत ? कैसी विडम्बना की रूढ़िवादी प्रथा हम आज के अणु युग में भी अपनाए हुए हैं।

मनुष्य जाति के दोनों हाथ 'कंचन' याने सोना कहे गए हैं। जो कभी भी अपवित्र नहीं होते। इन्ही हाथों से हम खुद आबदस्त लेते हैं और इन्हीं हाथों से हम खुद भी भोजन करते हैं और दूसरों को भोजन कराते हैं। इन्हीं हाथों से मनुष्य दुनियां की हर वस्तु तयार करता है जिसमें अच्छी और गन्दी से गन्दी वस्तुओं का उपयोग करता है। तब उन्हें कोई अछूत नहीं कहता।

जिस मां ने वर्षों तक हमारा मल-मूत्र धोया उन मां को हम पवित्र मानते हैं। जो डाक्टर सड़े हुए मुर्दे को चीर फाड़ करता है उसके इलाज से हम तन्दुरुस्ती पाते हैं और उस डाक्टर के पेशे को हम पवित्र पेशा मानें। हमारा भाई नशे की हालत में नाली में गिर कर गन्दा

हो जाए उसे हम अछूत न मान लें। हम खुद अपने बीमार प्रियजनों का मल-मूत्र साफ करें, तो भी अपने को अछूत न मानें। हम सब दिन-रात जिस गन्दगी को अपने पेट में रक्खे हुए घूमें तब भी हम सवर्ण और हमारी उस गन्दगी को बाहर निकलते ही जो उसे कृपा करके साफ कर दें, वह अछूत। गन्दगी करने वाला निर्दोष और उसे साफ करने वाला दोषी।

यह सब तरीके अब हमें बदलने होंगे। इन अछूत कहे जाने वाले लोगों के प्रति हमें अपना व्योहार बदलना चाहिए। हम गन्दे से गन्दा काम करके अपने हाथ धोकर पवित्र हो जाते हैं। छुआ-छूत के बजाये गन्दगी से नफरत करना चाहिए।

हमें इन पुरानी रूढ़िवादी प्रथाओं को बदलना होगा। आज कोई भी पढ़ा लिखा समझदार व्यक्ति इस बात को मानने के लिए तयार नहीं है कि छुआ-छूत न मानने से हमारा धर्म नष्ट हो जायगा। हमारा धर्म इतना कमजोर नहीं है कि वह किसी मनुष्य के छू लेने से हमारे अन्दर से भाग जाएगा। जो लोग धर्म के साथ छुआ-छूत को जोड़ते हैं वे अपने असली धर्म को कमजोर करते हैं।

विदेशों में सफाई के काम करने वाले को कोई भी अछूत नहीं मानता नाहीं उनसे कोई छुआ-छूत मानता है। सफाई करने वाले के साथ घर का मालिक बराबर में बैठ कर खाता पीता है। वहाँ सफाई करने वाला कोई शूद्र नहीं कहलाता। कोई भी सफाई का पेशा अपना सकता है उससे कोई भी सामाजिक अलगाव नहीं रक्खा जाता।

हमारे देश में भी जब तक बेरोजगारी है तभी तक छुआ-छूत दिखाई पड़ रहा है जब बेरोजगारी खत्म हो जाएगी तब हमें विशेष काम के लिए विशेष जाति के व्यक्ति नहीं मिलेंगे और तब किसी भी व्यक्ति को कोई भी काम करना पड़ेगा। वह समय आने से पहले ही हम क्यों न

इस छुआ-छूत के रोग को अपने अन्दर से ही निकाल दें ताकि अछूत कहे जाने वाले व्यक्तियों से हम घृणा करना छोड़ सकें।

छुआ-छूत हमारे धर्म की देन नहीं है, यदि ऐसा होता तो हमारे देश में ही सैकड़ों, हजारों हरिजन संत, महात्मा न हुए होते। भगवान की निगाह में सब मनुष्य बराबर हैं और वह सभी मनुष्यों से एक सा बर्ताव करता है। फर्क तो हम करते रहे हैं। जो अपने धर्म की गहराई को नहीं समझते।

:: ३५ ::

हमारा धर्म

आमतौर पर यह देखा जाता है कि अपने धर्म के लिए पूरी निष्ठा रखने वाला व्यक्ति ही भगवान का भय मानता है, और हमेशा बुराइयों से बचते रहने का प्रयत्न करता है। इसलिए, और उस परमात्मा जिसने हम सबको पैदा किया है और जिसकी कृपा से ही हम सब जिन्दा हैं उसकी पूजा या याद हम सबको करनी ही चाहिए।

हमारे देश में जितने भी बड़े लोग हुए हैं वे सब भगवान पर भरोसा रखते थे और चौबीस घंटों में एक दो घंटा उसकी अराधना में जरूर लगाते थे।

दुनियां में सुख और दुःख दोनों ही हमेशा रहे हैं और रहेंगे। और हम सब भी अपने जीवन में कभी सुख उठाते हैं तो कभी दुःख। जो व्यक्ति भगवान पर विश्वास रखता है उसे दुख होते हुए भी वह प्रसन्न-चित्त रहता है और शान्तिपूर्वक दुःख के दिनों को पार कर जाता है। इसके विरुद्ध भगवान पर भरोसा न रखने वाला व्यक्ति अपने दुखों में और ज्यादा मानसिक कष्ट पाता रहता है।

भगवान एक है। कोई उसे भगवान कहता है, कोई अल्लाह और कोई गॉड। हर धर्म में एक ही बात कही गई है, वह है भगवान से प्रेम करो, उसके गुणगान करो, उसकी याद करो। सभी मनुष्य उसी एक भगवान के पैदा किए हुए हैं। इस सच्चाई को सभी धर्म के लोग मानते हैं तो फिर हम सभी मनुष्य एक ही पिता के पुत्र हैं। तब हमें सभी से अपने ही भाइयों की तरह प्रेम-स्नेह करना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है :—

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम ।।१६–२।।

याने—हमें मन, वाणी और शरीर से किसी प्रकार भी किसी को कष्ठ न देना और सत्य और प्रिय बोलना, अपनी बुराई करने वाले पर भी गुस्सा न करना, अभिमान न आने देना, किसी की निन्दा न करना आदि बुराइयों से बचना चाहिए ।

हमें सुबह उठ कर थोड़ी देर के लिए जरूर भगवान की याद में अपना वक्त लगाना चाहिए। जो लोग अपनी लापरवाही या दूसरी किन्हीं वजहों से सुबह यह काम नहीं कर सकते वे दिन में जब भी मौका और फुरसत मिले इस अच्छे कार्य को कर सकते हैं ।

अपने धार्मिक पूजन का किसी के सामने प्रचार नहीं करना चाहिए। बलिक इसे जितना ज्यादा से ज्यादा एकान्त और खामोशी से किया जाय उतना ही अच्छा है। जो लोग भजन, पूजन लाउडस्पीकर लगा कर क्या चिल्ला-चिल्ला कर या दूसरों को दिखाकर करते हैं उनके चित्त में जल्दी निर्मलता नहीं आती और कभी-कभी ऐसे लोगों को, दूसरे लोग ढोंगी भी कहने लगते हैं। दरअसल आपके और आपके भगवान के बीच तीसरे की बात-चीत, शोरगुल आपके पूजन में बाधक होती है ।

बहुत से लोग यह कह देते हैं, अरे साहब ? जब बूढ़े होंगे तब भगवान का नाम ले लिया जाएगा। ऐसा कहना एक नासमझी की बात है। क्या बच्चा, क्या जवान, क्या बूढ़ा सभी को अपने भगवान की याद करना हमारी सबसे बड़ी धार्मिक जरूरत है और जब तक हमारी प्रवृत्ति धर्म की ओर न होगी हम अच्छे चरित्रवान नहीं बन पावेंगे ।

आम तौर से भगवान के पूजन के दो तरीके होते हैं। एक तो जैसा ऊपर कहा गया है, भगवान की पूजा, आराधना करना है। दूसरा तरीका हमारा यह है कि हम अपने अवतारों श्रीराम और श्रीकृष्ण आदि के

जीवन-चरित्रों को रामायण, श्रीमद्भागवत रूप में बार बार पाठ करके अपनी आत्मा को संतोष देते हैं।

अगर हम अपने इन दोनों अवतारों के जीवन-चरित्र पर ध्यान दें तो हमें मालूम होगा कि भगवान रामचन्द्र जी ने अपने जीवन में अपने फर्ज, अपने धर्म को कितना बड़ा महत्व दिया था। जब शिक्षा लेने का वक्त आया, तो उन्होंने अपने गुरु विश्वामित्र का अनुशासन मान कर और हर तकलीफें उठा कर भी अपना धर्म निबाहा। जब बनवास की आज्ञा हुई तब बिना सोच विचार के, बिना किसी तकलीफों की परवाह किए १४ वर्षों के लिए जंगलों में चल दिये। जब दुष्टों के दमन की बात आई तो तुरन्त उसके लिए तैयार हो गए और उस युग के सबसे बड़े योद्धा रावण को मार गिराया। जब राजमुकुट सर पर रक्खा गया तो ऐसा सुन्दर राज्य संचालन किया जिस "राम राज्य" की हम आज हजारों वर्ष बाद भी इच्छा करते हैं। अपना फर्ज पूरा करने की जो शिक्षा हमें भगवान राम के जीवन-चरित्र से मिलती है उसका मुकाबला कहीं नहीं है।

इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र भी हमें न जाने कितनी अच्छाइयों की शिक्षा देता है। बचपन में बालकों का संगठन करके उन्होंने खेल खेल में समाज-विरोधी तत्वों का संहार कर दिया। वृन्दावन राज्य में उन्होंने जनता में जो एकता कायम की उसकी मिसाल ढूंढ़े नहीं मिलती है। युद्ध घोष हुआ तब उन्होंने मनुष्य जाति के लिए वह उपदेश 'गीता" के रूप में दिया जिसकी तुलना संसार में दूसरी नहीं है। कर्म और फर्ज अदायगी का कितना सुन्दर उपदेश भगवान कृष्ण ने गीता में दिया है जो हर युग में अपना महत्व रखता है। निर्धन सुदामा की मित्रता की कदर हम सब के लिए एक सु-आचरण की बात है। अर्जुन से उन्होंने मित्रता की तो अर्जुन के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने को तयार हो गए। श्रीमद्भागवत का एक एक लफ्ज हमें सच्चरित्रता और सच्चे धर्म का उपदेश करता है।

इसलिए हम सबको भी अपने आत्मबल को मजबूत बनाने और पल पल अपने हर कामों में सच्चरित्रता लाने के लिए हमें अपने धर्म का पक्का अनुयायी होना चाहिए। हमें अपने धर्म को रूढ़िवादी छुआ-छूत, छोटा-बड़ा, जाति-भेद से हटाकर शुद्ध मानव धर्म पर आधारित करना चाहिए। मानव धर्म से हट कर हम अपने किसी धर्म में कामयाब नहीं हो सकते।

हमारे अवतारों ने मनुष्य धर्म की हजारों नजीरें कायम की हैं। हर मनुष्य से प्रेम करो, अपनी मेहनत और धर्म की कमाई से अपना गुजारा करो, किसी को भी दुख न दो, हो सके तो सुख दो। सत्य का पालन करो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्षा और द्वेष से किसी को हानि न पहुंचाओ। यही सारे धर्मों का निचोड़ है।

सीता माता की तरह हमारी धरती माता की तरफ आंख उठाने वाला हमारा द्रोही और हमारे राष्ट्र का द्रोही है जिसे न भगवान राम ने क्षमा किया था और न हम उसे क्षमा करेंगे। बाकी सब हमें उसी तरह प्यारे हैं, जिस तरह भगवान श्री कृष्ण को अर्जुन प्यारे थे।

:: ३६ ::

रेल-सफर में

हम सभी लोग जब-कब रेलों में सफर करते हैं। हममें से कोई लोग कभी ऐसे तरीके बरतते हैं जो चरित्र के विरुद्ध कहे जाते हैं।

हम सबसे पहले रेल का टिकट खरीदते हैं, तो चाहते हैं कि हमें ही सबसे पहले टिकट मिल जाए। हम इस बात का भी ख्याल नहीं करते कि हमसे पहले जो लोग टिकट लेने के लिए आए हैं उनका पहला हक टिकट लेने का है। यदि हम एक लाइन में खड़े होकर टिकट खरीदें तो टिकट बांटने वाले बाबू को भी टिकट देने में सहूलियत हो और हम सबको सहूलियत से टिकट मिल जाये। अगर हमें टिकट लेने की बहुत जल्दी थी तो और लोगों से पहले हमें टिकट घर में पहुंचना चाहिए। लाइन से हट कर, आगे जाकर टिकट खरीदना या लाइन में खड़े दूसरे लोगों से अपना टिकट खरीदने को कहना दोनों ही नियम-विरुद्ध बातें हैं।

जब हम मुसाफिरखाने में ठहरते हैं तो कुछ लोग मुसाफिरखानों में नाक, थूक फैलाकर गन्दगी करते हैं। कुछ लोग फलों वगैरह के छिलके या कूड़ा फेंक कर मुसाफिरों के ठहरने के स्थान को गन्दा करते हैं, इनसे हमें बचना चाहिए।

ट्रेन के डिब्बों में चढ़ते वक्त हम इतने उतावले हो जाते हैं कि हम बच्चों बूढ़ों या महिलाओं की सुविधा का बिलकुल ख्याल नहीं रखते। यदि हम पहले उतरने वाले मुसाफिरों को उतर जाने दें तो सहूलियत से हम ट्रेन में सवार हो सकते हैं।

हम ट्रेन के सफर में कभी कभी इतना सामान अपने साथ कर लेते

हैं जिससे लोगों को तो तकलीफ होती है साथ ही हमें खुद को भी उसके रखने उठाने और हिफाजत में कष्ट होता है। यदि हम यही सामान ब्रेक में बिल्टी करके रखवा दें तो सभी को सफर में सहूलियत हो जाए।

रेल में खुद अपने लिए तो सोने की व्यवस्था कर लेना और दूसरों को बैठने की भी सुविधा न मिलना हमारे लिए अच्छा तरीका नहीं है। इस पर भी जब दूसरे लोग हमारी इस करंवाई पर टीका टिप्पणी करते हैं तब हम उनसे लड़ने को तयार हो जाते हैं। आपने देखा होगा कि जो लोग रेल में चढ़ कर चुप चाप थोड़ी तकलीफ उठाकर जगह न होने के कारण खड़े हो जाते हैं, उन्हें लोग खुद तकलीफ उठाकर भी बैठने का स्थान दे देते हैं। इसलिए सफर में लड़ाई झगड़ा करना हमेशा बुरी बात है।

रेल के डिब्बे में, पाखानों में गन्दगी फैलना हमें शोभा नहीं देता, इसे दूसरे मुसाफिर पसन्द नहीं करते। बल्कि इस कारण से लोग लड़ाई झगड़ा भी करने लगते हैं। इससे हमें बचना चाहिए। रेल के अन्दर से चलती ट्रेन में हमें कोई ऐसी वस्तु बाहर नहीं फेंकनी चाहिए जो बाहर चलते किसी व्यक्ति पर गिर कर उन्हें जख्मी कर दे।

चलती रेल के खुले दरवाजे पर खड़े होना या खिड़की के बाहर अपने जिस्म को लटकाना दोनों ही से खतरा हो सकता है। बे जरूरत ट्रेन के पंखे चलते रहने देना या बत्ती जलते रहने देने से रेल की हानि होती है, इस पर हमें ध्यान देना चाहिए।

किसी किसी ट्रेनों में सफर करते वक्त हम कभी कभी एक बहुत बड़ी बुराई का काम करते हैं जब हम ट्रेन की जंजीर, स्टेशन से पहले ही उतरने के लिए, खींच कर गाड़ी खड़ी कर लेते हैं। हम उस वक्त यह नहीं सोचते कि बहुत ही खतरे की हालत के लिए रेल विभाग ने मुसाफिरों की सुविधा के लिए गाड़ी रोकने की जंजीर लगाई है। यदि हमने जंजीर खींचने की इस तरह की आदत को नहीं रोका तो किसी दिन हमारी सभी रेलों से खतरे की जंजीर हटा ली जाएगी और तब

मुसाफिरों को खतरे का नुकसान उठाते रहना पड़ेगा। जिससे कत्ल चोरी, डकैती, महिलाओं का शील भंग, सभी खतरे उठाने पड़ेंगे। क्या हम विचार करके अपनी इस बुरी आदत को नहीं बदल सकते।

बहुत से लोग रेलों में बिना टिकट सफर करके राष्ट्र को नुकसान पहुंचाते हैं। जिनके रिश्तेदार या दोस्त रेलों में कर्मचारी होते हैं, उनकी सिफारिश करा कर बिना टिकट सफर करते हैं। और जब पकड़े जाते हैं तो टिकट बाबू को रिश्वत देकर छूटने का प्रयत्न करते हैं और बाहर आकर भृष्टाचार की दुहाई देते हैं क्या यह चोरी हम भले कहलाने वाले व्यक्तियों को शोभा देती है।

कोई कोई लोग रेलों के बल्ब तोड़ डालते हैं। कोई पंखे नष्ट कर देते हैं। कोई कोई, संडास में लगे बरतन, शीशे तोड़ देते हैं, कोई रेल के नलों की टोंटी चुरा लेते हैं यह सब बातें हमारे चरित्र को कितना गिराती हैं इन पर हमें ध्यान देना चाहिए।

हमें यह सोचना चाहिए कि देश की वस्तुओं को हम जितनी हानि करेंगे, उन सबकी पूर्ति हमारे ही सबकी जेबों से टैक्स लगाकर की जाएगी।

कभी कभी हम रेलों में सफर करते वक्त रेलवे कर्मचारियों से लड़ाई झगड़ा कर लेते हैं हमें यह विचार करना चाहिए कि हर सरकारी कर्मचारी की रक्षा करना सरकार की जिम्मेदारी है। इस तरह की कार्रवाइयों से हमारे ऊपर मुकदमा भी कायम हो सकता है, और हो भी जाता है. तब जरा सी गलती के कारण हमें उसका दन्ड भुगतना पड़ता है। यह हमेशा याद रखना चाहिए कि सरकारी कर्मचारी से व्योहार करने में हमेशा सभ्यता का व्योहार करना चाहिए।

रेल सफर में हमें चोरों, उचक्कों और बदमाशों से भी होशियार रहना चाहिए। सफर में हमारी लापरवाही से हमारी जेब काटी जा सकती है। हमारा सामान चोरी किया जा सकता है। और हमें फुसला कर धोखे से लूटा भी जा सकता है। इसलिए सफर में नए बनने वाले

हमदर्दों से होशियार और सशंकित रहना चाहिए, अजनबी आदमी से कोई खाने की चीज नहीं लेना चाहिए।

सफर करते वक्त हर स्टेशन पर गाड़ी थोड़ी देर को खड़ी होती हैं, बहुत से लोग गाड़ी के रुकते ही प्लेटफार्म पर उतर कर टहलने लगते हैं। कोई लोग चलती गाड़ी में सवार होते हैं। कोई गाड़ी रुके बिना ही गाड़ी से उतर पड़ते हैं, यह सभी बात खतरे से खाली नहीं हैं। ऐसा करते वक्त बहुत से लोग रेल से कट कर मर भी जाते हैं।

जब गाड़ी में बहुत ही भीड़ हो तो, बजाए रेल के पावदान या उसकी छत या रेल में इधर उधर लटक कर सफर करने के, सफर को स्थगित कर देना ज्यादा बेहतर है। स्टेशन के प्लेटफार्म पर कभी नहीं सोना चाहिए। क्योंकि रेलों के प्लेटफार्म पर गुजरते वक्त ड्राइवर अपना टोकेन चलती गाड़ी से प्लेटफार्म पर फेंकता है, उससे जख्मी हो जाने या बच्चे हों तो उन पर गिरने से उनकी मृत्यु तक हो जाने का डर है।

हमारे पास जिस दर्जे का टिकट हो हमें उसी दरजे में सफर करना चाहिए। और उसी दर्जे के प्रतीक्षागृह में ठहरना चाहिए। जिन लोगों के मकान स्टेशनों के नजदीक होते है वे अकसर स्टेशन के पाखानों प्रतीक्षालयों और स्नान गृहों का इस्तेमाल इस लिए करते रहते हैं कि उनकी स्टेशन के कर्मचारियों से जान पहचान हो जाती है परन्तु यह त ीका सभ्यता और कानून दोनों के विरुद्ध है। स्टेशन पर उपलब्ध सभी सुविधाएं रेल में सफर करते समय यात्रियों के लिए होती हैं न कि आम जनता के लिए।

स्टेशन पर एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने के लिए पुलों पर से जाना चाहिए न कि रेल की पटरी पर से होकर। क्योंकि यह तरीका भी खतरे से खाली नहीं है। हर सूरत में हमें रेल की पटरी पर नहीं चलना चाहिए।